

1973 I

273
dyestainu...
paddu





१ॐ क्लीं ह्रीं क्लौं श्री कृष्णिका म्वाये श्री पाद्मकी पूजयामि नमः क्लौं ह्रीं क्लीं
॥ तगा दो स्व वाम हा ग विन्दु चतु न स म धु री वि ति ख पू ज य ॥ ॐ
आ ध न ग क्का दि र्थान मः ॥ त ग उ न पा र्थ नि ध य ॥ च न्द ना क्त न पू ष
४ पू ज य ॥ ॐ न मः ॥ म त्सा मू द्र या क्का द्य (अ ध य ॥ ॐ १ ॐ क्लौ व न
अ दे व न ॐ ॥ ३ ॥ ॐ ति उ न (अ ध न ॥ ॥ आ च म न ॥ ॐ १ ॐ श
स ग त्वा य स्वा हा ॥ ॐ क्लीं वि श्रा त्वा य स्वा हा ॥ ॐ १ क्लौ नि व त्वा
य स्वा हा ॥ ॐ आ च म ॥ ॥ ताम्रा र्थ न सूर्या र्थ कृ प्या ॥ ॐ १

कुलमार्तुमुमहाह नवायप्रकाशगकि सहिताय ॐ दमर्घ्यगृह
कुलमवाहा ॥ ननु कलिकलवकृतानक ध्युमुमार्तुमुहीमानजसक
लेकसात्रिकानशोरवाप्रदाता ॥ त्रिदिवतनमनूनात्वा ॐ नताध्याह
सा अलिकसुमरुलाघ्यात्वा कसा कननमामि ॥ कुलमार्तुमुमहाह
नवायपूर्यनमः ॥ ॥ गुननमस्तु ॥ ननु ननु गुननमस्तु का
नन्दनाथ श्री अमृकी देवाम्वाणी पापूज ॥ अखगुमगुलाकार
वा फेयनच नाचनी ॥ तत्सुदंदर्जितं यनतस्मै श्रीगुनवेनमः ॥

तत्सूक्ष्मं गृहीत्वा मधुनैर्विसृज्य तासन्नितमिर्जगत्तर्हदिसपयं॥
॥ आसनं ॥ वेतिपाणं ॥ त्रंजपद्मासनं श्रीपापूज ॥ अर्घ्यपाणं ॥ त्रंज
पाणमसनं श्रीपापूज ॥ स्वासनी ॥ त्रंजकूर्ममसनं श्रीपापूज ॥ त्रंजकीश
धनं किंकमलमसनं श्रीपापूज ॥ ॥ हस्तार्घ्यविधासनादनी ॥ त्रंज
किञ्चिद्विचक्राकर्मयैकमस्तारुद्रश्रीपापूज ॥ ॥ वज्रमूक
रुद्रमूदयामुखगिरिकोर्जवितिरव्यस्वदेववज्रमयंकूर्यात् ॥ त्रंज
त्रंजैरुद्रवज्रपञ्चनम्राहा ॥ ॥ वामानामिकास्तुष्टार्घ्यादग्नाना

त्रिरुद्रप्राप्तमयमनी॥ जेउ जेउ वसम कस कसम वस डी हूँ हूँ
स्वाहा॥ ॥ तता ॥ सिन्धुधमृषादिकं समन आर्जुन अस्याधी ककु
कादागिंशमद्वनी समय विद्याया अघात्रे नव अवि विना दुन्द
शी ककुका दवता हूँ वीजं डी ग किं १ श्री कीसकं हागमा दा ॥ थवि
नियोग १॥ ७४ गिस्म ॥ तान्यसद्यथा॥ गिरसि॥ जेउ अघात्र नव
मृषयनम १॥ मुख॥ जेउ विना दुन्द मनम १॥ हृदि॥ श्री ककुका
दवतार्यनम १॥ गु ॥ हूँ वीजायनम १॥ पादया १॥ डी ग कथ

नमः॥ सर्वस्व॥ श्री कीर्तिकाय नमः॥ वधूः सुखि॥ रागभाद्रा (थेवि
निधागः॥ ॥ ततः कनवकुम्भ न्यासः॥ मृग (ध्वन कनाद्वर्तनी॥ न
कीर्ती सुखी॥ किञ्चिद्विचित्रका कर्णयैः कर्ण सुखय रुद्रकोः सु
श्रीकीर्तः॥ ॥ नमः रागवति द्रुतक मलायैः कीर्ती अंगुष्ठा ह्या
नमः॥ कीर्ती॥ नमः सुकुम्भिकायि कृतस्त्री पायैः कीर्ती तर्जनी ह्या
स्वाहा॥ नमः कीर्ती वधू न गिरिव दूरी मध्व मा ह्या वषट्॥
नमः धान अधान अधानाम् खिब दूरी पायैः कीर्ती अनामिके ह्या

हुँ अशीपापू॥ जें अ चैं चैं महनात्रिकाये को शी कनिष्ठाया वोषट्
शीपापू॥ जें अ किमिश विचै का क नये ५४ शी कनतनपृष्ठा
या रूट् शीपापू॥ ॥ ततो वकुन्या म४॥ जें अ नमाह गवति शी
उई वकु शीपापू॥ जें अ हुँ कृष्णिकायि शी पूर्ववकु शीपापू॥
जें अ को को हुँ शी दक्षिणव कु शीपापू॥ जें अ धात्र अ धात्र अ धा
ना मुखि शी उरुनवकु शीपापू॥ जें अ चैं चैं शी पश्चिमवकु शी
पापू॥ जें अ किमिश विचै शी पना पनवकु शीपापू॥ ॥ ततो

ॐ न्यासः॥ जैनमातृगवति हृत्कमलाये कौंशी हृदयाय नमः॥
श्रीपापू॥ जैनं कुंकुमायिकुसुमीपाये कौंशी गिरिभस्वाहा
श्रीपापू॥ जैनं कौंशीं वव्वनगिरिखड्गं श्रीगिरिस्वाये वषट्श्री
पापू॥ जैनं धात्रं अधात्रं अधात्राम् रिववद्रूपायै कौंशी कवचा
यद्गं श्रीपापू॥ जैनं कौंशीं महानात्रिकायै कौंशी नगगुयाय
वौषट् श्रीपापू॥ जैनं किमि२ विज्जकाक्षायै कौंशी जूलाय ह
ट् श्रीपापू॥ ॐ न्यासः॥ ॥ तताजसपाशस्थापनी॥ हमावि

[illegible]

स्वाय रुद्र॥ ॐ तिगुयन स न द॥ चानिकाहिदिगुधन न द्या॥
रुद्र १०॥ ॐ तिजल पाग स्नान॥ ॥ तग रुद्र सन कल गभय पीम
च न न्द वी पूजा पवन न दी स्वात्मान ३ प्रा द य ॥ त्रै क द्रि का ये विम
ह कल दी पा ये धी म हि॥ तन्नः क द्रि पु वा द या न॥ ॥ न (थे व वा द
नी पा र्ग स्ना प य ॥ त ये व गभ य शा पूर्व व स्था द नी ज स न प्रा न्द्र॥ पू
जा पवन न्द्र ॥ ध य य थ ॥ ॥ श्री ख मु स्य॥ त्रै ज द्री स ४ समा त
म न्द्र व या मि न म ४॥ न क व न्द न स्य॥ त्रै ज प्र मृ ता ये नि न स न

कौं॥ सिद्धय ॥ त्रं॥ श्रीं॥ कौं॥ ॥ अदताया॥ त्रं॥ अ
 नकवसपनाकमाये अस्माय रुद्रा पृथ्वा ॥ त्रं॥ त्रं॥ मो॥ ॥ स
 वनिहृदयाय नमः ॥ ॥ तिष्ठति प्रथमं ॥ ध्यायित्वा समुदाय नमः
 सनदगधजहा धनमूर्धा दर्शय ॥ वं॥ ॥ तिष्ठति पूजा पेके नमः
 धनं ॥ ॥ ततः ॥ रवस्तापनी ॥ स्ववामरा ॥ गविन्दु गि को ॥ वृके च
 पुनस्तं विसिख्य पूजय ॥ त्रं॥ श्रीं॥ आध्वन गच्छादित्यानमः ॥ आ
 ध्वनं प्रदातय ॥ त्रं॥ किं निश्चिन्ना का कथं येन ॥ अस्माय रुद्रा

॥ मधुसूतनिधायपूजय ॥ त्रैलोक्यमैव किमधुसूतायर्षं खाद्याध्मना
यनमः ॥ हंसपादं कासय ॥ त्रैलोक्यकिमिदं विद्वका कथय ॥
स्वायम्भुव ॥ आध्मनापनिनिधायपूजय ॥ त्रैलोक्यमैव किमधुसूता
यर्षं खाद्याध्मनायनमः ॥ ऊर्ध्वपूजय ॥ त्रैलोक्यमैव किमधुसूता
यर्षं खाद्याध्मनायनमः ॥ पूजय ॥ त्रैलोक्यमैव किमधुसूतायर्षं
खाद्याध्मनायनमः ॥ गङ्गापूजय ॥ त्रैलोक्यमैव किमधुसूतायर्षं
खाद्याध्मनायनमः ॥ श्रीकृष्णमूढयातीथमावाहनं ॥ ॐ ॥ ॐ नमः ॥

दावनिमनस्वति॥नम्रदसिन्धुकावनिजलसिन्धुनिधिर
व॥ॐ॥तिष्ठतुर्वदगधजगता॥धनमूदयामृतीकेनर्ज॥वै॥
त्रै॥ज्ज्ददयायनम॥ॐ॥यादिसुत॥नमसंपूज॥त्रै॥अचन्य
दगपूष्यनम॥मत्स्यमूदयाद्वाद्यमूलमसूधजगता॥गं॥ख
मूदपिद॥गभसिनीमूदयात्रा॥म॥॥असूधनद॥त्रै॥
किमिश्रविज्जकाद्गभयेद्गमसूयरु॥ॐ॥तिष्ठगं॥खसूपापनं॥
त्वातज्ज्जनमूलपूर्वकसविन्दुकेममृतिकादनेद्वैपूजाप

[illegible]

पापू॥ गिका॥ त्रै॥ कामरूपपी० श्रीपापू॥ विन्दुम॥
 ॥ त्रै॥ श्रीपनापनचन्द्र॥ पी० श्रीपापू॥ ॥ ब्रह्मा॥ स्वो॥ अदि
 प्राददि॥ स्मन॥ त्रै॥ श्रीपापू॥ त्रै॥ त्रै॥ श्रीपापू॥ त्रै॥ श्रीपा
 पापू॥ त्रै॥ श्रीपापू॥ त्रै॥ श्रीपापू॥ त्रै॥ श्रीपा
 पू॥ ॥ आ॥ धन॥ प्र॥ दा॥ ल॥ य॥ ॥ त्रै॥ कि॥ लि॥ २॥ वि॥ त्रै॥ का॥ क॥ म॥ य॥ द॥
 अ॥ स्म॥ य॥ रु॥ द॥ ॥ म॥ गु॥ ल॥ ला॥ प॥ य॥ ॥ त्रै॥ श्रीपापू॥ पू॥ य॥ ॥ त्रै॥ म॥
 व॥ क्रि॥ म॥ गु॥ ला॥ य॥ द॥ ल॥ क॥ ला॥ म॥ न॥ क॥ ॥ म॥ ध॥ न॥ य॥ म॥ पापू॥ ॥ अ॥ घ॥

धर्मप्रदाय१

प्रज्ञातयगात्रं अकिञ्चिद्विज्ञेयं कर्मण्येकमुक्तयुत ॥ घटा
दनमृत्सुगन्धनसपयगात्रं अक्षु कृत्तिकायै कृतं दीपायै
गिरिसंस्थाहा ॥ घटादनं विन्दुविका न विस्तिर्यधूपयगात्रं
अध्यायं जां ध्यानं जां ध्यानं तनं दूयं सर्वं न ॥ सर्वं सर्वं दूयं
॥ जां त्रुदरूपं ॥ ॥ आध्यायं पविघटं स्थापयगात्रं अक्षु चष
कायं स्थाहा ॥ ॥ तत आध्यायं प्रादक्षिण्यं न वक्ष्ये दक्षिणं कृतं ॥ पू
जयगात्रं अक्षु मधूमात्रिं ॥ ॥ धीपापूजं ॥ अक्षु नैतु ध्यायं धीपापूजं ॥ अक्षु

सै कतिनी श्रीपापू॥ जै॥ वै कतिनी श्रीपापू॥ जै॥ गै विस्तुति
निनी श्रीपापू॥ जै॥ वं सु श्री श्रीपापू॥ जै॥ सै सुतूपा श्रीपापू॥
॥ जै॥ हं कपिला श्रीपापू॥ जै॥ सै हव्यवहा श्रीपापू॥ जै॥ दं क
व्यवहा श्रीपापू॥ ॥ घटसूर्यमशुसम (ध्रुवपूजय॥ जै॥ अ
सूर्यमशुसायवसूप्रदायद्वादश कलात्मने श्रीकलभय श्री
पापू॥ तयैव प्रादक्षि (धनसूर्यस्यद्वादश कलाः पूजय॥ जै॥
अ कैतं तपिनी श्रीपापू॥ जै॥ खं वैतापिनी श्रीपापू॥ जै॥ गं रु

धूम्राग्नीपापूज॥ जैज घैपै मनीवीग्नीपापूज॥ जैज हंनं द्वाहिनीग्नी
पापूज॥ जैज चं धं नृचिग्नीपापूज॥ जैज चूं दं सृष्टमाग्नीपापूज॥ जै
ज ऊं थं हा गदाग्नीपापूज॥ जैज मं तं विश्वग्नीपापूज॥ जैज ऊं षं
वाधिनीग्नीपापूज॥ जैज टं ठं धं निगीग्नीपापूज॥ जैज ०ं ७ं द
माग्नीपापूज॥ ॥ ततामूतमूचनचि ताममा नृकया कल
मापूर्य॥ इवमध्वसाममगुलं पूजय॥ जैज उं साममगुला
यकामप्रदाय धातुं कलात्मन कलम् मृतायग्नीपापूज॥ नृ

[illegible]

पू॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ततोऽद्वयमध्वनकचन्दनप्रण
वमध्वगतशिरिकाणं विसिखा ॥ कृष्णनवातर्जुन्यावागिध्वताञ्जनी ॥
त्रैलोक्यकिर्तिविश्वकाक्षायै नमः ॥ ३ ॥ अथ गुणनी ॥ त्रैल
ोकाय नमः ॥ अथानामखिवद्रूपायै नमः ॥ कवचाय नमः ॥ मू
लनिनीद्वय ॥ ॥ श्रीरवादकनप्रोद्वय ॥ त्रैलोक्यनिमाहगवति
त्कमलायै नमः ॥ हृदयाय नमः ॥ मूलनपृष्ठाद्वयगिना
य ॥ तत्पृष्ठा ॥ ॐ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ पुनर्द्वय

३ वेदाधिका ग्रीवह ३

म(ध्व) कौः मध्व गतं त्रिकां गंधात्वा ॥ तत्र पूजय ॥ त्रंज कौः कौ
त्रम ॥ त्रंजं वामदवायवोषट् वामदवायेन म ॥ त्रंजं च गु
पतय अस्त्राय द्दं ॥ ॐ ति ति ॥ संपूषां तत्र प्रभवस्ये क प
गत्कला ॥ पूजय ॥ यथा ॥ त्रंजं कं सृष्टि कला ग्रीपा पूज ॥ त्रंजं रवं मृ
द्विकला ग्रीपा पूज ॥ उर्व ॥ गं स्मृति ॥ चं मध्वा ॥ दं कान्ति ॥ चं सश्री
॥ चं द्युति ॥ जं ह्निना ॥ मं ह्निना ॥ अं सिद्धि ॥ उता अकाना त्वा वक्र
न ॥ सृष्टि कला ॥ संपूषा ॥ अहिमं गय ॥ ॐ ह ॥ स ॥ गुचिष

दसूनकनिकसद्धागावदिषदतिथिर्द्वाधसगा॥ नृषद्वन
सदृतसद्धामसदका (गमजाअृतजाअुद्विजाअृतवृहत्
॥ ॥ ॐ अट ऊना कलायी पापूअ ॥ ॐ वी ॥ ॐ वी ॥ ॐ पासिनी ॥ ॐ म
कि ॥ ॐ उध्वनी ॥ ॐ नति ॥ ॐ कामिका ॥ ॐ वनदा ॥ ॐ अङ्गादिनी
॥ ॐ प्रीति ॥ ॐ नदीर्घा ॥ ॐ ताउकात्रात्माविष्णुः ॥ ॐ स्फुटिकसा ॥ ॐ पूष
॥ ॐ अरिमन्त्रय ॥ ॐ प्रतद्विष्णुः ॐ वतवीर्यगम (गमनतीमः ॐ क
चनानिनिष्ठा ॥ ॐ स्या नृषुगिषुविष्णुम (गमवधिद्वियनिः ॐ व

नानिविष्णुः ॥ ॐ अर्पेती क्लाकलाशीपापूअ ॥ ॐ वं ॥ रुं नो डी ॥ वं
तया ॥ तं निडा ॥ मं नं द्या ॥ यं कृष्ण ॥ नं का धिनी ॥ तं क्रिया ॥ वं
उत्का विनी ॥ ॐ मृत् ॥ ॐ तामका नात्ता नृदस्य संहान कला ॥
सीपूअ ॥ अहिम नुय ॥ ॐ शम्बकं स्यातामहं सृगं श्रीमपुष्टि
वद्वनम् ॥ उवाच नृकमिव वन्धना न्मृत् ॥ मूक्षीय मामृतात् ॥
शम्बकं स्यातामहं सृगं श्विम्पतिवद्वनम् ॥ उवाच नृकमिव वे
धना न्दिता मूक्षीय मामृतात् ॥ ॐ अर्पेती ता कलाशीपा

पूज॥ प्रव॥ संस्थिता॥ हं नका॥ सं कृष्ण॥ दं अनका॥ प्रताविन्दू
कां श्रीं नस्य सयकला॥ सं पूज॥ अतिम कृपया॥ तुं तद्विष्णु॥
पनर्मपद॥ सदापद्यकि स्तुतय॥ दिवी वच कृनाततम॥ ॥
तुं अं निवृत्तिकला श्रीपापूज॥ प्रव॥ अं प्रतिसा॥ हं विद्यो॥
श्रीं भक्ति॥ उं हं चिका॥ उं दीपिका॥ अं त्रिका॥ अं माचिका॥
उपना॥ उं स्तुता॥ उं स्तुतामृता॥ उं स्तुता॥ उं अमृता॥ उं आप्या
यनी॥ अं व्यापिनी॥ उं अं अं धामनूपाकला श्रीपापूज॥ प्रतानादा

कामदागिवस्यानूग्रहकलाः संपूज्याः अरिमनुयथा ॥ ॐ विष्णुय
निकल्पयतु त्वं नूपाजिपिषतु ॥ आसिश्च गुपजापतिर्द्धा
तागर्हन्धधुतं ॥ गर्हन्धहि सिनीवातिगर्हन्धहि सनस्व
ति ॥ गर्हन्ध अग्निनी देवावाधकां पुष्करस्रजौ ॥ ॥ जुगाः ४ पुष
वकलाः पूजनं वदधि कात्रिगममेव केरुचमिति श्रीगुनू ॥ स
नं ॥ ॥ तत्पूर्वादिप्रादक्षिण्यं नतुद्धाधेमध्वं संपूज्य द
दायनिवानमं ॥ ॐ ॥ पथिकदवताया दूरुदनेमः ४ स्वाहा

॥ जैं अमृतामवाधुमिनिद्रुं रुद्रस्वाहानमः ॥ ७ ॥ काधवा
धुमः ॥ ८ ॥ विवाधुमः ॥ स्पर्शवाधुमः ॥ स्रष्टृवाधुमः ॥ घटवाधुमः ॥
तपनबंधवाधुमः ॥ निक्षीपवाधुमः ॥ सर्वजनस्यर्भद्रष्टृवाधुमः ॥
पशुपाणवाधुमः ॥ ॥ ॐ यवदंष्ट्रदोषान्निनस्य ॥ मत्स्यमूड
याक्कायारिमकुयः ॥ जैं अमृतामवाधुमिनिद्रुं रुद्रस्वाहानमः ॥ १ ॥
हमनि ॥ स्वच्छन्दस्यूनजकार्त्तनिधेः मृगनूपिणि ॥ २ ॥ जैं
अमृतामवाधुमिनिद्रुं रुद्रस्वाहानमः ॥ ३ ॥ अमृतामवाधुमिनिद्रुं रुद्रस्वाहानमः ॥ ४ ॥

अस्मिन् च स्रु निह्निन्न रूपिणि॥ ३॥ त्रैजतद्रूपेनेकन स्यत्वं
कृत्वा अतस्त्वेन रूपिणि॥ तृत्वापनामृताकाशमेयिवित्स्मृत्तर्जु
न॥ ४॥ ॥ त्रैजतुत्रैजौगोआनन्दस्यनायविग्रहसूक्ष्मदेशधी
महि॥ तन्नाडुनात्रीन्यत्र४ प्रवादया॥ ७॥ ७७ ग्यानन्दोमृतविहाय
॥ त्रैजतुसूक्ष्मदिविविग्रहसमूहाहवधीमहि॥ तन्नानकादिप्र
वादया॥ ७७ यमृतात्यन्तविहाय॥ त्रैजतुसूत्राण्येविग्रहपा
पमाचिनिधीमहि॥ तन्नाभादु४ प्रवादया॥ ७७ तिपापान्मु

कं विराय ॥ जं ५ कौ दा ष नि वा नि (६) वि द्र ह रा ग प दा ये धी
म हि ॥ त न्ना मृ क ४ प्र वा द या ॥ ७ ॥ ति स क र दा षा न्म कं वि रा
य ॥ जं ५ ग्री व न्म द वी वि द्र ह वा न्म दी द वी धी म हि ॥ त न्ना
मृ त १ प्र वा द या ॥ ७ ॥ य मृ त म र्य रा व य न्म द्र ण पा दि कं मा
व यं ॥ जं ५ डं वां वी वू वं वी वं ४ व द्र ण प वि मा वि ता य सु धा द
वी न म ४ ॥ १० ॥ जं ५ कौ ग्री कौ की कू कौ कौ क ४ सु धा कृ वू ण पी मा
व य २ अ मृ तं स्वा व य २ स्वा हा ॥ ११ ॥ जं ५ लं ली लू लो लो ल

४ शुक्रं पवित्रं विनायकं सुधादयै नमः ॥ १३ ॥ ॐ उक्तं
वपनवृक्षकुलसुखमयं कुर्वी ॥ कवाहवाविवृक्षहृत्पानिन
तनायामाह ॥ ॐ सूर्यमनुसमस्तुतव नृणां तयसंस्तुत
॥ अमावीर्यमयं दविषु कुंभापादिमृचाती ॥ ॐ वेदानी
पुनर्वीर्यं वृक्षानन्दमयं यदि ॥ तनसंयनतं दविषु
हृत्पानिपाह ॥ ३ ॥ तनायिका न विवातनी ॥ नृणां क्रीडा
क्रीडा विवातनी ॥ रिनिविकानानस्य द्रव्यस्य हन २ स्वाहा ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ ॐ अमृतं अमृतं व अमृतं वर्षिणि अमृतं सावय २ ॐ उं
शं ४ अमृतं नमः नमः ॥ ॐ यननमः फातिमः नमः ॥ ॥ ततः
कपूनादिहिवांसय ॥ ॐ उं उं विद्यातत्वाय स्वाहा ॥ ततः घट
स्य चण्डिका पूजयेत् ॥ ॐ उं उं सिद्धाष्टी पापू ॥ ॐ उं उं नकाष्टी
पापू ॥ ॐ उं उं शुक्राष्टी पापू ॥ ॐ उं उं उं तपलाष्टी पापू ॥
ॐ तिस्र्यष्टी ॥ तन्मः ॥ आनन्दहेनवर्ध्वा पूजयेत् ॥ ॐ उं
हरेष्टी आनन्दहेनवायवषट्ष्टी आनन्दहेनवष्टी पापू ॥

नैऋतं सूर्योऽस्य दक्षोऽस्य षष्ठी आनन्दहेनवीणीपापूज॥
ॐ नानन्दहेनवमिथुनं मन्त्रं संपूज्य ॥ तस्या सुदिशू ॥ नैऋतं सूर्यो
नन्दहेनवायवषट् ॥ नैऋतं सूर्यो नानन्दहेनवोऽस्य षष्ठीपापूज॥ पूर्व
अमृतानन्द ॥ तद्रूपं नन्द ॥ उन्मनानन्द ॥ ज्ञानानन्द ॥ मुक्कानन्द
॥ परमानन्द ॥ कानानन्द ॥ ॐ नैऋतं सूर्यो नानन्दहेनवमिथुनं संपूज्य ॥
मूलाधनात्कुशुतिनीमूलापापूजन इव माघायवामनासान
न्धुनान्कः प्रविश्य कुशुतिनीद्वानाहुक्कनन्धुमापूर्यत एव वि

चन्द्रमधुसूतनामृतवानिष्कैः संगमय्यतस्यनामृतमयींधना
 नाऊदकविवनान्नगुमाग्नैर्जवहिर्विनिर्गतांघटादनयाऊय
 आर्जुंजवांवीवूवैवोवैववन्नयनमः॥ॐ॥यवूधजपा॥संन
 धनमूडयासंरुह॥कवचनावगुह॥धनूमूडयामृतीकय॥
 पनमीकनजमूडयापनमामृतीकनजी॥त्रंजत्रंष्ट्रंष्ट्रंष्ट्रंष्ट्रंष्ट्रं
 मृतमृताहवेमृमृग्यनिमृमृगवर्षिणिमृमृतेसावय
 २स्वाहा॥ॐ॥दीपिन्यादीपय॥त्रंजत्रंष्ट्रंष्ट्रंष्ट्रंष्ट्रंष्ट्रंष्ट्रं
 किंनैकैदिनिक्कदयमहाकारैकनृ२को॥सो॥मादकनृ२को॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कलशपमाचनी गिरवधु विद्याया पूजयद्यथा ॥ घटमूत्रत्रुडखर्गु ॥ घ
टम (ध) मातृ खर्गु ॥ घटके (ध) मलु खर्गु ॥ घटमुख अन्न बकु मन्त्र
संपूज्य ॥ ॥ पूषा ३ तिमादाय घटम (ध) बीजं दद्यात् ॥ त्रैज हरे सल
को ४ ॥ पुनः पूजयत् ॥ त्रैज कलाष्टक यानमः ४ धी पापूज्य ॥ ६० तिस
पूज्य ॥ यानि मूत्रयानमस्तु ॥ तद्यद्ये श्री कृष्ण नाथ ते नव नूपत
वयं दिति घटस्मापनी ॥ ॥ ततः प्रक्षुब्ध ग (ध) धनी ॥ अद्यादि कन
प्राप्तयत् ॥ त्रैज किं नि २ विचैका क (ध) यै ४ अस्त्राय रुट ॥ तत्त्वमूत्र
या (ध) धनी ॥ य १० (ध) धनी ॥ त्रैज १० दहनी ॥ व १० प्रावनी ॥ ६० तिस

कुलप्रसन्नो धन॥ ५ कुल ३ स्यात्

[illegible]

[illegible]

कौंसीकौं॥ ॥ततः सर्वधामपनिमूलमबुधजगत्॥ (धनमूद्रया
मृतीकनयी॥ वै॥ कवचनावगुणन॥ त्रैलोक्यधामप्रधानाम
खिवद्रूपार्यैकैकवचायद्रु॥ दिव्यदृष्ट्यानिनीकेयी॥ त्रैलोक्य
महानात्रिकायेकैकैकयायवीषट॥ चक्रमूद्रयानदयी॥ त्रैलोक्य
द्रु॥ पृथ्वीदद्यात्॥ त्रैलोक्यचन्दनादिति पूजनं॥ त्रैलोक्यत्रैलोक्यसप्तपत्रामृत
रूपार्येनमः॥ अस्तुजनदयी॥ त्रैलोक्यकिंविश्विचक्रकाक्षयेकैक
अस्त्रायद्रु॥ ॐतिपञ्चकक्षदि (अधनविधिः॥ ॥ततः
साध्यपात्ररूपपनी॥ ततोअर्घ्यादिकंक्षुण्णयद्रु॥ पूजयंतीति

ॐ अग्निनाथाय नमः श्रीपापूज ॥ तत्र विन्दु रि का य व क्का नं व रु च रु
न हं वित्तिरव्यव क्का (ॐ) इत्यादि प्राद दि (ॐ) न उं उं जीं श्रीं
ह्रीं ॐ विवित्तिरव्य ॥ तत्र पूजय ॥ उं जीं आ धन ग क्का दिव्या
नमः ॥ चतुन ह ॥ उं जीं उं जीं शान पी ० श्रीपापूज ॥ अर्द्ध वेन्द्र ॥ उं जीं
आनन्दन पी ० श्रीपापूज ॥ व रु च ॥ उं जीं श्री पूर्ण मित्रि पी ० श्रीपापू
ज ॥ रि का (ॐ) ॥ उं जीं ह्रीं काम रूप पी ० श्रीपापूज ॥ विन्दु म (ॐ) ॥ उं
जीं ह्रीं पनापन चन्द्र पी ० श्रीपापूज ॥ व क्का (ॐ) ॥ उं जीं उं श्रीपापू
ज ॥ उं जीं उं श्रीपापूज ॥ उं जीं ह्रीं श्रीपापूज ॥ उं जीं ह्रीं श्रीपापूज ॥ उं जीं

क्रौं श्रीपापूज॥ ॥ आध्वर्यप्रदास्यं आर्जुनं किं निश्चिन्नं काक
जयं कुरु सुखाय रुद्र॥ मनुसं स्थापयं आर्जुनं श्रीकृष्णिकादद्या
र्वाध्वर्यं स्थापयामि नमः॥ पूजयं आर्जुनं नौ नौ नू नू मं वद्वि
मनुसाय धूम्रादिदं केलाया फात्मन धर्मं पुदाय
श्रीकृष्णिकादद्यामू साध्याध्वराय नमः श्रीपापूज॥ ॥ अर्घ्य
पाणं प्रदास्यं आर्जुनं किं निश्चिन्नं काक जयं कुरु सुखाय रु
द्र॥ सुगन्धनस्यं आर्जुनं कुरु कृष्णिकायि कुरु द्वीपायै कुरु

खण्ड १

पार्श्वी पूष नमः सर्ववी॥ नै० ॥ पार्श्व पूनय २ स्त० ॥ पार्श्व पविर्
कृत् २ स्वाहा॥ ॐ नमः पार्श्व पूनय ३ यित्वा॥ पु० ३ मीन मूडा
कृत्ता मृता निनिदिष्य॥ पू० ३ य० ॥ नै० ३ सां ३ सी हं स्मां
उ० सां म० म० नुताय अमृता दिषा १ उ० कला व्या फात्म ३
अ० काम प्रदाय श्री कृ० त्रिका देव्या मूलाद्या मृताय श्री पाप
॥ ॐ सु० शु० दि० पु० नव कला श्री पापू ॥ ॥ अ० कृ० मू० डया ती
र्थमावाहनी॥ कां० ग० (म० चय म० न० च० वे० ग्यादि॥ ॥ त्रि० कू० मू० ड

या गणपिकां विस्तिरयत पिका (जवा मावर्कनि अधाना रुम
चननमन्ना धर्म विस्तिरयत ॥ नुं सन्तं हन्तं नुं मन्तं सन्तं वे नुं
नन्तं येन नुं ॥ म (ध्वा) नुं हन्तं ॥ अधाना मायथा ॥ नुं अ कां कीं
क ४ प्रसू न २ धान २ नन नन नूप २ च ८ २ प्रच ८ २ कह २ वम २ ध
म २ धा गय २ विद्यातय २ विधि २ ह ३ ह ३ रु ३ कां श्री महा की मा
निका विवे श्री पा पू ॥ ॥ तता गन्ध दत्त पृषा ग हि तां या नि मूडा
वध्वा पूर्ववत् कुं सु तिनी मूत्ता या व क्रन न्धु रु विव द्म म सु त गत
पना मूतं त न्मू दार्था प्राया र्था मूत या जय ॥ नुं अ स र्ध श्री अर्घ्य

पाशुपतीपापूज॥ नमः॥ त्रैलोक्यसौ हृदयाय नमः॥ ॐ न्यादिषु
(मनसं पूज्य॥ चतुर्दिक्षु मन्त्रं च पश्यन्तं तानि पूजयेत्॥ त्रैलोक्यं
गगनं रुवनं न तत्र स्थानं नमः॥ श्रीपापूज॥ त्रैलोक्यं स्वर्गं रुवनं न तत्र
स्थानं नमः॥ श्रीपापूज॥ त्रैलोक्यं पवनं रुवनं न तत्र स्थानं नमः॥ श्रीपापूज॥
त्रैलोक्यं मूर्ध्नि रुवनं न तत्र स्थानं नमः॥ श्रीपापूज॥ त्रैलोक्यं नूनां गुरु
वनं न तत्र स्थानं नमः॥ श्रीपापूज॥ ॐ नमः पूज्य॥ त्रैलोक्यं मिथुनाथा
पश्यन्तं श्रीमन्नान्नं नार्थं कृष्णं कार्यं श्रीपापूज॥ ३॥ त्रैलोक्यं
नदं न दत्तं पृथुनि नमः॥ ॥ मत्स्यमूढया चोद्यते॥ मूलं

मकुंजिवानंजसा॥ (धनमूडा॥ वं॥ यानिमूडा॥ हुं॥ प्रदग्ध
॥ तात्पर्यदिगुन्धनं कुर्यात्॥ इति मूलार्थस्काप न विधिः॥
॥ ॥ प्रवीणगपागुस्कापनी॥ ॥ तत्तात्पर्यं गुडि कुर्यात्॥ अथ
पात्रस्थितपूष्यगृहीत्व कूर्ममूडावध्वमूलाध्वनात्कुशुनिनीमू
त्वयमूलाध्वनचक्रे कुशुनिनीद्वानास्वाधिविष्ठा ननयं कुर्यात्॥
त्रै॥ स्वाधिविष्ठा नीम निपूत॥ जी॥ मयि पूतमना हतं॥ श्रु॥ अना
हती विधुदो॥ हुं॥ विधुदमास्त्रायं तयं कुर्यात्॥ श्रु॥ पून रुस्मा

ह्रीं

दाकाशीसुखाकुरुसिन्धुविशुद्धोष्ठापय॥ आकाशमवायुसु
खाअनाहतोष्ठापय॥ ह्रीं॥ वायानग्निमहाविष्णुनस्तोप
य॥ श्री॥ अ॥ (गुरुसुखाकुरुममिपूनेष्टोपय॥ ह्रीं॥ जलान्
पृथिवीसुखामृताधनेष्टोपय॥ जै॥ कुरुसिनीचक्षुःश्रोत्रं
तत्पुष्पमाध्यायद्विषाहसोपकायमूर्च्छामृतनाम्नानामृतमृ
चनेत्रेतिषि॥ ह्रीं॥ दितिरुतगुह्य॥ ॥ तत आत्मपूजा॥ त्रैलोक्यं
नैश्वीपापूजा॥ ह्रीं॥ अ॥ दत्तेश्वरीपापूजा॥ श्री॥ सिद्धेश्वरीपापूजा॥ ह्रीं॥ माह
नीश्वरीपापूजा॥ ह्रीं॥ तिनकाचन्दन॥ ह्रीं॥ पूष्यश्रीपापूजा॥ ह्रीं॥ ॥

ॐ स्वात्मपूजा ॥ ॥ गिरसि मूलाद्या मृतनगुनूतप्यजी ॥ ॐ स्वाहा
श्रीगुरुं भूम्कानन्दनाथं गकियूकं तप्यया मिनम ॥ ॐ स्वाहा
श्रीपनमगुरुं भूम्कानन्दनाथं गकियूकं तप्यया मिनम ॥ ॐ
स्वाहा श्रीपनापनगुरुं भूम्कानन्दनाथं गकियूकं तप्यया मिन
म ॥ ॐ स्वाहा श्रीपनमधिगुरुं भूम्कानन्दनाथं गकियूकं तप्य
यामिनम ॥ ॐ स्वाहा दिव्योद्यगुनूकप्यया मिनुम ॥ ॐ स्वाहा सि
द्धोद्यगुनूकप्यया मिनम ॥ ॐ स्वाहा श्रीमानवोद्यगुनूकप्यया
मिनम ॥ ॥ ततान्कयगि ॥ ॐ कानादिगुनूपद (१) नकगुति

[illegible]

कालामुखम् अवतन २३ अहिरगवन्मगुत्तम (ध्वजपानीतं
 वसिष्ठं २३ वाष्पिनाथं च दत्तं मे द्रुं रुद्रं स्वाहा ॥ १॥ अथ वसिष्ठं द्रुं क
 नाथं यनमः ॥ १॥ जैंजैननामनघीपापूज ॥ जैंज ॥ हेवस्मानाधि
 प्रणययथनामं अगुत्तम (ध्वजपानीतं २३ वगुत्तं जायति न
 यकाग्रं खट्वा करं पूजयामास महाकपालमासातनं यविशु
 काटिं समप्रणय ३ अहिरगवन्तं नव नूपं य (ध्वजपानीतं
 वसिष्ठं २३ मम विद्यां दयां दयां कुं कुं कुं रुद्रं स्वाहा
 ॥ १॥ अथ वसिष्ठं द्रुं पासायनमः ॥ २॥ जैंजैर्हिंहासनघीपापूज ॥ जैंज

[illegible]

[illegible]

म४॥ ॥ ताम्रसूत्रादि (॥ धनं ॥) गितिरं पञ्चकंदविद्वत्तुक्कनसमन्वित
४॥ सिद्धि (॥ धनं मिथ्या कृतनृकं उक्ता (॥ धनं ॥) ॥ तर्पणी ॥ त्रुं जप्रीत ४ पु
तासनं हारवतयहन (॥ धनं वामनमुक्तिं धृष्टीवधृष्टीननाथ ४ पु
तरुतिरुं धनं साकपासा ४ रुं धीन्द्रा ४॥ यद्वा नदी सिं देव्या ४ पितृ ग
धमहिता मातन ४ क्षणपासा ४ यागिन्नाया गयूका ४ सुखं जसखच
ना ४ पानभतपिवन्तु ॥ पिवन्तु देवता ४ सर्वसन्तु जाध्वविनायका ४॥
यागिन्य ४ क्षणपासा धममदहं यवह्निता ४॥ अविना (॥ धनं रुवदहा
कृजनामनभवच ॥ नाग (॥ कर्तृयना मिनाशु श्रीसुखसंपद ४॥ ॥

श्रीस्वस्वदवतापश्चिमश्रुतानुश्रुताप्रायश्चित्तविंशतिकुमार्चनक
र्मलिषश्चवत्यर्चनसंपूर्णार्थसमयचक्रायुनाया (ॐ) स्वयंजन
धनसंश्रुतिस्तनानुवृद्धिनस्तु॥ ॐ जनमः श्रीनाथाय॥ ॐ जन
मः श्रीसिद्धिनाथाय॥ ॐ जनमः श्रीकृष्णनाथाय॥ श्रीपापूज॥ ॥
ततस्तत्त्व (ॐ) धनी॥ ॐ जाँ आत्मतत्त्व (ॐ) धयामि००० जाँ प्रानवुआ
त्मजन्मद्वर्तपापसंहारयश्चक्रासनस्वतीसहितायधनश्रुदिमा
यानुक्रमकणिगकृत्वात्मना आत्मतत्त्व नस्तु तदहं (ॐ) धयामिनिव
हस्वाहा॥ १॥ ॐ जाँ विद्यातत्त्व (ॐ) धयामि००० जाँ प्रानवुविद्या

सदाशिवध

जन्मकृतपापसंहारयश्च श्रीनानायकसहिताय मुद्रुविद्यादिस
दाशिवान्नितत्वात्मना विद्यातत्त्वेन ह्युद्देह (॥ अध्यामि शिवाह
स्वाहा ॥ २ ॥) ॐ शिवतत्त्वं (॥ अध्यामि पत्रकपात्रवृत्तिवज्जन्म
कृतपापसंहारयश्च पार्वतीसहिताय नमः ॥) दिशिवान्नितत्वात्म
नाशिवतत्त्वेन पत्रदहं (॥ अध्यामि शिवाह स्वाहा ॥ ३ ॥) ॐ शिव
जीर्णसर्वतत्त्वं (॥ अध्यामि सर्वजन्मकृतपापसंहारयश्च पत्राच्च
पत्रशिवसहिताय धनं नमः ॥) दिशिवान्नितत्त्वेन तन्मया गुण
जीवात्मानं (॥ अध्यामि शिवाह स्वाहा ॥ ॥ ॐ शिवतत्त्वं मुद्रु ॥

वर्द्धिगत्वात्मना

तगः कनककृपिकामुद्रावधूदं वीमूढाया ॥ त्रैलोक्याया धनचक्रं
नसितयगतावुक्कन (मुनिपाता ॥ तानीत्वा दत्तमना उं ह्रिकृष्टि
निता रुजः पूरुं सुदीर्घं ॥ ध्यायन्ती यननिग्या तद्गतं त्वेकजा हस्त
सुखातिमूर्तिः सा देवी अन्तर्यामिणी वहति पूज्यमा ध्यायत चक्रं
मध्या ॥ वेदतिमनुसंस्थाया सपृथग्गवामहस्तं नदवदं वीम
गन्नावाहनी ॥ त्रैलोक्याय समस्तमनुसंस्थाया सपृथग्गवामहस्तं
विहृतीमा सुखिन्याय वगुक्कं त्वकृत्कृत्सगत्तं पञ्चकं चान्यवदं
~~विहृतीमा सुखिन्याय वगुक्कं त्वकृत्कृत्सगत्तं पञ्चकं चान्यवदं~~
चत्वारः पञ्चकान्यः पूनरपि चतुन

सुखतामसुखनसंसृष्टयनतस्मै नमः पृथुवर्तते नवं श्रीकृष्णं ॥
॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नन्दविवर्तिनं गुरुस्वामि ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नन्दविवर्तिनं गुरुस्वामि ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
॥ ॐ नमः ॥ ॥ ततः ॥ सिद्धवार्चनं ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
पूजं ॥ ॐ नमः ॥ प्रसादं ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
कृष्णं ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
सुखं विन्दुकापालध्वनिजं ॥ मृगुमाता हिरण्यवर्णं ध्यातव्यं कृष्णपाल

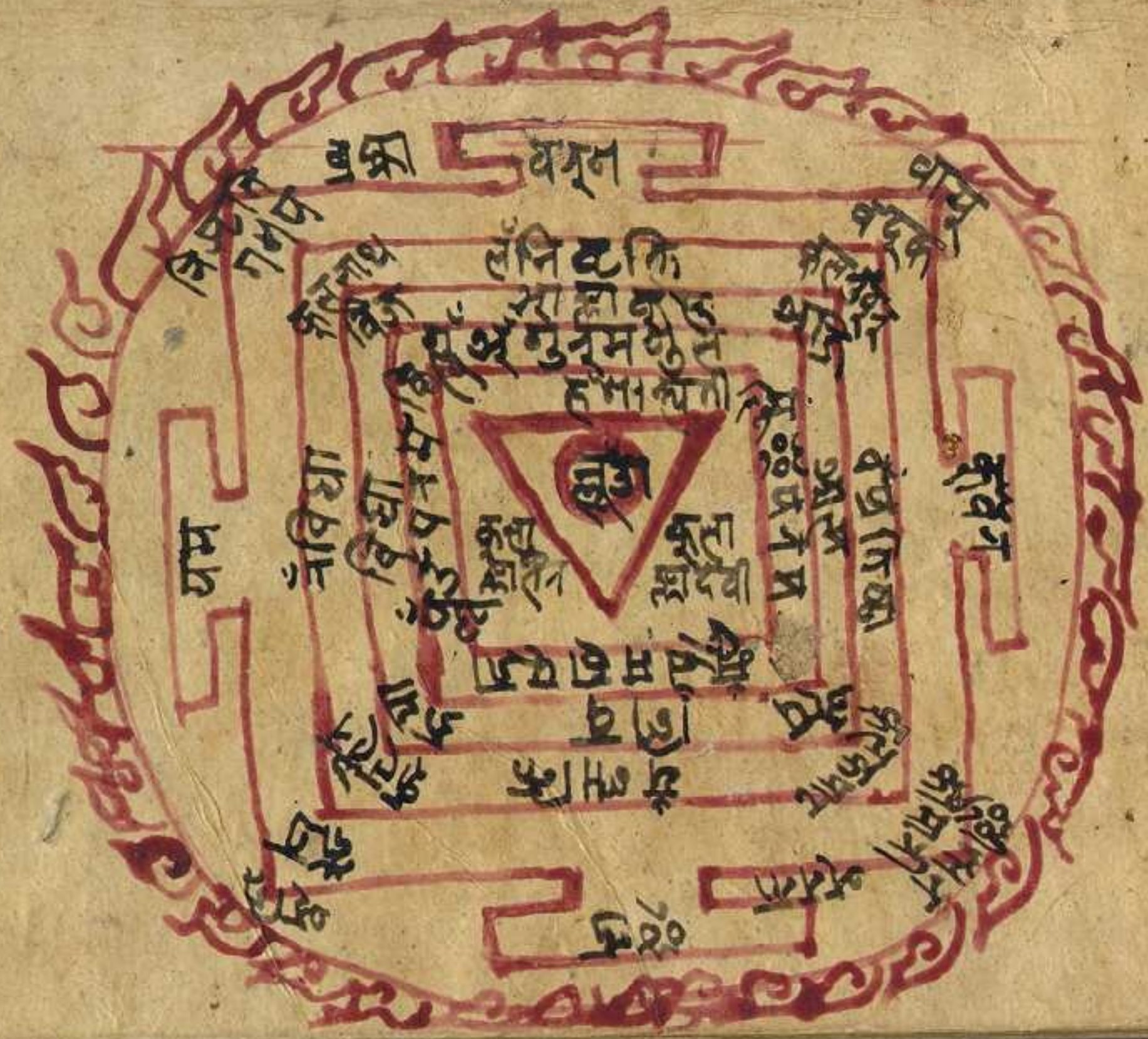
कै॥ जै॥ श्रीपूजनदीपदनुनादवीष्टुतिधनदगुपासश्रीपापू॥
जै॥ श्रीपूजनसिद्धीपदमहकीदवीमहाधर्मददगुपासश्रीपापू॥ जै॥
अखीसिंहनदीपदनुनादवीमहायागीदगुपासश्रीपापू॥ जै॥ कांकी
दू॥ द॥ दगुपासश्रीपापू॥ जै॥ कांकीदू॥ अमृकेल्लानाधिपतयव
कपिलाग्रजगतागतास्वनगिनगुलासामुखअवतनरहेनकनू
पजगृह्ण२गु२२मृ२२स२ख२खाहि२महाग्रामनाधिपतयदम
स्वनदाममसुवर्गधनधन्यासाहान्दहिनम४स्वाहा॥ वसि॥ अ

वाहनादिदधुमूडा॥ ॥ तथावद्वृकपूजा॥ त्रैलोक्यमयूनासनश्रीपा
पूजा॥ ध्यानं॥ महामयूनामातूरुं कुमारैवातनूपिणी॥ नर्कमूयुहि
हृषासुदधुगकिवनन्दुती॥ विन्दुमूडाकनश्रीमान्नकाचनविह
षिती॥ अवधुध्याननिर्णयवद्वृककूलपूणक॥ ॥ त्रैलोक्यश्रीकोकूल
पूणवद्वृकनाथश्रीपापूजा॥ वसि॥ आवाहनादिदधुमूडा॥ ॥ तथा
गणेशपूजा॥ त्रैलोक्यमूषासनश्रीपापूजा॥ ध्यानं॥ मूषपृष्ठासनन्द
वधुशामगजवक्रक॥ त्रिनेत्रपशुल्लभूकमूलादल्लिखध्वनि

ॐ॥ नागयज्ञोपवीतः सर्वद्विजनाशनी॥ प्रवविब्रह्मनं ध्यायन्
नार्थं महात्मनः॥ ॥ ॐ अंगी गूग ४ ॥ ॐ श्री कृष्ण गणेश्वर
श्री पापू ॥ वसि॥ आवाहनादि गऊ मू ३ ॥ विन्दु॥ ष्ठति त्रिवसि
पूजा॥ ॥ ततस्त्रिपुष्टि पूजनं॥ ॐ अ पद्मासन श्री पापू ॥ ध्या
नी॥ नक्षत्रपद्मासनासीनं नक्षत्रवर्कसूक्तं ॥ वनदाहयहसूक्तं
सोम्यत्रूपं महाऊसं॥ सर्वास्त्रकान्संयुक्तं स्वगुर्ग्रीवूष्मिन्
देनमाग्रहं॥ स्वगुर्ग्रीवूष्मिन्॥ ॐ अ पद्मासनासीनं ॥ ॐ अ वक्षसूक्तं

सं॥ वनदाहय हस्तु ३ सोम्य तू पं महाजसी ॥ सर्वलक्षण न संयु
क्तः पत्रमगुनं श्रीचर्या नन्दन माम्यही ॥ पत्रमगुनं ४ ॥ कृष्ण
आसनासीनं ५ ॥ मवर्णं सूरतजसी ॥ वनदाहय हस्तु ३ सोम्य
तू पं महाजसी ॥ सर्वलक्षण न संयुक्तः पत्रमगुनं श्रीचर्या नन्दन
माम्यही ॥ ५ ॥ ३ ॥ ४ ॥ स्वगुनं श्रीकृष्णं नन्दनाथं श्री
पापू ॥ ३ ॥ ४ ॥ पत्रमगुनं श्रीचर्या नन्दनाथं श्रीपापू ॥ ३ ॥ ४ ॥
पत्रमगुनं श्रीमिशनन्दनाथं श्रीपापू ॥ वसि ॥ ५ ॥ धनम्

शा॥ जै० अ० द० ग० श्री गुरुद्विहृदयन कधीपा पू० ॥ ३ ॥ वसि॥ ॥ धनू
मू० ॥ वि० ॥ न० ॥ ॥ इति गुरुद्विहृदय पू० ॥ ॥ तत० ॥ श्री गुरुमगुरु
नवात्मा चै० नम॥ ॥ चको दान० ॥ य सर्वे वदन्तु ॥ पुनन
पिनियतं वातं ॥ वी० स० य० ग० स० वा ॥ दानं च गु० अ० ज० त० धि० दि० ति
ग० त० दानं मा० सा० स० म० र्क० ॥ तच्च क० स्या० न० म० ॥ ॥ स्मि० त० र० व० त० न० न० द
वन० न० द्या० त्म० रूप० स्व० च० न० द० ते० न० वा० र० य० गि० व० न० न० मि० त० नो० मि० क
की० य० त० त्वं॥ ॥ इति चको दान० ॥ ॥ ततान्यासं कानय० ॥ व० ॥



ॐ ति॥ ॐ अ॥ श्री नवाक्षरकूटनाममन्त्रस्य वामदक्षमृषि
नृकाक्षन्द॥ श्री नवात्मकृष्णिकादेवतायुं वीजं खं गं किं ॥
कीलकं शुक्तिमूकिसिद्धार्थविनियोगः ॥ ॐ ति॥ अ॥ अष्टादि
कं स्मृतवान्यसंभानिनसि॥ ॐ अ॥ वामदक्षमृषय नमः ॥ मुखे॥
पंकिकन्दसनमः ॥ हृदि॥ ॐ अ॥ श्री नवात्मा कृष्णिकादेवताये नमः
॥ गुह्ये॥ ॐ वीजाय नमः ॥ पादयोः ॥ खं गं कथं नमः ॥ सर्वोत्तम
॥ ॐ कीलकाय नमः ॥ वक्षः ॐ ति॥ शुक्तिमूकिसिद्धार्थविनि

ॐ श्रीपापूज ॥ ५

याग ॥ ॥ त्रिंजं तं अस्त्राय रुद्रपापूज ॥ त्रिंजं तं अंगुष्ठाख्यानमः
श्रीपापूज ॥ त्रिंजं तं तर्जनीखाहा श्रीपापूज ॥ त्रिंजं तं मध्यमा
खाविषट् श्रीपापूज ॥ त्रिंजं तं अनामिकाखाद् द्विं श्रीपापूज ॥ त्रिंजं तं
कनिष्ठाखाविषट् श्रीपापूज ॥ त्रिंजं तं कनकनसपुष्ठाखा रुद्र श्रीपापू
ज ॥ ॥ त्रिंजं तं हृदयाय नमः ॥ त्रिंजं तं शिरसः स्वाहा श्रीपापूज ॥
त्रिंजं तं शिरसाय विषट् श्रीपापूज ॥ त्रिंजं तं कवचाय द्विं श्रीपापूज ॥ त्रिं
जं तं गुह्याय विषट् श्रीपापूज ॥ त्रिंजं तं अस्त्राय रुद्र श्रीपापूज ॥
शक्तिकनाम्न्यासः ॥ ॥ अथ दहन्यासः ॥ त्रिंजं तं शिरसाय न

श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं संपन्नं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं दंतसुता श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं
मंत्रं कुं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं हृदयं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं वनाली श्रीपापू॥
त्रैलोक्यं नरुं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं ज्ञानं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं उपादयं श्री
पापू॥ ॐ नमो हस्तसः॥ ॥ ततः पूजनं॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥
दिव्यं श्रीपापू॥ ॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ ॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ ॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥
श्रीपापू॥ ॐ नमो हस्तसः॥ ॥ ततः पूजनं॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥
त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥
त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥
त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥ त्रैलोक्यं श्रीपापू॥

ज्ञानाष्टी

नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं श्रीपापू॥ पश्चिम॥ त्रैलोक्यं नमस्तुभ्यं श्रीपापू॥
 श्रीपापू॥ ॥ तदास्तुभ्यं वदाम॥ पूर्व॥ त्रैलोक्यं श्रीगिवतत्त्वगुप्तम
 गुप्तपत्राश्रीपापू॥ दक्षिण॥ त्रैलोक्यं श्रीविद्यातत्त्वगुप्तमगुप्तपत्रा
 पत्राश्रीपापू॥ उत्तर॥ त्रैलोक्यं श्रीगिवतत्त्वगुप्तमगुप्तपत्राश्रीपा
 पू॥ पश्चिम॥ त्रैलोक्यं श्रीआकाशसमाश्रीपापू॥ ॥ अग्नि॥ त्रैलोक्यं
 श्रीजयाश्रीपापू॥ नैऋत्य॥ त्रैलोक्यं श्रीविजयाश्रीपापू॥ वायव्य॥ त्रैलोक्यं
 श्रीश्रुतिताश्रीपापू॥ ॥ ॥ त्रैलोक्यं श्रीश्रुपत्राश्रुतिताश्रीपापू॥ ॥
 तदास्तुभ्यं वदाम॥ मध्य॥ त्रैलोक्यं हं श्रीश्रुतिताश्रीपापू॥ पूर्व॥

त्रं यं नमः श्रीपापू॥ दक्षिणे॥ त्रं नैविद्या श्रीपापू॥ उक्तं॥ त्रं वं
प्रतिष्ठा श्रीपापू॥ पश्चिमे॥ त्रं तं निवृत्ति श्रीपापू॥ ॥ आ॥ प्रया
॥ त्रं श्रीकृत्तं नव श्रीपापू॥ नैमिष्य॥ त्रं श्रीकृत्तं नाथं नव श्रीपा
पू॥ वायव्ये॥ त्रं श्रीकृत्तं सुमुखं नव श्रीपापू॥ ॥ श्री॥ त्रं श्रीकृ
त्तं कपाटं नव श्रीपापू॥ ॥ त्रि॥ का॥ न॥ द॥ द॥ पा॥ ॥ त्रं श्रीकृत्तं
ज्ञाते नव श्रीपापू॥ वामपा॥ ॥ त्रं कृत्तं ह्लादवी श्रीपापू॥ ॥ त
द्वा॥ य॥ ग॥ म॥ ॥ अ॥ प्रो॥ त्रं कौ॥ दी॥ हू॥ द॥ द॥ द॥ पा॥ स॥ श्रीपापू॥ ॥ नैमि
ष्य॥ त्रं ग॥ म॥ गी॥ गू॥ ग॥ ॥ श्री॥ कृत्तं ग॥ ल॥ ग्व॥ न॥ श्रीपापू॥ वायव्ये॥ त्रं

धौं धौं कृत्स्नवदकनाथ धीपापूज॥ ॐ नमः॥ त्रैलोक्यमहाकोमा
निकाविश्वधीपापूज॥ ॥ तद्वहिर्द्विपुर्वीदिकमग॥ त्रैलोक्यं तूँ तूँ तूँ
४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं तूँ तूँ तूँ ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं मूँ यम ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं
ह्रीं निमृति ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं वूँ वरुण ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं यूँ वायु ४ धीपापू
ज॥ त्रैलोक्यं हूँ कृवन् ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं हूँ ॐ नमः ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं अँ अ
नक ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं कुँ वेङ्गा ४ धीपापूज॥ ॥ त्रैलोक्यं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ४ धीपा
पूज॥ म॥ ॥ त्रैलोक्यं पद्मासन ४ धीपापूज॥ त्रैलोक्यं शवा ४ धीपा
पूज॥ ॥ ध्यानं॥ त्रैलोक्यं पद्मासन शवस्तुष्टु दशव ४ धीपापूज॥ कुँ त्रिलो

॥ ध्यानं॥





चनं॥ खवर्गुं महादीपं सर्वसंयुतं॥ खवर्गुं पूर्ववत्
नुदक्षि (अक्षु) (अक्षि)॥ उक्तं पीतवर्गुं स्यात्तु इष्टं न कन
ती॥ न कस्य दक्षि (अक्षु) (अक्षि) मूक्तं न भवत्॥ तद्दुःखं पीतवर्गुं च
पीतस्य केषूदक्षि (अक्षु)॥ न कस्य मूक्तं मिथ्या दूक्तं दूक्तं (अक्षु) मूक्तं
मी॥ अक्षु दक्षि (अक्षु) नन्दं वक्तव्यं न (अक्षि)॥ खवर्गुं दूक्तं धनं
वर्गिणं स मूक्तं न कथा॥ सूर्यं कमलं सूर्यं (अक्षु) उक्तं न खवर्गुं स म
वत्॥ वाक्षं धनं ४ सूर्यं सूर्यं कंदं दक्षि (अक्षु) सूर्यं (अक्षि)॥ चक्रं (अक्षु)
वगदापाणि वनं दक्षि (अक्षु) हस्तं॥ कोशं विन्दुं धनं नन्दं वनं नाना स

कपत्र (॥) हितं ॥ गवपीत हव द्वर्मासनं सुखसंस्थितं ॥ उर्वं नूपन
वात्मानं मगुर्गुत्तमगुत्तं ॥ अयत्तं नयूकोत्मादिपं सिद्धा निमा
नवा ॥ ॐ तिस्र हृदयकमलं पूर्ववद्वात्मानं मूर्त्तिन्यसंगा नुं ॥ अ
नपृष्ठापापू ॥ ॥ आवाहनादि ॥ नुं ॥ गवन्नवात्मन् ॐ हाग
कु २ ॐ हति सु २ ॐ हसन्निहिगा हव २ ॐ हसन्निनुद्धा हव २ ॐ
हसं मुखं हव २ मम पूजा गृहाय स्वाहा ॥ नुं ॥ हृदयाय नमः
॥ ॐ यादिषु ॥ मनसैकसीकृत्य ॥ ॥ नुं ॥ नकववायद् ॥ ॐ
यवगु नृनी ॥ नुं ॥ यनं गुयाय वीषद् ॥ ॐ तिनिनीद्वर्ग ॥

धनमूडा॥ वं॥ पत्रमीकनममूडा॥ ॐ॥ अस्तु यत्र दक्षिणं॥ त्रिंशुं
अस्तु यत्र दक्षिणं॥ ॥ पञ्चमहामूर्तीदक्षिणं॥ त्रिंशुं॥ ॥ ॐ॥ धनमूडा
ॐ॥ ॐ॥ योनि॥ ॐ॥ काश॥ ॥ तत उपचारपूजा॥ त्रिंशुं॥ ॐ॥
प्रतया शृंगीनवात्मननमः॥ प्रवी॥ प्रथमं॥ ॐ॥ स्वाहा॥ ॐ॥
ॐ॥ दमाचमनीयं स्वधा॥ ॐ॥ दस्त्रानीयं नमः॥ प्रथमं॥ ॐ॥
ॐ॥ नमः॥ ॐ॥ दसिन्दुर्व० नमः॥ ॐ॥ दमनूतपन० न
मः॥ प्रगडकचन्दन० नमः॥ ॐ॥ दमद्वर्गनमः॥ प्रतानिपुष्या
निवीषट्॥ ॥ धूप॥ ॐ॥ धनी॥ अर्घ्यादिकं न प्रादक्षिणं॥ त्रिंशुं॥ ॐ॥

स्वायंरुद्रा॥ अथ धनी॥ त्रैलोक्यं ह सर्वप्रपन्नमानन्दिनिकवचाय द्रुङ्गा॥
पूजनं॥ त्रैलोक्यं कीर्तनं यो गिरिवाधू मन्त्रपि (स्त्रे) सो गन्धिनी सर्व
देवीनां सान्निध्यकत्रि (स्त्रे) नमः॥ ॥ घण्टा पूजा॥ त्रैलोक्यं कीर्तनं
गुह्यविद्याधर्यो धुन्येनमः॥ ॥ वामनघण्टावाद्यन्तदकह
फल्गुस्तुष्टुतर्जनीया धूपपात्रमादाय निवदयता त्रैलोक्यं हरे
सर्वप्रपन्नधूपपत्रं० निवदयामि नमः॥ देवस्य वामना (गनि
वदयता॥ ॥ दीप (अथ धनी॥ अर्घ्यादिकं नास्तु यथा शुभा॥ अथ धनी
ता त्रैलोक्यं नात्रा त्रैलोक्यं नात्रा अतिरूपगिरिवाधू वषट्का पूजनं॥ त्रैलोक्यं

नैह ४ नौ नौ नू नै नौ न ४ पना पू ४ अति नू पि (६) प्रका ४ ४ कय नमः
॥ ॥ द द ह रु स्य म ध्व माना मानु शा ति र्दी प पा ए मा दा य वा म न
पा वि ना घ ४ वा द य ४ न दी प ४ सि त वे र्कि का च द व स्य द द रु ४
(ग) ॥ तै त दी प न क व र्कि का च द व स्य वा म ता (ग) नि व द य ॥ ॥ ॐ ॐ
ह र स र ४ षा दी प ४ ० नि व द या मि न मु ४ ॥ ॥ नै व शी पूर्व व त्स
रु ४ ॥ नि व द य ॥ ॐ ॐ ह र स र ४ द नै व शी ० नि व द या मि
न मु ४ ॥ ॐ त ग ४ ष द या ॥ ॐ ॐ ॐ मृ ता प रु न भ म सि ॥ ॥ वा म
न नै व श पा ण ४ ग न द क प ४ ४ अ स मू दी द र्ग य ॥ क नि षा ना

माङ्गु म्हाति॥ त्रैपाद्ययस्वाहा॥ तर्जनीमध्वमाङ्गु म्हाति॥ कौमु
पानायस्वाहा॥ मध्वमानामाङ्गु म्हाति॥ श्रीसर्मानायस्वाहा॥
कनिष्ठावर्जितवगुनमुनि॥ इन्द्रोदानायस्वाहा॥ सर्वा
ङ्गुलि॥ श्रीव्यानायस्वाहा॥ ॥ पुनर्जितगुणवदद्यात्
त्रैपाद्यमृतापिधनमसि॥ तर्पण॥ त्रैपाद्यहरेस्तस्वाहा॥ श्रीनवा
त्मानेतर्पयामिनमः॥ ३॥ पुनर्नवाचमनी॥ त्रैपाद्यहरेस्तस्वाहा॥ श्रीनवा
चमनीयं श्रीनवात्मनव॥ ॥ यूपचानपूजा॥ ॥ श्रीपञ्चा
नपूजायां पाद्यादिकं त्वावच्छेदकं॥ धूपदीपगुणकं प्रदद्यात्॥

गुह्यसि। जैं अदुं आनन्दन कि हेनवानन्दवीनाधिपतयः
ह्रीं श्रीमहादेव विद्यानाऊं नवीधीनवात्मागुह्यमधुतरण
ह्रीं नकशी वु पापू॥३॥ ॥ जैं अदुं श्रीमहादेव विद्याना
ह्रीं ऊं नवी ह्रीं गुह्यमधुतरण ह्रीं नवात्मीरुह्यानि
का श्रीपापू॥ ॥ ह्रीं ॥ जैं अदुं आनन्दन नन्दन कि हेनवान
न्दवीनाधिपतयः ह्रीं श्रीमहादेव विद्यानाऊं नवीधीपा
पू॥ जैं अदुं ह्रीं श्रीमहादेव विद्यानाऊं नवी ह्रीं
पापू॥ ॥ वसि ॥ जैं अदुं ह्रीं नन्दन कि हेनवानन्द

[illegible]

[illegible]

ये पञ्चाशद्व्यं श्री धर्म शंकर यो. श्री पाद

गृह्यस्वाराहा ॥ ॥ त्रैवीनचन्दनपापूज ॥ द्रोवीनाकृतश्रीपापूज ॥
श्रीवीनरहस्यश्रीपापूज ॥ कुंवीनमाहनीश्रीपापूज ॥ श्रीवीनपुष्प
श्रीपापूज ॥ त्रैजमलिव ॥ त्रिपत्तर्तश्रीपापूज ॥ ॥ पूर्ववत्पुष्प
महामुद्रादणयि ॥ त्रैजमः श्रीनाथयतितर्पणपुनराचमन
॥ ॥ त्रैजश्रीपश्चिमसंस्थानसंस्थाम्रायश्रीगुत्रमगुत्तनवात्मा
त्रैजप्रातःकृत्यविधेस्तत्सर्वविधिपत्रिपुष्पमस्तु ॥ ॥ त्रैजप्रातः
कृत्यनवात्मात्रैजविधिः ॥ ॥ अथमध्याह्निकमचक्रपूजामा
नरहयथा ॥ ॥ स्वास्तनस्तुपय ॥ त्रैजश्रीकुंक्षीः त्रैजश्रीकुंक्षीः

हूं हूं हूं हूं हूं वं जम मुस वदिति अमाद्यमहाघात्रगगनविशु
द्ध (अधयश्च जामन हूं हूं हूं हूं) ॥ आका (अपूर्यादिपञ्च) ॥
त्रं जं जं जं जं जं माकं मुमं मुस (अधनी तज्जस्विनी हूं हूं हूं हूं)
॥ ॥ विद्यात्मादनी ॥ जं जं किं निश्चिक्काकं अयं जं अस्त्राय हूं
॥ ॥ पूर्ववद्वज्जं मुकूटं मुद्रयावज्जीकननी ॥ जं जं जं हूं हूं हूं हूं वज्जप
त्रस्वाहा ॥ ॥ वामानामिकायां दशं दानानि नृणां प्रोक्तं
यमनी ॥ जं जं वसं मकूटं कूटं मचं सज्जी हूं हूं हूं हूं स्वाहा ॥ ॥ त
तावत्तुमाव न्यासा न्कुर्यात् ॥ न्यासस्तु यथा ॥ ॥ आदौ दार्ति



गिकाख्याकनवदनवपुर्द्वादशमहं वठम् ॥ मात्मीनीगदनाभीरव
 रुयतनिमीशीरिविशापनाया ॥ आघायाद्विहसद्वीवद्रुद्रनितहनी
 च्यासकपञ्चनत्रं ॥ ग्रन्थिं क्रीडनवात्मागगनगतिपुदपातुषादाह
 न्यासः ॥ ॥ तपोदीक्षादिभिर्द्वन्नीसमयान्यासः ॥ नुंजकिगिश्वि
 चंकाकजयेज्जुस्तुययुद्धधीपापूज ॥ नुंजनमारुगवतिहन्क
 मसायेकांशीर्जुस्तुयययनिमेऽधीपापूज ॥ ६० ॥ यादिपूर्ववत्कन
 वकुम्भन्यासं कृत्वा ॥ गितसिपूजनं ॥ नुंजनमारुगवतिहन्क
 कायिकांजीहूधानग्रधानग्रधानाम्खिक्कांकीकिगिश्वि

श्रीपापू॥ चर्ववति॥ ॥ न्यासरुली॥ विमन्धस्वर्द्धनाष्टयय
धनस्वविग्रह॥ न्यसकदास्वनाडुनवाढान्याससमरुली॥ ॐ
समयान्यास॥ ॥ अथ द्वादश न्यास॥ ॐ जह्म सिद्धायै पाद
यो॥ श्रीपापू॥ ॐ जह्म मृद्यो जाना॥ श्रीपापू॥ ॐ जह्म विग्रहा
येडुर्वी॥ श्रीपापू॥ ॐ जह्म सस्त्रिगुधश्रीपापू॥ ॐ जह्म दीफा
येनाहो॥ श्रीपापू॥ ॐ जह्म मालिन्यद्वयश्रीपापू॥ ॐ जह्म शिवा
येक॥ श्रीपापू॥ ॐ जह्म वसुमखायै मुखश्रीपापू॥ ॐ जह्म
हं मायायेनाष्टपूया॥ श्रीपापू॥ ॐ जह्म कर्तुकार्ये कर्तूया॥

शीपापूजा॥ जें अहं हनिकं भये गुह्य शीपापूजा॥ जें अहं ४ महाम
ख्ये गिन सि शीपापूजा॥ गिन सि पूजनो॥ जें अहं ४ द्वादश
महान के शीपापूजा॥ जर्व वलि ॥ ॥ न्या ४ सुखी ॥
प्रथवा शक्या (गन) गुह्य वरूं समुद्र न ॥ ॥ ४ ॥ गुह्य व
वीज ४ तस्या ॥ ॥ ४ ॥ विकी कृत् ॥ ४ ॥ तर्वा प्रय ॥ ॥ तिन ४
नष्ट द्वाद (१) प्रव ॥ ४ ॥ द्वाद ४ स्व न ह दन ह दित र्वा प्रय त्त ॥ ॥ ना का
नाप मृग्य ४ न विद्युं तस्य आयत ॥ ॥ सर्व व्या धि वि नि र्मु क्त ॥ ॥ ४
सा का हि सो ध क ॥ ॥ ४ ॥ ति द्वाद ४ ४ न्या ४ ॥ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

श्रीपापू॥२

न्यास॥ त्रंजं ह्रीं सर्वरूपायै हृदयाय नमः श्रीपापू॥ त्रंजं ह्रीं
अमृतं तज्जामासि नीनिर्यत् फलं यिनि तमस्वाहा॥ त्रंजं ह्रीं भुव
दवदिनि अनादि वाधयै निरवायै वषट् श्रीपापू॥ त्रंजं ह्रीं व
ज्रिणवज्रधनाय स्वतन्त्रायै कवचाय ह्रीं श्रीपापू॥ त्रंजं ह्रीं ता
म्रानिर्यमत्तु फलं किं सद्गुणं त्रिंशत्तूपायै वषट् श्रीपापू॥
त्रंजं ह्रीं नमस्तुभ्यं अनन्तं किं श्रीह्रीं महापाशुपेतास्त्राय स
हस्राक्षाय ह्रीं ह्रीं अस्त्राय ह्रीं श्रीपापू॥ निरसि पूजनं॥
त्रंजं ह्रीं वज्रं मरुतं दानं कथं श्रीपापू॥ वसि॥ ॥ न्यासं रुतं॥

उर्वं षडङ्गं ध्यातव्यमग्निमादिकसिद्धिदं ॥ ॥ ॐ तिष्ठतु न्या
सः ॥ अथ मासिनी न्यासमात्रं ह्यथ ॥ ॐ क्रौं श्रीं कुं क्रौं
नंनादिनी लिखायां श्रीपापू ॥ लिखायां ॥ मधुसा वृत्तिः ॥
ॐ अथंगु सनी उर्द्ध्वलिना मासायां श्रीपापू ॥ मधुसा काना वृत्तिः ॥
ॐ अमृनि वृत्ति पूर्वलिना मासायां श्रीपापू ॥ मधुसा काना वृत्तिः ॥
ॐ अमृप्रतिष्ठादक्षिणा लिना मासायां श्रीपापू ॥ मधुसा काना ॥
ॐ अविद्या उक्ता लिना मासायां श्रीपापू ॥ मधुसा काना वृत्तिः ॥
ॐ अन्तिपश्चिम लिना मासायां श्रीपापू ॥ मधुसा काना वृत्तिः ॥

जं अचं चामुमुउड्ड साचन धी पापू॥ लता टुड्ड नखा॥ स्वग
 जं अधं प्रियदलिनी नगद्वय धी पापू॥ नय या न पूरी कनगी॥
 जं अर्गना नायगी कर्णु विवनया ४ धी पापू॥ अंगुली प्रदपन
 जं अउ माहनी दक्षिण कर्णु त्रय धी पापू॥ हस्त मध्यन ॥
 जं अउ प्रह्ला वाम कर्णु त्रय धी पापू॥ हस्त मध्यन ॥
 जं अ ०० गुड्ड गकी नाग पट्ट द्वय धी पापू॥ मूला दक्षन ॥
 जं अ व वजिगी वकु धी पापू॥ हस्त मध्यन ॥
 जं अ कंक कटा दक्षु पक्का ४ धी पापू॥ उड्डा ध्व नखाया ॥

मिरवायाभा

मिरवापीगु

रूपे द्याले
वै वि उ द्याय

ॐ अरवं का तिका उर्द्धदन्तं किं षु श्रीपापूज ॥ उर्द्धदन्तं तिर्य्य (गुखा
ॐ अगं निवा अर्द्धदन्तं किं षु श्रीपापूज ॥ अर्द्धदन्तं तिर्य्य (गुखा
ॐ अघं धान धाषाम् रवी उर्द्धां षु श्रीपापूज ॥ उर्द्धां षु तिर्य्य (गुखा ॥
ॐ अहं वीना अर्द्धन श्रीपापूज ॥ अर्द्धन तिर्य्य (गुखा ॥
ॐ अर्द्धं माया जिह्वायां श्रीपापूज ॥ जिह्वा ए विन्दुन्द या ॥
ॐ अर्द्धं वागीश्वरी वा वि श्रीपापूज ॥ जिह्वायां विन्दुन्द या ॥
ॐ अवं निखिवाहनीक (७) श्रीपापूज ॥ प्राङ्मुनेन ॥
ॐ अहं रीषणी दक्षिण वाङ्ग निखने श्रीपापूज ॥ प्राङ्मुनेन ॥

ॐ अयं वायव्यं वामवाङ्गिखत्रघीपापू॥ प्र॥ न॥ ॥
ॐ अयं सामोददिग्वाङ्गदक्षिणीपापू॥ उ॥ अ॥ नि॥ नि॥ ख॥ य॥
ॐ अयं विनायकावामवाङ्गदक्षिणीपापू॥ पूर्ववृद्धखया॥
ॐ अ० पू० शु० मा० क० न० त० स० या० ॥ अ० पा० पू० ॥ विन्दुनाममर्दन॥ ॥
ॐ अ० म० म० क० नि० द० क० ना० शु० सि० ष० घी० पा० पू० ॥ यु० ग० प० त्स्य० ॥
ॐ अ० अ० क० डि० नी० वामकनीगु० सि० ष० घी० पा० पू० ॥ यु० ग० प० त्स्य० ॥
ॐ अ० न० दी० पिनी० गू० स० द० ॥ अ० घी० पा० पू० ॥ द० द० ह० रु० वि० गू० स० द० ॥
ॐ अ० ऊ० अ० य० नी० द० क० न० त० स० घी० पा० पू० ॥ विन्दुनाममर्दन॥ ॥

ॐ अटंकपासिनी वामकनकसंघी पापू ॥ वामहस्तकपासाक्षणी ॥
ॐ अपंपावनी हृदिघी पापू ॥ हस्तमम्येन ॥
ॐ अहं अम्बिका प्राग्ध्वंघी पापू ॥ वामस्तनाधर ॥
ॐ असं सर्वस्माददृष्टा (व्यंघी) पापू ॥ हस्ततलेन ॥
ॐ अमृ० ०० च्छां किं वामपा (व्यंघी) पापू ॥ हस्ततलेन ॥
ॐ अक्कं कागली दक्षस्तंघी पापू ॥ दक्षमस्तंघा मर्जी ॥
ॐ असं पूतना वामस्तंघी पापू ॥ दक्षमस्तंघा मर्जी ॥
ॐ अओमादी पया द्वयंघी पापू ॥ चूचूकी युगपत्स्य (०१)

ॐ अर्चं स्रग्वा दनी उदने श्री पापू अ॥ गुग्गु वज्रु म (अन॥ ॥
ॐ अर्चं स्रह त्रिजी नो वा अ॥ पापू अ॥ ना तो गुग्गु वज्रु म अ॥ ॥
ॐ अर्चं मं महा कारी नितम्ब श्री पापू अ॥ नितम्ब विम्ब॥ ॥
ॐ अर्चं कूसुम मासिनी गुग्गु श्री पापू अ॥ तिग्गु मूत्त॥ ॥
ॐ अर्चं शुक्रा देवी शुक्र श्री पापू अ॥ अग्गु धा नखया॥
ॐ अर्चं तता ता उवा ४ श्री पापू अ॥ दीर्घा (अ नखया॥
ॐ अर्चं स्नान कि दक्ष ज्ञान निश्री पापू अ॥ चन्द्र विन्दु नादा कृति
ॐ अर्चं क्रिया कि वाम ज्ञान निश्री पापू अ॥ पूर्व वग्गु॥

ॐ अं गं यं शी दं कं घा यं श्री पा पू ज ॥ अ (धन रखा ॥
ॐ अं गं सा वि णी वामं कं घा यं श्री पा पू ज ॥ अ (धन रखा ॥
ॐ अं दं दं हनी दं कपा दं श्री पा पू ज ॥ प्रो ३ नन ॥
ॐ अं रुं रुं का नि णी वाम पा दं श्री पा पू ज ॥ प्रो ३ नन ॥
ॐ अं शुं दं दया यन मं ४ श्री पा पू ज ॥ ॐ अं शुं नि न मं रखा
हा णी पा श्री पू ज ॥ ॐ अं शुं नि रखा ये व वषट् श्री पा श्री पू ज ॥ ॐ अं
शुं क व चा ये दं श्री पा पू पू ज ॥ ॐ अं शुं न यं उ या ये वी षट्
श्री पा पू ज ॥ ॐ अं शुं ४ अं रुं य श्री रुं श्री पा पू ज ॥ ॥

[illegible]

नैऋतं उं अमृतं दक्षक (क्षी) पापू ॥ कर्षु विवर्त अंगुली द्विष
नैऋतं उं अर्घां वामक (क्षी) पापू ॥ पूर्ववदङ्गुली द्विष ॥ ॥
नैऋतं उं अर्घां दक्षक (क्षी) पापू ॥ मूलादङ्गुली विवर्त ॥
नैऋतं उं अर्घां वामना (क्षी) पापू ॥ पूर्ववद्विष ॥ ॥
नैऋतं उं अर्घां दक्षक (क्षी) पापू ॥ कर्षु सततं न स्य (क्षी)
नैऋतं उं अर्घां वामक (क्षी) पापू ॥ पूर्ववद्विष सततं न स्य (क्षी)
नैऋतं उं अर्घां उर्ध्वदक्षक (क्षी) पापू ॥ तिर्य (ग्र) वया ॥
नैऋतं उं अर्घां उर्ध्वदक्षक (क्षी) पापू ॥ पूर्ववद्विष ॥

ॐ अं स श्याता न ण उ ह्वा षु धी पा पू ज ॥ अ षु ति र्य (गु र्वा क न र्थ ॥
ॐ अं अं अ नू य ह ण अ ध न धी पा पू ज ॥ अ ध न ति र्य (गु र्वा क न र्थ ॥
ॐ अं अं कू न ण ता त्स्त्र नि धी पा पू ज ॥ ता त्स्त्र नि वि न्द द द ॥
ॐ अं अं ४ मे हा स न ण डि क्का र्या धी पा पू ज ॥ डि क्का र्या वि न्द ना त र वा
ॐ अं कं को ध ण द द स्क् (ध धी पा पू ज ॥ धा षु न न ॥
ॐ अं रं र्वा (लु ण द द वा दू द (लु धी पा पू ज ॥ उ ह्वा द (ध न र्थ र वा
ॐ अं गं पु च (लु ण द द म दि व (ध धी पा पू ज ॥ क क ना का न र्थ ॥
ॐ अं र्चं नि व ण द द क न त स धी पा पू ज ॥ वि न्द ना म द न म् ॥ ॥

ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ युगपदहु सयः स्य ७॥
ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ प्रोक्तु नन॥
ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ उर्द्धादध्वनैरखा॥
ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ कक्षनाकात्रय॥
ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ विन्दुनामद्विनम॥ ॥
ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ पूर्ववद्युगपेता॥
ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ हस्तसम्पन्न॥
ॐ अं चक्रद्वयदक्षकनाहु सिषुधीपापू॥ उर्द्धादध्वनैरखा॥

ॐ उँ दानूकं गदक जानो श्री पापू ॥ चन्द्रविन्दुनादतिशब्द ॥
ॐ उँ रँ अँ इनात्री श्वत्र दद ऊँ घाया श्री पापू ॥ उँ इँ द (धनक नखा) ॥
ॐ उँ यँ उँ माकाकं गदक पादासु लिषु श्री पापू ॥ युगपत्स्य (५७) ॥
ॐ उँ तँ आषाठी गवामसि चिष्टो पापू ॥ हस्तमभ्यन ॥
ॐ उँ थँ दिश्री गवामात्री श्री पापू ॥ उँ इँ द (धनक नखा) ॥
ॐ उँ दँ धम्री गवामजानो श्री पापू ॥ चन्द्रविन्दुनादतिशब्द ॥
ॐ उँ धँ मीन गवाम ऊँ घाया श्री पापू ॥ उँ इँ द (धनक नखा) ॥
ॐ उँ नँ भम गवाम पादासु लिषु श्री पापू ॥ युगपत्स्य (५७) ॥

नं० अ० पेंसाहितं ददृषा (ध्वंशी) पापू० ॥ हस्तमभ्यन ॥
नं० अ० रुं लिखी गवामपा (ध्वंशी) पापू० ॥ हस्तमभ्यन ॥
नं० अ० वं चू गल (ध्वंशी) पृष्ठव (ध्वंशी) पापू० ॥ कवेदादिनितम्बान्की ॥
नं० अ० रं द्वि न (ध्वंशी) नाही (ध्वंशी) पापू० ॥ उ० उ० कारे न ग० म० ॥
नं० अ० मं महाको स ग द्र नम (ध्वंशी) पापू० ॥ हस्ततलन ॥
नं० अ० यं वासी ग ल चि (ध्वंशी) पापू० ॥ सि० स० स्या (ध्वंशी) ॥
नं० अ० नं० उ० उ० शी ग न क (ध्वंशी) पापू० ॥ सि० स० मू० ॥
नं० अ० लं पिना की ग मां स (ध्वंशी) पापू० ॥ नितम्ब यो ॥

नैऋतं वशीलं स्याद्योऽपि पापूः॥ अंगयाऽपि खयास्य (१७)॥
नैऋतं वकानन्देन अस्ति योऽपि पापूः॥ ननु यात्र खयास्य (१७)॥
नैऋतं (१७) तानन्देन मङ्गायाऽपि पापूः॥ गुणसूत्रं॥
नैऋतं संहृष्टीणं गुकेऽपि पापूः॥ अङ्गुथाम् (१७)॥
नैऋतं हलाकूलीणं प्राक्षध्वनेऽपि पापूः॥ हन्म (१७)॥
नैऋतं दसम्यकं कोऽपि पापूः॥ चक्रधाम् (१७)॥
नैऋतं द्वादशायनमऽपि पापूः॥ नैऋतं द्वादशी निरसस्वाहण
पापूः॥ नैऋतं द्वादशी निरवायेव वदन्ती पापूः॥ नैऋतं

ॐ कवचायद्रुंशीपापू॥ जं० ॐ नगण्यायबोषटशीपापू॥
ॐ ॥ जं० ॐ ४० सुभायेरुद्रं ॐ पापू॥ ॥ जिनिसिपू॥
जं० ॐ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ नवहृदयके श्रीपापू॥ वति॥
॥ ॥ ॐ ॥ न्यासकृतं ॥ अक्षिमादिगुणसुखाय ॐ सात्सम्य
नित्यं ॥ दहते सर्वपापानि सफज्जन्माङ्गितानिगु॥ कृष्ण
तकल ॥ ददिनागदाषगुहादिरि॥ नहवद्विदवकस्यं
दनागिर्न त्रीनगम॥ ॥ ॐ तिगदनागिन्यास॥ ॥ अथ
विशान्यास॥ जं० ॐ ॐ निवतत्वाधिकानपनागिनसिशीपा

पू० ॥ नै० अ० नै० दौ० अ० धा० न० दौ० ॥ १० ॥ प० न० म० धा० न० दौ० ॥ धा० न० न० प० दौ० ॥ धा०
न० म० खी० ती० म० ती० व० ॥ अ० व० म० पि० व० ह० ह० ॥ न० न० न० न० दौ० दौ० दौ० दौ० दौ०
वि० धा० न० त्वा० धि० का० न० प० न० प० न० द० द० य० धी० पा० पू० ॥ नै० अ० नै० दौ० दौ० दौ०
दौ० दौ० अ० त्म० न० त्वा० धि० का० न० अ० प० न० न० ती० धी० पा० पू० ॥ ॥ लि० त्रि० सि०
पू० ऊ० न० ॥ नै० अ० म० ती० धी० वि० वि० धा० न० दौ० निका० धी० पा० पू० ॥ व० लि० ॥
॥ ॥ न्या० स० रु० दौ० न० ॥ उ० व० न्या० त्वा० वि० वि० धा० च० स० द्र० पा० प० प्र० मा०
व० नी० ॥ ॥ ॥ ति० वि० वि० वि० धा० न्या० स० ॥ ॥ अ० थ० धा० त्रि० का० दू० क०
न्या० स० ॥ नै० अ० दौ० दौ० न० ॥ अ० धा० न० दौ० दौ० दौ० न० धा० या० यि० लि०

सिद्धीपापूज॥ जें अ की नू ४ पन म धा नू दू को ४ पन म धा ना ये
मूखे श्रीपापूज॥ जें अ की न ४ धान नू प को को ४ धान नू पा ये दू
दये श्रीपापूज॥ जें अ की न ४ धान म रवी को ४ धान मूखा ये गुडे
श्रीपापूज॥ जें अ की नू ही म को ४ ही मा ये दक्षिण गुडे श्री
पापूज॥ जें अ की नू ही म को ४ ही म ये वाम गुडे श्रीपा
पूज॥ जें अ की नू व म ह ४ को ४ व म ये दक्षिण पाद श्रीपापूज॥ जें
अ की नू रु ट पिव ४ ह को ४ पिव ये वाम पाद श्रीपापूज॥ ॥
शिन सि पूजेनी॥ जें अ ह २ श्री मू धा त्रिका सूक र हान कधी

पापू॥वसि॥ ॥न्यासस्तुतं॥ध्मत्वाद्यानाष्टकंनिर्यपूपा
तकनोशनं॥ध्मनिसिद्धिकरीनिर्यग्रेहापस्मानध्मनिक्रिदा॥स
र्वदाष्टा४प्रणध्मनिसर्वपापप्रमाचनी॥ ॥॥॥यथात्रिकाष्ट
कन्यासः॥ ॥अथषष्टीन्यासः॥त्रं॥कालिकोतिमहाकालि
मांस॥ध्मजितराजनि॥क्रांक्रांक्रांनककृष्णमृखिदविमीमाप
ध्मकुं॥गव४शीददयदूतीददयायनम४शीपापू॥त्रं॥त्रं॥न
मातगवतिशस्त्रवाधुलिनित्रधिनमांसरुदिकेपातरवद्वान्
ध्मनिधिहन२दह२पच२मथ२मम४पूजगुप्त२मान२हं३क्रां

ॐ कं रुद्र श्री गिरा इती गिरा मस्वा हा धी पा पू अ ॥ नें अ हुं हुं
हुं श्री गिरा इती गिरा येव षट् श्री पा पू अ ॥ नें अ उ का हुं हुं
हुं सि आ सि म दि आ सर्व पू ह वि सर्व दि आ दि नि आ सि उ न रि
आ सर्व इ स र न रि आ धी क व च इ ती क व चा य इ धी पा पू अ ॥ नि
अ की की न क न के म हा न के नु क चा म् (धु च धि कं ध्व नि) अ व ग
न २ श्री न ग इ ती न ग गु या य वो षट् श्री पा पू अ ॥ नें अ हुं हुं गु
अ कृ षि कं रुद्र म म सर्व पि ड वा न स य नु म नु त रु न नु
पूर्व प्र या ग्म दि के य न क र्ता का न यि ते क र्त्त क नि षा नि क र्त्त

क्रितिविनिगानसर्वाह्न २८ द्वा कनाति कङ्कं डों डूँ डूँ रुट
थी गुञ्ज कृत्ति कं अरु इती अरुय रुट थी पापूज ॥ गिन सि पूज
न ॥ जेँ अरु ॥ थी षष्टी एटा निका थी पो पूज ॥ वसि ॥ ॥ न्या
सरु ल ॥ ॥ हदी दी नो रु ल ॥ वषष्टी गुर्भतय ना गिनी ॥
मनु सिद्धि ॥ करी दा कु सर्व पाप दय करी ॥ मोहन सर्व म
नु गि स्व ॥ नादया दिक्क न त ॥ स्वतनु सर्व दा क्षमा सर्व
पूध विमर्दिनी ॥ ॥ तिक्कृती न्या स ॥ ॥ अथ प्र ॥ नत्त का व
न्या स ॥ वक्कन ॥ जेँ अरु ॥ वीगी ॥ वय्ये ॥ नत्त गगन साक हा ग ग

हृगं मिनी गगन साक अमृत सञ्जु निधी गगनानन्द नाथ देव
गगनाम्बा देवी च पुंष्वित्तदकाटि सिद्ध च पुंष्वित्तदकाटि
यागिनी श्रीपापू ॥ १०॥ नमः ॥ नमः ॥ माया येन तत् स्वर्ग साक
गगन हृगं मिनी स्वर्ग साक अमृत सञ्जु निधी स्वर्गानन्द ना
थ देव स्वर्गम्बा देवी द्वा विंशत्तदकाटि सिद्ध द्वा विंशत्तदका
टि यागिनी श्रीपापू ॥ ११॥ कः ॥ नमः ॥ माहिनी पूनत्त पवन साक
हृगं गगन हृगं मिनी पवन साक अमृत सञ्जु निधी पवनानन्द
नाथ देव पवनाम्बा देवी षाण्णत्तदकाटि सिद्ध षाण्णत्तदका

टिया गिनी श्रीपापू॥ हृदय॥ त्रैलोक्यानायै नमः तत्र मर्त्यसाकला
गगर्गमिनी मर्त्यसाकलमृतसंक्षिप्तविभीमर्त्यनिन्दनाथदे
वमर्त्यम्बादेवी अष्टसदकाटिसिद्धिअष्टसदकाटिया गिनी
श्रीपापू॥ नाहो॥ त्रैलोक्याय नमः तत्र नागसाकला गगर्गमि
नी नागसाकलमृतसंक्षिप्तविभीमा नागनिन्दनाथदेवनागम्बा
देवी चतुर्लङ्काटिसिद्धिचतुर्लङ्काटिया गिनी श्रीपापू॥
वृक्षत्रय॥ त्रैलोक्याय नमः तत्र षड्भुवनसंक्षिप्तसाकला गगर्गमि
नी अष्टसदकाटिसिद्धिअष्टसदकाटिया गिनी श्रीपापू॥

काम्यादवीअनकसदकाटिसिद्धअनकसदकाटियागिनीधीपा
पूज॥ गिनसिपूजन॥ जेअहंसास्यानत्रपञ्चककाषरहा
नकधीपापूज॥ वसि॥ ॥ न्याससुख॥ गगना
दिसमस्तपुवनव्यापि ॥ ॥ तैरुसी॥ पातकनाशय
सर्वसुखन्यासमागुत॥ ॥ ॥ इति नत्रपञ्चकका
षन्यास॥ ॥ अथगुन्धिन्यास॥ जेअहंअनकगुन्धिपाद
या॥ धीपापूज॥ जेअहंकासगुन्धिगुल्फया॥ धीपापूज॥ जेअ
हिंनोदगुन्धिजंघया॥ धीपापूज॥ जेअहंअस्रगुन्धिउवाधि

पापू॥ जै॥ द्रुवामयन्ति कथा ४ धीपापू॥ जै॥ द्रुवामयन्ति
सिन्धु॥ यथीपापू॥ जै॥ द्रुपिषुयन्ति मरु॥ धीपापू॥ जै॥ द्रुव
मयन्ति वक्रहानसिन्धु मूसा॥ धीपापू॥ जै॥ द्रुसूर्ययन्ति नाली
धीपापू॥ जै॥ द्रुसामयन्ति पृथ्वी॥ धीपापू॥ जै॥ द्रुपायय
न्ति उदन॥ धीपापू॥ जै॥ द्रुजीवयन्ति हृदय॥ धीपापू॥ जै॥ द्रु
विष्णुयन्ति क॥ धीपापू॥ जै॥ द्रुनूदयन्ति तान्नि॥ धीपापू॥
जै॥ द्रुश्रीध्वनयन्ति गिरि॥ धीपापू॥ जै॥ द्रुसदाशिवयन्ति
मूर्ध्नि॥ धीपापू॥ गिरि॥ धीपापू॥ जै॥ द्रुसूर्ययन्ति रत्नक॥ धी

पापू॥ वसि॥ ॥ न्यासरुसं॥ उदयार्कनिराधाय दीप्यमानसूत
जसं॥ स्नानस्नानगतध्यायद्रुनिष्ठा उगदीपितं॥ अननयचिन्तया
गनममनत्वं प्रसाधय॥ वाचासिद्धिः पुनः क्षारमाह्लातीवत
नारुव॥ ॥ तिष्ठन्निन्यासः॥ ॥ अथेकादशीवारान्यासः॥ त्रिं
जंकीनामपूठयाः ४ धीपापू॥ त्रिंजंकीमुखध्रीपापू॥ त्रिंजंयन
जयायध्रीपापू॥ त्रिंजंसः ४ सर्वात्मनध्रीपापू॥ त्रिंजंनेत्रध्रीपा
४ ध्रीपापू॥ त्रिंजंशुः ४ पादयोः ४ ध्रीपापू॥ भिनसिपूजनं॥ त्रिंजं
धीप्रकादशीवारान्नानकध्रीपापू॥ वसि॥ ॥ न्यासरुसं॥

उकादनीषाढान्यासंन्यसन्निर्यकसवन॥ पञ्चपातकमादी
धुउपपातकनाशनी॥ ॐ ह्यकादनीषाढान्यासः॥ ॥ अथ
पञ्चप्रणवस्यासः॥ जे० अ० सुायरुट्ठीपापू०॥ जे० जे० अ० रु०
ह्यानिमः० धीपापू०॥ जे० जे० की० नी० त्या० स्वाहा० धीपापू०॥ जे० धी०
मध्व० मा० त्या० विषट्ठीपापू०॥ जे० जे० हु० अ० ना० मि० का० त्या० द्र० धीपापू०
॥ जे० जे० श्री० क० नि० सा० त्या० विषट्ठी० पापू०॥ जे० जे० क० न० ग० त० पृ०
त्या० रु० धीपापू०॥ ॥ जे० जे० वे० ह० द० या० य० न० म० धीपापू०॥ जे० जे०
की० नि० न० म० स्वा० हा० धीपापू०॥ जे० धी० नि० रा० ये० व० षट्ठीपापू०॥

त्रं० कुरुं कवचाय दूं धी पा पू० ॥ त्रं० कुरुं नमः प्रयाय वोषट् धी पा
पू० ॥ त्रं० अस्माय रुट् धी पा पू० ॥ शिव सि पू० जनी ॥ त्रं० धी
पि० प्र गव र ह न क धी पा पू० ॥ वसि० ॥ न्या सरु स० ॥ प्र
ध वः प० हि न्या स० प० पात क ना धनी ॥ प० ह मा धु रु रु
स० प० व ग्न रु स० स० ॥ ॐ मि प० प्र गव न्या स० ॥ ॥ अ
थ न वा त्मा न्या स० ॥ त्रं० उ० अस्माय रुट् धी पा पू० ॥ त्रं० कुरुं
अनु स्था त्या नि मः ॥ त्रं० कुरुं त कुरुनी त्या स्वा हा धी पा पू० ॥ त्रं०
० त्वं म ध्वा मा त्या वि ष ट् धी पा पू० ॥ त्रं० न० अना मि को त्या
२ धी पा पू० ॥ २

इंधीपापूअ॥ जेंअयंक निष्ठायाबोषधुधीपापूअ॥ जेंअउंकन
तलपुष्ठायारुधुधीपापूअ॥ ॥ जेंअहृदयायनमःधीपा
पूअ॥ जेंअमृगिनसस्वाहाधीपापूअ॥ जेंअस्वगिरवायेवषधु
पापूअ॥ जेंअनकवचायइंधीपापूअ॥ जेंअयनगुण्यायबोषधु
धीपापूअ॥ जेंअउंअस्वायरुधुधीपापूअ॥ ॥ जेंअहृगिरवास्वान
धीपापूअ॥ जेंअसंगिनसिंधीपापूअ॥ जेंअकंसहाटधीपापू
अ॥ जेंअमवकुंधीपापूअ॥ जेंअलहृदयाधीपापूअ॥ जेंअव
नालोधीपापूअ॥ जेंअनगुंधीपापूअ॥ जेंअयंअन्वाःधीपा

पू३॥ नै३ उं पादया४ श्रीपा पू३॥ गिन सि पू३ नी॥ नै३ उं पू३
ह्रीं श्रीनवात्मारुहानकशीपापू३॥ वसि॥ ॥ न्यास
रु३॥ नवात्मानमयं न्यासं शृणु वीरन्दुनायिक॥
यस्य दहगर्तं न्यासं नवात्मानं महाजस॥ अस्य स्म
न गमांशु दहत पापपू३॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्ता
सहस्रं ध्यत पदं॥ अचिनाखचत्री सिद्धिर्था गिनीस मतीव
ऊ३॥ दहसूनववीडानियथास्मान् विन्यास॥ ॐ तिनवा
त्मान्यास॥ ॥ अथ ध्यानाख न्यास॥ नै३ उं जांजी कुंज४ प्र

सुन २ अंगुष्ठाख्यानमः श्रीपापूज ॥ जेऊ धान २ तन तन नूतन
ऊनीयास्वाहा श्रीपापूज ॥ जेऊ चट २ प्रचट २ मध्व माखविषट्
श्रीपापूज ॥ जेऊ कह २ वेम २ अनामिकाख्याद्रु श्रीपापूज ॥ जेऊ ध
म २ घातय २ कनिष्ठाख्याविषट् श्रीपापूज ॥ जेऊ विघातय २ वि
घि २ रु ३ रुट् कन तन पृष्ठाख्यारुट् श्रीपापूज ॥ ॥ जेऊ जा
कीरु ५ प्रसून २ ददयायनमः श्रीपापूज ॥ जेऊ धान धान
तन तन नूतन गिर स स्वाहा श्रीपापूज ॥ जेऊ चट २ प्रचट २ जि
खायेवषट् श्रीपापूज ॥ जेऊ कह २ वेम २ कवचायद्रु श्रीपा

पूज॥ जै० अधम२ घातय२ न प्रयाय वीषट् श्रीपापूज॥ जै० वि
घातय२ विधि२ दू३ रुद्रमस्तुय रुद्र श्रीपापूज॥ विनसि पूज
न॥ जै० अधम२ श्रीजधाना सुहृद न क श्रीपापूज॥ वसि॥ न्यास
रुत॥ ॥ अधम२ सुन्यासं नित्यं सर्वयुधनिवा नर्ज॥ ॥
॥ अधम२ सुन्यास॥ ॥ अधम२ सुन्यास॥ ॥ अधम२ सुन्यास॥ ॥ अधम२ सुन्यास॥
वशात्मका न्यास उक्त॥ पश्चिम मण्डपे न॥ वगुर्वर्ज पद॥
सर्वविघ्ननाशक न॥ सुहृद॥ वगुर्वर्ज न्यास दह श्रीमस्तुन वि
धे स्मृत॥ य१ स१ सा को हवत्सु य१ कृना हा कृ वत्स ना ता॥ न्या

सकात्रीविष्णुगुर्नपितनननमसून॥ तनतवीयथादृष्ट॥
हृदमूर्कपूनाविष्णु॥ सर्वरुदविहीनेथान्यसन्निर्गकसवन
॥ प्रत्यहं तस्यापापानि स्रुशतानि दहन्ममी॥ ॥ विद्यानन्दपि॥
ननमेव गुर्नैवमातर्नपितनक्तथा॥ धारा न्यासविहीनश्रुधा
रान्यासयुक्तानन॥ धारा न्यासविहीनायः प्रथमं द्यदिपावति
॥ सावित्रान्मृत्युमाप्रातिननकश्रुप्रपद्यत॥ ॥ तिषाठान्यासद
त्ती॥ ॥ गिनसिपूजनी॥ जंअ हरे सरे सर्वधाराहृदयकक्षीपा
पूज॥ वसि॥ ॥ ततोवामतर्कुनीनादमूडयागृहीती गिनसिप

श्री ३

श्री ४

र्गर्भं येषामर्कं निधाय गिरि सिगुत्रपंकी न्युजयता ॥ जैं अ श्री ग
 गनानन्द देव अ विसाम्बा देवी चाद्रुस अ ह हास स्वयं श्री पापू अ ॥
 जैं अ ग र्भ मुक्ता नन्द देव रागम्बा देवी चाद्रुस अ ह हास स्वयं श्री
 पापू अ ॥ जैं अ की शानन्द देव समताम्बा देवी चाद्रुस अ ह हास
 स्वयं श्री पापू अ ॥ जैं अ श्री साकानानन्द देव चाद्रुस अ ह हास
 स्वयं श्री पापू अ ॥ जैं अ श्री आनन्दानन्द देव चाद्रुस अ ह हास
 स्वयं श्री पापू अ ॥ जैं अ श्री सहजानन्द देव चाद्रुस अ ह हास
 स्वयं श्री पापू अ ॥ जैं अ श्री टीकानन्द देव चाद्रुस अ ह हास स्वयं श्री

पापू॥ जै० श्री धनमानन्ददवचाद्रसं अहहासस्वर्यं श्री पापू॥
॥ जै० श्री देवानन्ददवचाद्रसं अहहासस्वर्यं श्री पापू॥ जै०
श्री अकजानन्ददवचाद्रसं अहहासस्वर्यं श्री पापू॥ जै० श्री
अप्रानन्ददवचाद्रसं अहहासस्वर्यं श्री पापू॥ ॥ ॥ यका
दणगुनूपेंकिपूजयित्वा ॥ जै० श्री गुनूपेंकिरहानके श्री
पापू॥ ॥ उर्ववसि ॥ ॥ जै० श्री गुनूपेंकिरहानके श्री
सं अष्टकाली विष्णु श्री पापू॥ ॥ जै० श्री गुनूपेंकिरहानके श्री
देविमसकं माहवनी विष्णु श्री पापू॥ ॥ जै० श्री गुनूपेंकिरहानके श्री

धवनदविमलसर्वेकोमानीविज्वशीपापू॥ नै० अ० धानअमाध
वनदविमलसर्वेषुवीविज्वशीपापू॥ नै० अ० धानअमाधव
नदविमलसर्वेवागहीविज्वशीपापू॥ नै० अ० धानअमाधवन
दविमलसर्वेन्द्राजीविज्वशीपापू॥ नै० अ० धानअमाधक
दविमलयचामृगुविज्वशीपापू॥ नै० अ० धानअमाधवन
दविमलसर्वमहासश्रीविज्वशीपापू॥ वशि॥ नै० संपीवका
क्षदिगक्षयावलिगृद्धस्वाहा॥ ॥ नै० अ० व० म० वास
नशीपापू॥ नै० अ० सिंहासनशीपापू॥ नै० जी० श्री० सु०

ह्रीं १ ह्रीं आनन्दग कि हे नवानन्दवीनाधिपतय ह्रीं श्रीपाप
ॐ ॥ ह्रीं नैज ह्रीं श्रीमहाविद्यानाजम्बरी ह्रीं श्रीपाप
ॐ ॥ नैज ह्रीं आनन्दग कि हे नवान नैज ह्रीं नदवीना
धिपतय ह्रीं श्रीमहाविद्यानाजम्बरी ह्रीं श्रीपाप
ॐ ॥ वति ह्रीं ॥ नैज अध्यायकांथधाय ह्रीं धानधान
तन ह्रीं सर्वतः सर्वसर्व ह्रीं ह्रीं १ ह्रीं नृद रूपद्रु १ श्री
पाप ॐ ॥ ॥ वति ॥ नैज नैज कृ कि नि ह्रीं ह्रीं सा कष निडी
कामा नृदा वि नि ह्रीं ह्रीं महाक्षारकात्रिणि नैज १ ह्रीं पाप

ॐ॥ वसि॥ जे० नमो रगवति शु० कृ० पु० का० यि० डां० डी० डू० धा० न० अ० धा०
न० अ० धा० नाम० खि० च्छा० च्छी० कि० नि० २ वि० च्छा० पा० पू० ॐ॥ वसि॥ जे० नमो
म० कृ० पु० का० यि० ह्य० ह्यी० ह्यी० ह्यी० ह्यी० नमो धा० न० अ० धा० न० अ० धा० नाम०
खि० च्छा० च्छी० कि० नि० २ वि० च्छा० पा० पू० ॐ॥ वसि॥ जे० नमो रगवति सि० इ० शु०
शु० कृ० पु० का० यि० ह्य० ह्यी० ह्यी० ह्यी० ह्यी० रव० ग० न० धा० न० अ० धा० नाम० खि० च्छा० च्छी०
कि० नि० २ वि० च्छा० पा० पू० ॐ॥ वसि॥ ॥ सर्व० धि० कान० ॥ आ० ह्य० ॥ नि०
र्वी० न० मू० र० वि० धा० ॥ ष० ण० म्ना० य० ॥ प० न० मा० द० न० ॥ म० ह० नि० वी० धि० ॥ वसि॥

ॐ चन्दनं श्रीपापू॥ क्रीवीनादुतं श्रीपापू॥ श्रीवीनरहस्य श्रीपापू
॥ ॐ श्रीवीनमाहिनी श्रीपापू॥ श्रीवीनपूर्य श्रीपापू॥ आवा
हनादिपञ्चमहामूडादर्शय॥ ॥ ॐ नमः श्रीनाथाय तित
प्यनेकत्वागिनसि विन्दुदया॥ ॥ ततः सहानमूदया॥ ॐ
किञ्चिद्विचित्रकाकं जयेत्तु अस्माय रुद्र श्रीपापू॥ गिनसि हि
तं पूष्यगृहीत्वा किञ्चित्स्वर्यहृषय॥ किञ्चित्स्वर्यहृषयदया॥
॥ श्रीपूष्यमाश्राय वसोक्षिप॥ ॥ ततः ऊर्ध्वं नवादीनमवा
नर्प्यन॥ ॐ अस्मिन् विष्णुतिक्ता नमः अस्मिन् विष्णुतिमनुसी॥

नमस्तु चक्रवर्तिस्त्वनमस्तु पवनमध्वरी॥ नमस्तु हेतवन्दवन
मस्तु हानदायकी॥ अस्तु चक्रवर्तिका नागागिनी नीति (थेवच)॥
दुष्टपालगन्धदीनी गणपदुष्टपालकी॥ कृतचक्रमिदं सर्वम
काकानन्तमायह॥ अस्तु दादीनी सगणप्रतिबाना गर्भणी ३ अस्तु
देवताशीपश्चिमस्तु हानुस्तु हानुस्तु हानुस्तु हानुस्तु हानुस्तु
मृगिषाठान्यासस्तु पूजार्थं आयुनात्रा (येष्वर्य) जनधनस
श्रीसक्तिसक्तानवृद्धार्थं यथाशक्नु कष्टहररुसपाफुर्थं स
मयचक्रन्तमष्टशीपापूज॥ त्रैजनमष्टशीनाथयति॥ ॥॥

लितर्पणविधिः॥ ॥पूजकृतपात्रार्घ्यपाणपूजनपूर्ववत्॥रु
तशुद्धिआत्मपूजा॥ ॥ततःक्रमस्यशिकाभधीभन्कोपाति
कचक्रव्यनानुगुत्पेकीःपश्चिमतःपूजयेत्॥त्रैलोक्यभक्त
धीपापूज॥त्रैलोक्यभक्तकामनधीपापूज॥त्रैलोक्यकन्द्यसनधीपापूज
त्रैलोक्यभक्तनासनधीपापूज॥त्रैलोक्यनासकसनधीपापूज॥त्रैलोक्यपद्म
सनधीपापूज॥त्रैलोक्यप्रणसनधीपापूज॥त्रैलोक्यकलनासनधीपा
पूज॥त्रैलोक्यकर्तृकासनधीपापूज॥ ॥ध्यान॥(व्यतवर्गः
द्विगुणदक्षिणः)आयमाहिक॥वामहस्तद्विपार्श्वकचकीप

त्रिधननी॥ गिरश्यापपनीधननीकृष्णगिरिनसवर्मकं॥ पद्मास
नमिर्नकददधुधनसदवर्क॥ सर्वैर्प्रतिवाच्यकृतनीमिग
गनेध्वनी॥ धनपुष्पशीपापू॥ ॥ त्रुंशीगगनानन्दनाथ
देवशीपापू॥ त्रुंशीगर्भसूकानन्दनाथदेवशीपापू॥ त्रुं
श्रीकीजानन्दनाथदेवशीपापू॥ त्रुंशीमाकात्रानन्दनाथदेवशी
पापू॥ त्रुंशीआनन्दानन्दनाथदेवशीपापू॥ त्रुंशीसहजा
नन्दनाथदेवशीपापू॥ त्रुंशीटीकानन्दनाथदेवशीपापू
॥ त्रुंशीधनसानन्दनाथदेवशीपापू॥ त्रुंशीदेवानन्दनाथदे

वशीपापू॥ श्री॥ श्री॥ जवजानन्दनाथदवशीपापू॥ जं॥
 श्री॥ प्रहानन्दनाथदवशीपापू॥ ॐ श्रीकादशपादकायुग्म
 पैकिंक्रमेनपूजयित्वा॥ जं॥ श्रीगुनपैकिंरुद्रानशीपापू
 ॥ वसि॥ (धनूमुद्रा॥ तर्पणं॥ ॥ ॐ तिगुनपैकिपूजा॥ ॥
 ततःक्रमेणयक्षाक्षधिवदवता ॥ श्रीगणेशचक्रं ध्यात्वा ॥ श्री
 वायुका (पूजय॥ जं॥ आध्वना ॥ दि॥ जं॥ शवासनशीपापू
 ॥ ध्वनै॥ जं॥ शवपद्मासनासीनास्वतवधूगिज्ञाचना॥ जि
 वक्रानका (पूजाचपीताकनस्र (अहिता॥ शुजासूकामहावीना

दद हरव प्रतर्जनी ॥ उमरुं गिगू ससू गू नी सा त्यस सनासकं
 ॥ पाण विन्दु कर्न (ध्वं पी नान्न तप योधना ॥ अषधी कुमध्वान
 व्या व्याजीतं विनडी विनी ॥ नुं अ ध्वान पृष्यं श्री पापू ॥ ॥ नुं अ
 ह्ना सर्वजन क्षाति श्री पापू ॥ नुं अ ह्नी सर्वजन माहिनी श्री
 पापू ॥ नुं अ ह्नी सर्वजन ऊमिनी श्री पापू ॥ नुं अ ह्नी
 सर्वजन सुमिनी श्री पापू ॥ नुं अ ह्नी सर्वजन आकर्षणी श्री
 पापू ॥ नुं अ ह्नी रुद्रा विनी श्री पापू ॥ नुं अ ह्नी श्री ओष
 धी कुमर ह्ना नि का श्री पापू ॥ वसि ॥ का शुभ् डूपा डा ॥ ॥

सर्वजन २

॥

निओषधीकुमपूजा॥ ॥ तपसाहनीसीधनेव॥ त्रिंअऊयादि
 नल्लय४थीपापूजा॥ तथेववति॥ ॥ तत४कुमचक्रस्यत्रि
 वस्याधिपतिमातमिनीचक्रधनेथीकळनाथपूजयअत्रिंअ
 आधनादि॥ त्रिंअवृषासनथीपापूजा॥ त्रिंअसिंहासनथीपापूजा
 ॥ ध्वनी॥ त्रिंअवृषसिंहासनन्दवहिमकुन्दन्दसन्निह॥ चक्रव
 कुत्तिनगुपुविष्वरूपमहाहारी॥ चतुर्भुजमहेश्वरत्रिष्टुत
 श्रद्धध्वनि॥ देवा४ककानूजानिम्बकृतपूजकपात्रध्व॥ दे
 वाधुचिवृकधृत्वास्वाहसुषुध्वनि॥ वामानूतसतादवी

अमासीनवयोवना॥ वराहय कनादवी गिनना दिव्यतूपिनी
॥ दिव्यतत्ताम रुषानी दिव्यवस्तुप (अहिता॥) चर्वध्वयमहा
दर्वशी कलुपत्रमध्वनी॥ त्रुंअध्वानपूर्यशीपापूअ॥ त्रुंअ ध्व
आनन्दग किहेनवानन्दवीनाधिपतयसु॥ श्रीश्रीकलु
नाथस्वग किमहितशीपापूअ॥ त्रुंअध्वान
शानाउध्वनीध्वानशीश्रीकलुनाथस्व
शीपापूअ॥ व ध्वानि॥ गिधूलयानि ध्वानि
तिश्रीकलुनाथध्वानि॥ ॥ ततः॥ मचक्रयजुदसाधि

१ बुभुक्षान १४

देवतापी० चक्रं व्यथी पूर्वतः पूजय॥ त्रैलोक्यं हंसा नष्टी पापू॥
त्रैलोक्यं सनष्टी पापू॥ त्रैलोक्यं मयूरा सनष्टी पापू॥ त्रैलोक्यं गन्धर्व
ज सनष्टी पापू॥ त्रैलोक्यं महिषा सनष्टी पापू॥ त्रैलोक्यं गजा सन
ष्टी पापू॥ त्रैलोक्यं प्रता सनष्टी पापू॥ त्रैलोक्यं सिंह सनष्टी पापू
॥ ॥ त्रैलोक्यं अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ
ष्टी पापू॥ वसि॥ त्रैलोक्यं अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ
ष्टी पापू॥ वसि॥ त्रैलोक्यं अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ
ष्टी पापू॥ वसि॥ त्रैलोक्यं अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ
ष्टी पापू॥ वसि॥ त्रैलोक्यं अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ अश्वत्थ

दविमलटैवेवूवी विञ्चणीपापू॥ नैंअ अघान अमाधवनद
विमलतवा नाही विञ्चणीपापू॥ नैंअ अघान अमाधवनद वि
मल पैं०० न्यानी विञ्चणीपापू॥ वसि॥ नैंअ अघान अमाधव
नद विमल यंचामुमु विञ्चणीपापू॥ वसि॥ नैंअ अघान
अमाधवनद विमल मं महास श्री विञ्चणीपापू॥ वसि॥
०० तिसंपूया स्वस्व मुडा दल यं॥ यथा॥ पद्म गि हूत भकि
ल रव कोले कुरु काश खप्प मुडान्द ल यं॥ त प्ये ली व॥ ००
ति मा ए कार्वेनी॥ ॥ ततः कमस्य अष्टका न धिष्ठा णी कीर्तिक

वकाधीः वनी उग्रचक्षुः दवीमग्रिका (अपूजय ॥ त्रैलोक्यमाका
नायवर्तिगृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्यमहाकालायवर्तिगृह्ण २ स्वाहा
॥ त्रैलोक्यमहाकालायवर्तिगृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्यमहाकालायवर्तिगृह्ण २ स्वाहा
विशालिनीनापी ० जाक्षयजासहजायागजागर्हजाकुसजा
मनुजासन्दाहजायकविशालिनीनाखचनीरुचनी (अ
वनीपुकाक्षनीद्यक्षनीश्वक्षनीचतु ४ पञ्चषट्पफाष्टनवाक्ष
नीर्धमिजगद्धासिनीनाय (अपपन्नान्ववर्तिगृह्ण २ ममसि
द्धिर्बुध्नुरुद्ध ३ रुद्ध ३ रुद्ध स्वाहा ॥ ॥ त्रैलोक्यमहासन्धीपाप

ॐ॥ त्रैलोक्यसिंहासनध्रीपापू॥ त्रैलोक्यमहिषासनध्रीपापू॥
त्रैलोक्यशुभासनध्रीपापू॥ त्रैलोक्यनिशुभासनध्रीपापू॥ ॥
ध्वनी॥ त्रैलोक्यउग्रचक्षुमहादेवीध्वयहगवतीशिवा॥ तफचामी
कनारासाविश्रुत्काटिसमप्रता॥ पीनेवदस्तुलाहोगमपिन
चानूहासिनी॥ किनीटिकुलुसाकाकाकयूनामलिनूपूना॥ न
त्रमासाविचित्रुलहानमासावसन्विता॥ अष्टादशरुजाका
नादिव्यवस्तुहृषिता॥ खर्पूवाधतथचर्कवजाकृष्णव
नाधनी॥ उमर्पूपापूदद्विषुविनाजत॥ रुटकन्ध

नृहस्तु गव्यं हस्तु (अ) हिरं ॥ पाणन कर्तुं नीहस्तु खद्व
नृकं पाणन कं ॥ विन्दु मूदान्ध सिद्धिं ध्याय हगवती पना ॥
सिंहसन समानूठा महिषा पादये क्रिता ॥ महिषा सूनह
नृच सर्वदेव विना जिनी ॥ (अ) ४ धा ७ ग हस्तु च खद्वान्ध
मनू विना ॥ नृच धु प्रच धु च व (धु) ग्र च धु नायिका ॥ च
धु च धु वनी च व धु नू पाति व नि का ॥ नवमी वा प्रच धु
च मध्वस्तु प्रि प्रतादिता ॥ नाच ना रा नू धा हस्तु नी रा धु
च धूमि का ॥ पीताच पा धु ना हस्तु आसी हस्तु ह नि स्थिता ॥

महिषाथप्रमान्शस्त्रीतत्त्वचग्रहमूर्धिका॥ स्त्रियावृत्त
नपेक्ष्यवान्द्रवेषुदितःकुमान्॥ प्रवर्ध्वात्तमहादेवीम
हारगेवतिनमास्तुते॥ त्रैलोक्यानपूर्यन्मम॥ ॥ त्रैलोक्यानमः
श्रींक्रौंचंशुभ्रंयेनमः॥ श्रींक्रौंचपापूज॥ त्रैलोक्यंक्रौंचाश्रयद
स्तुतयचशुभ्रनिप्रमर्दिनिहृदयं॥ सदानन्दस्त्वामीदीप्तम
स्तुत्यहन्नमः॥ स्वाहाश्रीउग्रचशुभ्रदेवीश्रीपापूज॥ त्रैलोक्या
ननन्दशक्तिरैववानन्दवीराधिपतयस्तुतिमहावि
द्यायाऊँश्वरीश्रीउग्रचशुभ्रदेवीश्रीपापूज॥ वसि॥ ॥ शु

नैऋतं मूर्ध्नां तूदच शुभश्रीपापू॥ नैऋतं हूं हूं प्रच शुभश्रीपापू॥
॥ नैऋतं उडं च शुभश्रीपापू॥ नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥
पू॥ नैऋतं उडं च शुभश्रीपापू॥ नैऋतं नैऋतं च शुभश्रीपापू॥
॥ नैऋतं उडं च शुभश्रीपापू॥ नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥
काश्रीपापू॥ वसि॥ नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥ नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥
स्वाहा॥ यानिमू॥ नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥ नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥
नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥ नैऋतं मूर्ध्नां च शुभश्रीपापू॥
साधिवदवगावागीश्वरीचक्रश्वरीवागीश्वरीनिमृत्तिका॥

पूजयथात्रैव आध्वन्य कदादि । त्रैव पद्मासनशीपापूजा ॥
ध्वनी ॥ त्रैव पद्मासनहिता देवी उपादाति मन्त्राणि नी ॥ ३
कवकुाणि नगवयो वनोन्नतत्रुपि नी ॥ अक्षपूषकना देवी
वनाहयविधमिनी ॥ वागीश्वरी कूटकुक्षुध्वयद्वामीश्वरी
ति च ॥ त्रैव ध्वनपूष्यशीपापूजा ॥ ॥ त्रैव त्रिकिटिपिंकिटि
कूटकुक्षुवागीश्वरी वृद्धमहना त्रिकाविच्चशीपापूजा ॥ वसि ॥
षड् (मनपूजा ॥ त्रैव त्रिकिटि हृदयाय नमः ॥ त्रैव पिंकिटि
गिनसंस्वाहा ॥ त्रैव कूटकुक्षुगिराये वषट् ॥ त्रैव वागीश्वरी

कवचाय हुं॥ जैं॥ वृद्धमहना त्रिकानगुयाय वोषट्॥ जैं॥
विष्णुस्त्राय रुद्र॥ वसि॥ यानि मूद्रा॥ तर्पणी॥ ॐ तिवागीं ध्व
त्री पूजा॥ ॥ ॐ तिचक्राधिदेवता षड्पूजायित्वा॥ ततश्च
मचक्रपूजा मानरु॥ ॥ चक्रादानीं॥ शुभं वाक्षुषं च शुभं शुभं
तपत्रियुतं नागपद्मावृकां॥ द्वावाक्षुषां च शुभं च शुभं च
युगलं तद्वृकां शुभं वा॥ द्वात्रापद्मावृकां॥ पिण्डवनविपिनं
संवृतां च शुभं युक्तं॥ काव॥ न्वहति मासा सकलपत्रिवृत्तं ध्वय
तमध्वकुक्षी॥ ॥ जैं॥ द्रुमस्त्राय रुद्रित्यादिकन षड्भुज्या

संकृत्वा ॥ ॥ पूजनी ॥ त्रैलोक्य आध्वन्य कृष्णसनध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य
नन्तासनध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य कन्द्यसनध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य अक्षर
सनध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य नालासनध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य पद्मासन
ध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य प्रणसनध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य कंठनासनध्री पा
पूज ॥ त्रैलोक्य कर्त्तिकासनध्री पापूज ॥ ॥ त्रैलोक्य त्रैवन्द्यमधुसूतध्री
पापूज ॥ त्रैलोक्य त्रैवन्द्यमधुसूताधिपतयब्रह्मप्रणसनध्री पापूज
॥ वायव्य ॥ त्रैलोक्य को सूर्यमधुसूतध्री पापूज ॥ त्रैलोक्य को सूर्यमधु
साधिपतयविष्णुप्रणसनध्री पापूज ॥ नैऋत्य ॥ त्रैलोक्य श्री अग्नि





ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

मधुसूत श्रीपापू॥ जे० श्री अग्नि मधुसूत धिपतय नृद प्रतासन
श्रीपापू॥ आ० प्रया॥ जे० श्री न किमधुसूत श्रीपापू॥ जे० श्री
न किमधुसूत धिपतय श्रीपापू॥ श्री
न॥ जे० श्री ४ धाममधुसूत श्रीपापू॥ जे० श्री ४ धाममधु
सूत धिपतय सदा जिव महा प्रतासन श्रीपापू॥ म० ॥
जे० प० प्रतासन श्रीपापू॥ जे० नमः ४ श्रीगुरुवीर या नि
नीत्य ४ श्रीपापू॥ ॥ शिको नम० ॥ जे० स्मृ० यवदीप
वारुणी देवी महा देव दुःखपात ॥ श्री कृतय ॥ (ग श्री ३)

ठियानमहामूद्रापी० श्रीठाठियाम्बादेवीश्रीठाठीभनन्द
नाथदेवश्रीनकांम्बादेवीश्रीआधारीभनन्दनाथदेवश्री
कूकानिमहन्नात्रिवृक्षश्रीकदम्बवृक्षश्रीउदयगिरिप
र्वतश्रीवद्रुकनाथक्षुपासपिशुश्रीकुक्षिकानन्दनाथदेव
श्रीपापू॥ नैमय॥ त्रंअमूचन्द्रदीपहीमनाबादेवीश्री
सुगन्धिदक्षपास(धुं)श्रीगुहूतायू(ग)श्रीआसन्धनमहाम
मुसपी० श्रीआसांम्बादेवीश्रीआसीभनन्दनाथदेवश्रीक
नासांम्बादेवीश्रीकूनमीभनन्दनाथदेवश्रीकूकानिमहन्ना

नाथ २

निवृद्धश्रीक्षीनवृद्धश्रीहिमनिनिपर्वतश्रीयमदशुद्धशुपा
सपदश्रीकृष्णिकानन्ददेवश्रीपापूज॥वायव्या॥त्र्यंशमृजंन
क्षीपकनिर्वाहद्वीश्री(ग)पालदशुपासत्रीश्रीद्वापनसू(ग)
श्रीपूर्वनिनिमहामनुपी(०)श्रीपूर्वमोदवीश्रीपूर्व(ग)न
न्दनाथदेवश्रीचक्षुःकाश्चादवीश्रीचकीणनन्दनाथदेवश्री
कृष्णानिमहाना निवृद्धश्रीचिच्छिनीवृद्धश्रीअनलनिनिप
र्वतश्रीविमलदशुपालरूपश्रीकृष्णिकानन्दनाथदेवश्रीपा
पूज॥पूर्वका(ग)॥त्र्यंशमृजंनक्षीपधर्माद्वीश्रीमहाकाल

दशपात श्री श्री कसियु (ग) श्री कामरूप तदगुपी (०) श्री का
 म विजया म्वा देवी श्री कोमी लभन नन्दनाथ देव श्री महाकुष्मा
 म्वा देवी श्री मद श्री लभन नन्दनाथ देव श्री कुका निमह नात्रि
 वृक्ष श्री विल्व वृक्ष श्री साम गिनि पर्वत श्री वज्र दधु देव गुन
 पातीत श्री कुक्षिकान नन्दनाथ देव श्री पादुका पूजया मित्र
 मः ॥ ॥ पश्चिमासतः ॥ ॥ श्री महात्रये दीपधर्मा म्वा
 देवी श्री महाकाय दशपात श्री श्री अवतानयु (ग) श्री पना
 पनचन्द्रपी (०) श्री चन्द्रि म्वा देवी श्री चन्द्री लभन नन्दनाथ दे

वशीमतस्मिन्मन्त्रादवीशीमतस्मिन्मन्त्रानन्दनाथदवशीकृका
निमहन्तात्रिवृक्षशीपात्रिकातृक्षशीज्जमृतवल्लीमन्त्रपर्वत
शीविजयनाथक्षणापात्रमन्त्रव्यापीसूक्ष्मक्षणीतशीकृ
क्षिकानन्दनाथदवशीपापूजा॥०॥तिथिका॥०॥पञ्चक
प्रथमावनरी॥१॥॥ततः॥षष्ठागस्त्यपूर्वका॥०॥विशुद्धचक्र
पी०चतुर्ध्वपूजय॥मन्त्र॥त्रैलोक्यशीज्जवतानपी॥०॥शीकृक्षि
काशीपापूजा॥नेम्य॥त्रैलोक्यशीलितपी॥०॥वर्षनाशीपापूजा॥
वायो॥त्रैलोक्यशीमहन्त्रपी॥०॥शीमहन्त्रात्रिकाशीपापूजा॥पूर्व

॥ जैं अं श्री केला शुपी १० श्री कमला श्री पापू अं ॥ छति पी ० चतुष्टु ॥
॥ ॥ वक्रा जस्य ने अयका ॥ ज अनाहत चक्रं विमल पञ्च कं पृ
ऊयं ॥ पूर्वं ॥ जैं अं श्री आदिविमल मन्त्रं ॥ श्री पापू अं ॥ दक्षि
॥ ॥ जैं अं श्री सर्वरूप विमल पूतिन्दा श्री पापू अं ॥ उक्तं ॥ जैं अं
श्री याग विमल सवरा श्री पापू अं ॥ पश्चिम ॥ जैं अं श्री सिद्धि वि
मल चम्यका श्री पापू अं ॥ म ॥ ॥ जैं अं श्री समय विमल कृष्णि
का श्री पापू अं ॥ छति विमल पंचकं ॥ ॥ वक्रा जस्य नि अं ति
का ॥ ज मक्षि पून चक्रं ग कि न्या दि वक्रं पू ऊयं ॥ पूर्वं ॥ जैं अं

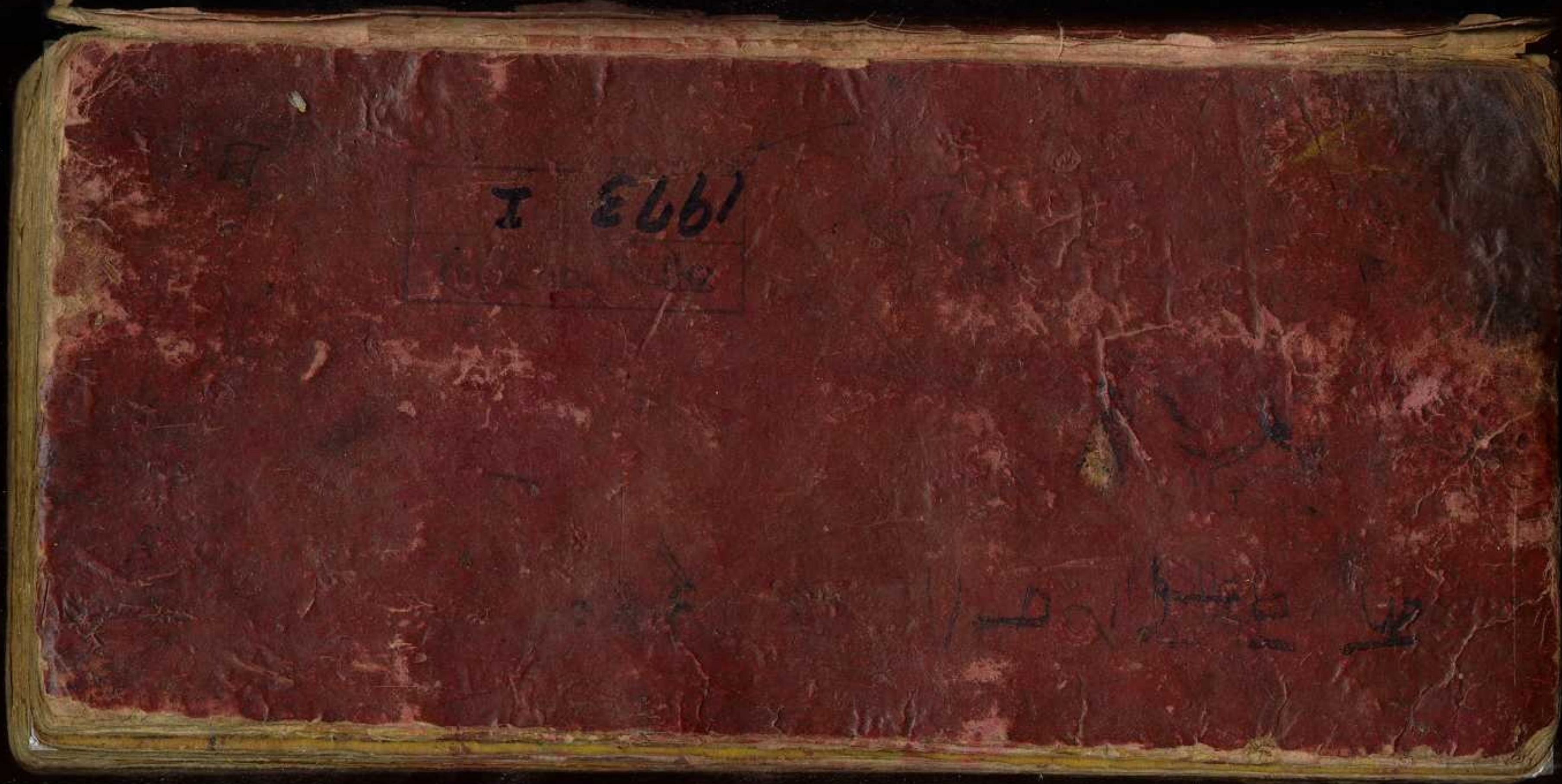
हौं ह्रीं महानात्रिकायै हौं ह्रीं कलाधामांसी ह्रीं ह्रीं विष्णुसहायिनी
प्रकृतिपुत्री खड्गी ललनन्दनाथदेवशी पापहारी ॥ नमः ॥ त्रैलोक्य
धात्री अधोऽनधोऽनामः शिवदूतपायै ह्रीं ह्रीं ॥ मन्त्राधिकां का
क्रीं क्रीं ज्ञानाहरेकाकिनी गुणपुत्री विष्णुनन्दनाथदेवशी पाप
हारी ॥ वायो ॥ त्रैलोक्यद्रव्यवर्धनशिखदूतवर्धनी धामांसी
ह्रीं ॥ मणिपूरसाकिनी महापुत्री भिल्लानन्दनाथ
देवशी ॥ पापहारी ॥ त्रैलोक्यद्रव्यवर्धनी कायिकुलदीपायै
ह्रीं ह्रीं पद्मा ॥ धामांसी ह्रीं ह्रीं स्वाधि ॥ ललननाकिनी धीः पूनी

2

1000
52

1973 I

1973 I



द्व१

द्व

[illegible]

नाथ
कार्येकृष्टिकानन्दनाथदेवशीपापू॥पूर्वा॥त्रै॥मिगयेमि
गानन्दनाथदेवशीपापू॥दक्षि॥त्रै॥चय्ययेचय्यनि
न्दनाथदेवशीपापू॥उत्तर॥त्रै॥सक्यसक्यानन्दनाथ
देवशीपापू॥पश्चिम॥त्रै॥आगयेआगानन्दनाथदेवशीपा
पू॥॥सक्यसक्यकोलआधनचकुअकसादिपशुक
पूजयेगाम॥त्रै॥अकसारयेआनन्ददेवशीपापू॥पू
र्वा॥त्रै॥कुसारयेअनाशानन्दनाथदेवशीपापू॥दक्षि॥त्रै॥
त्रै॥गीवोयेअर्चिगानन्दनाथदेवशीपापू॥उत्तर॥त्रै॥मि

गार्ग्येष्वगानानन्दनाथदेवशीपापूज॥ पश्चिम॥ जैजका क
नार्ग्येशानन्दनाथदेवशीपापूज॥ ॐ गुरुसादिपञ्चकं॥
॥ ॥ षष्ठागस्य पश्चिमका (६) आशावक्रगुरुचतुर्ध्वपूजयं
॥ दक्षिण॥ जैज ॐ गार्ग्येष्वगानन्दनाथदेवशीपापूज॥
पश्चिम॥ जैज गानार्ग्यमध्वकस्मानन्दनाथदेवशीपापूज॥
उक्तं॥ जैज क्रियार्ग्यवासकस्मानन्दनाथदेवशीपापूज॥
मध्व॥ जैज कृत्तिकायै उशीरानन्दनाथदेवशीपापूज॥
ॐ गुरुचतुर्ध्व॥ ॥ विपुर्ध्वपूर्वका (७) गुरुनेष्टग्यानुजना

हर्त॥ मणिपूरुवायद्यस्वाधिविष्ठाननुष्ठीष्टक॥ आध्वनम
ग्रीका॥ (गु) आह्लापष्टिमउच्यते॥ ॥ चतुष्कपञ्चकषट्कचतु
ष्कपञ्चकचतु॥ अस्याविंशतिकम् (अव) पूजयन्ति नभास्तुगा॥
पूर्वपी० ॥ चतुष्कनिश्चिन्नरुवनवेमर्तपञ्चकस्तु॥ वायव्य
कोणसंस्थाउत्तरकसहस्रशो गचातुष्कष्टी॥ (६॥) अकोलाद्या
श्चपञ्चदहनदिशि गतं पश्चिमश्रीगुरुश्रुसाक्ष्यविंशतिकं द
नमस्तुतिस्तर्तरेन वंशीकडंभी॥ ॥ त्रैलोक्यहरे सरेष्टी अष्ट
विंशतिकम् श्रीपापू॥ म॥ (अ) आवाहनस्तुपनसन्निध्वनस

त्रिनाधनसम्मुखीकरनसकलीकरनश्रुवगुणननिनीद
 र्गसा(स)पाङ्गव्यापकतत्त्वन्यासत्रकामुद्रादर्शनरूपकध्वनश्रु
 मृतीकरनपत्रमीकरनपाशाद्याचिमनात्यरसहकृतेनिर्मिच्छ
 नस्तानवितुपनवस्तुतक्षत्रचन्दनसिन्दूरत्रकचन्दनाद्वगपू
 ष्यादिरत्नवर्ण॥तर्पण॥पूजनवाचमनी॥पञ्चमहामुद्रान्दर्शनयथा॥
 ष्णतिश्रुष्टाविंशतिहृदयक्रमपूजा॥ ॥ततः४षष्ठाध्यायार्धपूर्वादिप
 ष्ठिमारुमासिन्यादिषड्विंशतिका(८)षड्विंशपूजायथात्रैवमासि
 नीशीपापूजा॥त्रैवमक्षिन्द्रिकाशीपापूजा॥त्रैववत्सारवाशीपापूजा

ॐ अमहारव्याघ्रीपापूज॥ ॐ अगुह्यारव्याघ्रीपापूज॥ ॐ अशुक्ला वि
क्लाघ्रीपापूज॥ ॥ ततः ४ पश्चिमादिपूर्वार्कं (गभवनादिषट्कदक्षिण
तः ४ प्रतिका (लघुद्वंद्वपूजयथा ॥ ॐ अ (गभवनाघ्रीपापूज॥ ॐ अखच
नाघ्रीपापूज॥ ॐ अरुचनाघ्रीपापूज॥ ॐ अनिरुजाघ्रीपापूज॥ ॐ अ
धुजाघ्रीपापूज॥ ॐ अशुक्ला स्नानगलमुख्याघ्रीपापूज॥ ॐ अशुक्ल
नषट्कदक्षिणषट्कमासिन्वाद्याद्यादष्टाष्टकयः पूज॥ ॥ ततः ४
षट्काग्न (प्रभुस्वाग्नादिप्रादक्षि (न्यनमनायुग्मदद्याद्यदष्टासि
द्वयः १ प्रतिका (लघुत्रयस्तुयः पूजयथा ॥ ॐ अमनायुग्मघ्रीपापू

ॐ॥ जै० अर्द्धचन्द्रिणी श्रीपापू॥ जै० विद्युन्मासिनी श्रीपापू॥
॥ जै० पिङ्गसा श्रीपापू॥ जै० धाविनी श्रीपापू॥ जै० सुकना श्री
पापू॥ जै० निर्महा श्रीपापू॥ जै० निर्विकाना श्रीपापू॥ जै०
निनालम्बा श्रीपापू॥ जै० निनरुना श्रीपापू॥ जै० सोम्या श्रीपा
पू॥ जै० महावला श्रीपापू॥ जै० बाध श्रीपापू॥ जै० बाधव
नी श्रीपापू॥ जै० सीला श्रीपापू॥ जै० सासा श्रीपापू॥ जै० हे
सा श्रीपापू॥ जै० निनामया श्रीपापू॥ ॐ यथादण्डसिद्धयः
पूजा॥ ॐ तिस्रका (अद्वितीयावनर्ज) ॥ २॥ ॥ तगसिद्धयः पूजा

[illegible]

गिनसुस्वाहा श्रीपापू॥ नेम॥ जे॥ जों जों दूँ वव्वन गिखे दूँ
 गिखे येववद श्रीपापू॥ वायेय॥ जे॥ धात्रे अ धात्रे अ धात्रे
 मुखिवदू नू पाये दूँ श्री के वचाय दूँ श्रीपापू॥ मे॥ जे॥ जों
 ह्रीं महना त्रिकाये जों श्री नरुण याय वो वदू श्रीपापू॥ च शुद्ध
 दू॥ जे॥ किमि२ विवका क मये दू॥ अस्त्रये रु दू श्रीपापू॥
 नता दू दल स्वाय दि प्राद दि स्थन॥ जे॥ अँ अँ १६ सुवर्ग ससा
 ट प्रयागे अँ काँ ये वक्रा स्थे सर्व मङ्ग साये वन्धये न दू क
 दिकाये अँ दहे नव श्रीपापू॥ जे॥ कँ कँ कवर्ग मुख वाना

ॐ नमो भगवते
 वासुदेवाय

स्त्रीं लोलाय माहः चर्य्य चर्य्य कार्ये (॥) विनये आग्रये कृष्टि कार्ये
ॐ दहे नव धी पापू ॥ जे ॥ वं ॥ चव ग्न के ॥ का ला पू न ड ह
ये को मा यं या गयं के व क्ष या भो कृष्टि कार्ये उ द हे नव धी पापू
॥ जे ॥ वं ॥ चव ग्न ददि अ ह हा स म्पु साये वे वू धी ह न सि ह्य
ख नि न्ये ने अणी कृष्टि कार्ये अ द हे नव धी पापू ॥ जे ॥ वं ॥
न व ग्न ना हो ज ये क्यं ॥ वा ये वा ना के र ह्य नि कार्ये क लु न्ये
वान् (॥) कृष्टि कार्ये उ द हे नव धी पापू ॥ जे ॥ पं ॥ प व ग्न ग
क च नि गं न गयं ॐ न्द्रा (॥) कि सि कि ला ये न ऊ कि न्ये वा य व

कृष्णिकाये उदरं नवध्यापापू॥ त्रैलोक्यं ४ युवर्जं जान्या उका
प्रकटीवाये चामुधुये कालनाथे द्विपिनि कारये को वर्यं कृष्णिका
ये उदरं नवध्यापापू॥ त्रैलोक्यं ४ युवर्जं पादया ४ दूवीकाट
अ० साये महासस्त्रे तीव्र (लघु) मित्रे कावृक्के ष्ठीं नये कृष्णि
कारये अ० दरं नवध्यापापू॥ अ० कूटद्वयं॥ आचमनी॥ पञ्च
महामुद्रां दर्शय॥ ४४॥ यत्सूदतं चतुर्थं विनर्जं॥ ४॥ ॥ तता
सृष्टं (रु) पूर्वादि प्रादक्षिण्येन मध्मार्कं नवनाथं निदधौ घात
पूजय॥ त्रैलोक्यं गगनानन्दनाथं देवध्यापापू॥ त्रैलोक्यं कूटमदान

१ अ० कूटद्वयं॥ आचमनी॥ पञ्च महामुद्रां दर्शय॥ १

ॐ अङ्गकूटद्वयं ॥ आचमनं ॥ पञ्च महा मूर्त्ति दर्शय ॥ ॐ
नन्दनाथदेवशीपापूज ॥ त्रिंश पञ्चानन्दनाथदेवशीपापूज ॥ त्रिंश
रत्नवानन्दनाथदेवशीपापूज ॥ त्रिंश देवानन्दनाथदेवशीपा
पूज ॥ त्रिंश कमलानन्दनाथदेवशीपापूज ॥ त्रिंश शिवानन्दना
थदेवशीपापूज ॥ त्रिंश नामानन्दनाथदेवशीपापूज ॥ त्रिंश कृष्ण
नन्दनाथदेवशीपापूज ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पञ्च मावने ॥ ॐ ॥
ततः ४ वा ॐ दत्तस्वाग्भद्रादिप्रादक्षिण्येन वा ॐ सिद्धान्तसिद्धौ
वा ॐ पूजय ॥ त्रिंश सूर्यानिन्दनाथदेवशीपापूज ॥ त्रिंश तौवान
न्दनाथदेवशीपापूज ॥ त्रिंश खचमानन्दनाथदेवशीपापूज ॥

त्रैलोक्यगर्भमुक्ता नन्दनाथ श्रीपापू॥ त्रैलोक्यसिंहानन्दनाथदेवश्री
पापू॥ त्रैलोक्यजयानन्दनाथदेवश्रीपापू॥ त्रैलोक्यविजयानन्द
नाथदेवश्रीपापू॥ त्रैलोक्यमिथानन्दनाथदेवश्रीपापू॥ त्रैलोक्यह
दानन्दनाथदेवश्रीपापू॥ त्रैलोक्यविमलानन्दनाथदेवश्रीपापू॥
॥ त्रैलोक्यखगानन्दनाथदेवश्रीपापू॥ त्रैलोक्यमृदानन्दनाथदेव
श्रीपापू॥ त्रैलोक्यनत्नानन्दनाथदेवश्रीपापू॥ त्रैलोक्यकेशवान
न्दनाथदेवश्रीपापू॥ त्रैलोक्यअमृतानन्दनाथदेवश्रीपापू॥
त्रैलोक्यसौगानन्दनाथदेवश्रीपापू॥ अणूकूटद्वय॥ आवेम

ने॥ पश्चमहामूडान्दर्शय॥ ७७ तिथाउगदसससावनअपूज
ने॥ ३॥ ॥ तदाकिसुधाउगदसपूर्वचतुर्दशपीतपूषेनरुना
दक्षिणार्कपूजय॥ ३॥ अकृताम्बायैप्रणामनन्दनाथदेवश्री
पापूज॥ ३॥ कृताम्बायैमिणनन्दनाथदेवश्रीपापूज॥ ३॥
कर्णिकाम्बायैमथानन्दनाथदेवश्रीपापूज॥ ३॥ कृतवीर्याम्बा
यैवीर्यानिन्दनाथदेवश्रीपापूज॥ ॥ तदादक्षिणचतुर्दश
पूर्वपूषेऽपूर्वादिपश्चिमान्कर्णपूजय॥ ३॥ कृतारव्याम्बायैउग्र
नन्दनाथदेवश्रीपापूज॥ ३॥ सिद्धाम्बायैसिद्धानन्दनाथदेव

श्रीपापू॥ त्रुंअसस्माम्बायेविमलानन्दनाथदवशीपापू॥
त्रुंअकृत्सुन्दर्याम्बायेसाकानन्दनाथदवशीपापू॥ ॥ त
तउरुत्रुचगुदसन्नकपुष्पे४पश्रिमादिपूर्वाक्तपूजये॥ त्रुंअन
काम्बायेउरुमानेन्दनाथदवशीपापू॥ त्रुंअसासमाम्बायेउ
रुवानन्दनाथदवशीपापू॥ त्रुंअविकसाम्बायेअरुयानन्द
नाथदवशीपापू॥ त्रुंअकृत्साननाम्बायेअकृत्सानन्दनाथ
दवशीपापू॥ ॥ तत४पश्रिमेचगुदस॥ ४५तपुष्पेदक्षि
दूरुनार्क्तपूजये॥ त्रुंअवंगमम्बायेसूक्ष्मानन्दनाथदवशीपापू

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नामवाये सयानन्दनाथदवशीपापू॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यानन्दनाथदवशीपापू॥ मृगकूटद्वय ॥ आचमन ॥ पञ्चम
हामृदानन्दार्थि ॥ गुरुविरहिः षाण्मास सफमावनर्ग ॥ १॥ ॥
नतः पञ्चवृक्षपूजा ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
चतुष्पाद ॥ श्रीगो ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पूज॥ वायव्या॥ त्रैलोक्ये श्री कृष्णपूजवदकनाथश्रीपापूज॥ ॐ
(१॥ त्रैलोक्ये सर्वथा गिन्याः श्रीपापूज॥ ॐ श्याधनचक्रं इह मा
वनय॥ ८॥ ॥ ततो हानद (१) साकपासावर्चन॥ त्रैलोक्ये ॐ नु
श्रीपापूज॥ त्रैलोक्ये नृंश्रिष्टीपापूज॥ त्रैलोक्ये मूयमश्रीपापूज॥ त्रै
लोक्ये नृनिमृतिश्रीपापूज॥ त्रैलोक्ये वृवत्रयश्रीपापूज॥ त्रैलोक्ये यैवाय
श्रीपापूज॥ त्रैलोक्ये स्रुक्वेनश्रीपापूज॥ त्रैलोक्ये ह्रूणीगानश्रीपापूज
॥ त्रैलोक्ये अंजनकश्रीपापूज॥ त्रैलोक्ये उवक्राश्रीपापूज॥ ॐ निहा
नद (१) नवेमावनय॥ ॥ वक्राहहि॥ त्रैलोक्ये त्रैलोक्याश्री

पापू॥ जे० कौ० अमृ० धि० श्री पापू॥ जे० श्री० कव० च० श्री पापू॥
॥ जे० श्री० नन्द० ना० द्या० ने० श्री पापू॥ जे० श्री० कौ० ४० श्री पापू॥ ॥ जे०
नौ० वि० पु० न्द्र० म० ॥ जे० श्री० व० वा० स० न० श्री पापू॥ जे० श्री० वृ० षा० स० न० श्री
पापू॥ जे० श्री० सि० हा० स० न० श्री पापू॥ जे० श्री० व० द्धि० प्र० ता० स० न० श्री पा
पू॥ जे० श्री० स्वा० हा० स० न० श्री पापू॥ ॥ तत० ४० कृ० म० मू० द० या० पु० षा० गृ०
ही० त्वा० ध्वा० न० ॥ जे० श्री० नी० ल० प० क्ष० न० ना० नृ० य० न० द्ध० प० य० क० स० सि० त० ॥
दि० न० वृ० व० द० नी० या० न० त० स० प्या० सि० च० वि० त० ॥ व० द्धि० ना० हि० सि०
गा० म्हा० ऊ० क० ना० मु० ष० नि० रे० न० व० ॥ क० द्या० न० सा० ट० द्या० घ्रा० णु० का० क्षी० क० टि०





सुहास्यवान्॥ विश्वकर्मापानश्च दक्षवाहुरि॥ पात्रिजा
 तश्चैषामासां प्रसूकालेयककन॥ अन्यद्वाहुर्याश्च कर्मावृ
 तविग्रह॥ देवावृत्तश्चैनसदवर्माहितावनव॥ निजनीला
 नसमप्रख्याकृष्टिपामहादना॥ षष्ठकुहाददशकुजासप्याहि
 नत्रचर्चिता॥ मृगुमासाधनीनोडीद्व्यकनासिकानना॥ अष्टाद
 शम्यकादवीवर्वाद्वाजिनाह॥ व्याघ्रचर्मपनीध्वनासिंहच
 र्माकृतीयका॥ दिव्याहननगहवाही अष्टहस्यहासिनी॥ तस्या
 ४पीतजलवकुमूर्त्तस्यामसन्निह॥ दक्षिणवकुश्चयस्य

खपदार्जिती॥ पूर्ववर्कं रुवडकमीगभनं सुटिकापम॥ सहस्र
सूर्यासकागमूर्ध्ववकुम्पनाञ्जिता॥ सर्वदक्षकनासानिवकुम्प
कोनिगमुना॥ अस्तुग्यस्याः प्रवक्तामिकुटिकायामहानिच॥
दक्षिणवप्रयागनवामचवविजानथा॥ विष्णुस्तुक्वजाति
वाक्कुर्गगनकर्कक॥ दक्षिणवामगादद्यान्नीलात्यलसनाल
क॥ अन्यत्समृगुखद्वामं द्युत्तमपृष्ठधनुस्तथा॥ कपोलवामक
प्राकं सिंहसनगवासना॥ प्रवक्तायननिर्गंकुटिकापनम
ध्वनी॥ इति ध्यात्वा पूर्ववन्मूर्धन्यस्याः त्र्यं ध्यानपूर्वाधीपापू

ॐ॥ ॥ आवाहनादि॥ त्रैलोक्यगवन्तोष्ठी अथ विंशतिक्रमसि
वगकिं हृदयको ॐ हागच्छत २०० हतिष्ठत २०० हसन्निहिता
एवत २०० हसन्निद्रा एवत २०० हसन्मूर्खा एवत २ ममपूजा
गृहाण स्वाहा॥ ॥ त्रैलोक्यनमो गवति हृत्कमलायै कांशी हृद
याय नमः १०० पापू॥ ॐ यादिषु (इ नमस्तु कृत्वा॥ ॥ क
वचनावगुण्य॥ ननु नमो त्रीशु॥ धनु मूद्रया मूर्ता कृत्वा॥ पत्रमी
करण मूद्रया पत्रमी कृत्वा॥ अस्तु नमो त्रैलोक्य॥ ॥ उपचारान्द
या॥ त्रैलोक्य हरे हरे प्रतप्तोद्यं श्री अथ विंशतिक्रमसि वगकिं

२ पञ्चमहासूत्रान्यथि

र्यानिमः॥ जवो॥ जषाघ्यं० स्वाहा॥ ॐ दमाचमनीयं० स्वधा॥ ॐ
दस्तानीयं० नमः॥ जषागन्ध० नमः॥ ॐ दंसिद्धनं० नमः॥ ॐ द
मनुसपनं० नमः॥ जगदकाचन्दनं० नमः॥ ॐ दमदतं० नमः
॥ जगानिपूष्याग्निं० वोषट्॥ ॥ धूपदीपनेवर्गपूर्ववद्वा॥ ग
र्प्यं॥ जं॥ अस्मिन् स्वाहाधी अष्टविंशतिकमग्निवर्गकिंत
पर्यामिनदि ३ मः॥ ३॥ पुनराचमनं॥ जं॥ हर सर ॐ
दपुनराचमनीयं॥ अष्टविंशतिकमग्निवर्गकि
थावे॥ ॥ यूपचानपूजा॥ ॥ अति॥ जं॥

ॐ आनन्दं किं हेनवानन्दवीनाधिपतयस्तुं श्रीजम्बूवि
मतिक्रममिव किं ह्यनकशीपापूज॥ ॐ श्रीजम्बूवि
महाविद्यानाञ्जयनी श्रीजम्बूवि
ममिव किं ह्यनकशीपापूज॥ ॐ श्रीजम्बूवि
ॐ आनन्दं किं हेनवानन्दवीनाधिपतयस्तुं श्रीजम्बूवि
विद्यानाञ्जयनी श्रीजम्बूवि
ह्यनकशीपापूज॥ ॥ वसि॥ ॐ हरे आ
किं हेनवानन्दवीनाधिपतयस्तुं श्रीमहाविद्याना

वश

ऊँ वी श्री अक्ष विंशति कुमलिकिर हान को वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥
विभूतयानि मुद्रान्दलीय ॥ ॥ नैऋत अक्षान्द्रां ध्यानं क्रोधा न धा
नत नैऋत सर्वतः सर्वसर्वदेदीमः ॥ नैऋत नृपद्रुषी पापू ॥ व
सि ॥ नैऋत नैऋत कुक्षिनि धुने सा क्क कर्षणि दी कामा रुद्रा वि
दि श्री स्त्री महा दारका ॥ त्रिजिह्वं सोमं १ धी पापू ॥ वसि ॥ नैऋ
त नमो गवति धुने कुक्षि कायि द्रां दीं ध्यानं अक्षान्द्रां अक्षान्द्रां
मुखि च्छां च्छां कि ॥ निश्चि विवेध्या पापू ॥ वसि ॥ नैऋत नमः कु
क्षि काये स्त्री स्त्री स्त्री ॥ नमः नमः ध्यानं अक्षान्द्रां अक्षान्द्रां मुखि च्छां

श्री किंकिरी विचित्रा पापू ॥ वसि ॥ ॐ नमो भगवते सिद्धिदायि ॥ श्री क
 र्त्तिके स्तुति ॥ स्तुति ॥ खण्डे ध्यान अध्यात्म विद्या श्री कि
 विचित्रा पापू ॥ वसि ॥ ॥ ॐ नमो भगवते हृत्कमलायै जा
 धी हृदयाय नमः ॥ धी पापू ॥ ॐ यादिषण्ण नमो पूज्य ॥ ॐ न
 मः ॥ श्री ॥ धी पापू ॥ ॥ पुनर्मन्त्र ध्या पूजनी ॥ ॐ नमो
 भगवते धिक्काय नमः ॥ धी पापू ॥ ॐ नमो भगवते धिक्काय नमः
 नमो भगवते धिक्काय नमः ॥ धी पापू ॥ ॐ नमो भगवते धिक्काय नमः
 श्री महीष जय मपि वहे ॥ ॐ नमो भगवते धिक्काय नमः

रुद्रविद्यातत्त्वाधिकारपनापनाशीपापूज॥ जैंज जैंकीं दूँ दूँ
रुद्रआत्मतत्त्वाधिकारअपनाशीपापूज॥ वसि॥ ॥ तत
धुननपूजा॥ जैंज हूँ न क च ने न शीपापूज॥ जैंज हूँ शु क च न न
शीपापूज॥ जैंज हूँ हूँ प्र न म न म हूँ व मि श च न न शीपापूज
॥ जैंज हूँ हूँ पु यी हूँ ती त नि द्वा ग च न न शीपापूज॥ वसि॥
॥ ॐ नमो हूँ हूँ च न न पूजा कृत्वा॥ ॥ वसि॥ जैंज हूँ आ न न द न
किं हे न वी न न द वी ना धि प त य हूँ शी अ हूँ शी वि ण
ति कु म हे न व ह द न क व सिं गृ ह्ण हूँ गृ ह्ण हूँ स्वाहा॥ जैं

[illegible]

हूर्यानिन्दादिषाउणसिङ्गुल्याअकूसाप्पणनन्दनाथदिपु
गनाथवाउ (१) लय ४ कण पासादि हानदवतालय ४ न्द्रादिदि (१)
वताल्यास्याविभितिकुमचकम्भित्तल्य ४ समस्त्यावलिगृह्य
स्वाहा॥ (धनूयानिमूडा॥ ॥ जेअसमस्तमकुपी (०) ति॥ जेअ
उकाचूकमियादि॥ ॥ तर्पण॥ विन्दुगुयदद्या॥ जेअनमः
प्रीनाथयति॥ ॥ पञ्चमहामूडान्दणयि॥ ४ तिष्ठीपुष्टि
मस्तुष्टानुष्टुष्टान्नायअष्टाविभितिकुममध्वाङ्गचक्राचनवि
(धे) अङ्गगन्धपुष्पधूपदीपनेवद्यपूजावि (१) तत्सर्वविधि

पविर्पूर्वमस्तु॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
थ गिरिवधुर्नमः॥ गणेशाय नमः॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
जायते इत्येव कुशीपापूजा॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
रुच्यते इत्येव कुशीपापूजा॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
शीपापूजा॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पूजा॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मधुमाख्यावषट्॥ त्रैजै माया गेसा वरूप सहस्रपत्रि
वर्गनामि कोर्याद्र॥ त्रैजै को नागकादिके निष्कार्या
वीषट्॥ त्रैजै मानि सि २ करतल पृष्ठाख्या रूढ॥ ॥ त्रैजै
को स भूवनी २ हृदयाय नमः॥ त्रैजै को नमः भूभुवः
कैलि निगम स्वाहा॥ त्रैजै हूँ हारि त निख निखा ये वषट्॥
त्रैजै माया गेसा वरूप सहस्रपत्रि वर्गनामि कवचाय डे
॥ त्रैजै को नागकादि नग्नयाय वीषट्॥ त्रैजै हूँ ४ मानि सि
२ अस्त्राय रूढ॥ ॥ त्रैजै अ वक्रा भी से साट् श्री पापू ३ त्रैजै

कौमाहं शुनी मुखं श्रीपापू॥ जै॥ वं कोमा नीक ॥ ७८ श्रीपापू॥
॥ जै॥ टं वै वृवी हृदयं श्रीपापू॥ जै॥ तं वा नाही नाही श्रीपा
पू॥ जै॥ पं वृ न्याजी गुच्छं श्रीपापू॥ जै॥ यं चामूं ज्ञान्वा
४ श्रीपापू॥ जै॥ नमो महा लक्ष्मी पादया ॥ ॥ तं वा वं सन ॥
त्यद न्या सै कृया ॥ यथा ॥ तं वा दो नू द्रखं न्या स ॥ जै॥
नमो एग वं नू द्राय कृ पादा नू द्रया ॥ श्रीपापू॥ जै॥ न
मं मूं नू द्र पाद तस या ४ श्रीपापू॥ जै॥ नमो का
मा नू नं कृ पाद या ४ श्रीपापू॥ जै॥ सर्व कामार्थ साधनी

ॐ
नागुरु या ४ श्री पापू ॥ ॐ अऊ नामनी ॐ ॐ घया ४ श्री
पापू ॥ ॐ सर्वश प्रतिहता गती नां ॐ ॐ ॐ ४ श्री पापू ॥
ॐ स्व रूप पत्र रूप पत्रिवे की नां ॐ ॐ ॐ ४ श्री पापू ॥ ॐ
सर्व सत्व वणी कने ॐ ॐ ॐ ॐ नमू लन समस्त कर्म प्रवृत्त
नां ॐ ॐ ॐ ४ श्री पापू ॥ ॐ सर्व मोह नी गुह्य हृदय पत्र
मी सिद्ध ॐ गुह्य श्री पापू ॥ ॐ पत्र कर्म हृदय कने सी सि
द्धि कने ॐ सीम न्या श्री पापू ॥ ॐ माह नी वचन गुह्य ॐ श्री
पापू ॥ ॐ ति नू ड ख गु न्या स ४ ॥ अण पद ११ ॥ अऊ न १२ ॥

अथ मातृखसुन्यासः॥ त्रैलोक्यं अथानामाधवनदविमलं
वक्राणी विद्यनालोपीपापू॥ त्रैलोक्यं अथानामाधवनद
विमलकं माहं वी विद्यहृदिपीपापू॥ त्रैलोक्यं अथानाम
माधवनदविमलचंकोमानी विद्यकं ८० पीपापू॥ त्रै
लोक्यं अथानामाधवनदविमलं देववृवी विद्यनात्तुनिपी
पापू॥ त्रैलोक्यं अथानामाधवनदविमलं तं वा नाही विद्य
तामया ४ पीपापू॥ त्रैलोक्यं अथानामाधवनदविमलं पं
न्दाणी विद्यना सा ८ पीपापू॥ त्रैलोक्यं अथानामाधवन

दविमसयंचामुमुविशनयया॥ श्रीपापू॥ त्रै॥ अघान
अमाधवनदविमसगामहात श्रीविशतसाष्टीपापू॥
अणपद॥ माहृमनामवर्ज अकन १२०॥ नामसहितम
कन १४५॥ ॥ तिमाहृखगुन्यास॥ ॥ अथमकुरखगुन्या
स॥ त्रै॥ त्रै॥ नमश्चामुमुकुंलिते सिषीपापू॥ त्रै॥ उड्डक
लिकुंकागनखायां श्रीपापू॥ त्रै॥ कसिनलिवकुंलिरवा
यां श्रीपापू॥ त्रै॥ विशुक्तिकुंलिकायां श्रीपापू॥ त्रै॥
तानकादिकुंलिनयया॥ श्रीपापू॥ त्रै॥ पिमसकुंलिकुंलिवि

श्रीपापू॥ जे० विद्वत्त दंडुं दंडु पक्का ११ श्रीपापू॥ जे० कु
दंडुं उ० व० ११ श्रीपापू॥ जे० मा० सि० (११) जित सुनासव प्रियं
मुख श्रीपापू॥ जे० ह० स० २० ता० नि० श्रीपापू॥ जे० नृ० य०
२० वा० ११ श्रीपापू॥ जे० वि० द० म० २० क० ख० (११) श्रीपापू
॥ जे० मा० या० उ० सा० व० नृ० प० २० क० क० प० श्रीपापू॥ जे० स०
ह० स० प० त्रि० व० की० नी० २० ना० श्रीपापू॥ जे० नृ० द० २० नि० त० म्
श्रीपापू॥ जे० क० २० ति० (११) श्रीपापू॥ जे० वि० त्रि० २०
सी० म० न्या० श्रीपापू॥ जे० हि० त्रि० २० गु० म्भे० त्रि० क० श्रीपापू॥

ॐ

नैऋतिरिन्द्रं गुह्यं धीपापूज॥ नैऋतगणनिन्द्रं गुह्यं धीपापूज॥
नैऋतगामनिन्द्रं मूलाध्वजं धीपापूज॥ नैऋतविद्राविजिन्द्रं
दक्षिणसिद्धिं धीपापूज॥ नैऋतकारिणिन्द्रं वामसिद्धिं धीपा
पूज॥ नैऋतमानिन्द्रं दक्षिणमनो धीपापूज॥ नैऋतसञ्जीवनि
न्द्रं वाममनो धीपापूज॥ नैऋतहन्त्रिन्द्रं दक्षजघायां धीपापूज॥ नै
ऋतगन्त्रिन्द्रं वामजघायां धीपापूज॥ नैऋतघ्नत्रिन्द्रं दक्षगुल्फं
धीपापूज॥ नैऋतघ्नत्रिन्द्रं वामगुल्फं धीपापूज॥ नैऋतनमोमा
नमः नमः यद्वद्वपादं धीपापूज॥ नैऋतनमानमः ४ नैऋतविजिनमः

४ स्वाहा कं वाम पाद धी पा पूज ॥ ॐ ति म क्रु ख सु न्या स ४ ॥ अण्य
दं ३१ ॥ अक्षरं १११ ॥ ॥ सर्व मि ति वा प दं ३० ॥ ॥ मा नु ख सु
वि ना अक्षरं २९२ ॥ मा नु र्भ नाम व किं त अक्षरं ४१२ ॥ मा नु र्भ
ना म सा हि त अक्षरं ४३८ ॥ ॐ ति रि ख सु न्या स ४ ॥ ॥ आ स न
पू ज ॥ त्रं ३ प ग्रा स न धी पा पू ज ॥ त्रं ३ प्र ता स न धी पा पू ज ॥ ध्म
न ॥ त्रं ३ रि ख सु च रि व का च दि य नू पा म हा ह्मा सा ॥ रि रि के
त्र य ने र्ग का म दि ना न न्द न न्दि ता ॥ पूर्व त ४ (७) त व र्भ र्ग हि
म क्रु न्द न्द स न्ति ता ॥ द क्षि (७) ह्म व र्भ र्ग न क मू र्ग न (७) हि

गा॥ प्रसन्नवदनाः सोम्याः किष्किद्युननित्रीदग्धा॥ दिव्यत्र
त्तं सजाद्वर्त्य कर्णकं सुसहस्रिणी॥ निष्कृतकर्तृकरवर्णद
क्षिप्रविनाजिता॥ दप्यर्णरुटर्ककाश्वामहसंधृतायुध
॥ पद्मप्रणसमानूठागिरिवधुपत्रमध्वनी॥ दिव्यवसुपत्री
धनादिव्यासक्षत्रहविता॥ नानापूष्यनगादेवीनानाग
न्धुमाहिता॥ ददीफाचमहागन्धमाहवकुचबहिता॥
मध्वगन्धवगिरिवधुचपत्रमध्वनमूर्कमी॥ मूचनसर्वपापे
धनिप्रदात्रिदुनागर्नी॥ उंअध्वनपूष्यशीपापूज॥ ॥

[illegible]

पापू॥ ॐ ति नू द ख गु पूजा ॥ ॥ त्रै० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि
म स० अ० व० झा० मी० वि० श० श्री० पा० पू० ॥ त्रै० अ० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि
म स० क० मा० ह० य० नी० वि० श० श्री० पा० पू० ॥ त्रै० अ० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि
म स० व० को० मो० नी० वि० श० श्री० पा० पू० ॥ त्रै० अ० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि
म स० ट० वै० श्रु० वी० वि० श० श्री० पा० पू० ॥ त्रै० अ० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि
म स० न० वा० ना० ही० वि० श० श्री० पा० पू० ॥ त्रै० अ० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि
म स० प० ॐ० डा० नी० वि० श० श्री० पा० पू० ॥ त्रै० अ० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि
म स० य० चा० मू० भू० वि० श० श्री० पा० पू० ॥ त्रै० अ० अ० ध्यान अ० मा० घ व न द वि

मस्तर्गं महास श्रीविद्येश्रीपापू॥ ॐ तिमा नृखनुपूजा॥ ॥ नै०
नेनमधुमू (गुरुं) श्रीपापू॥ नै० उड्डकं गिरुं श्रीपापू॥ नै०
अक्षतित गिरुं श्रीपापू॥ नै० विद्युक्तिं श्रीपापू॥ नै०
अतानकादिं श्रीपापू॥ नै० पिङ्गलं श्रीपापू॥ नै०
विकृतदं श्रीपापू॥ नै० कृष्णं श्रीपापू॥ नै० मीसं
मितसूनासवप्रियं श्रीपापू॥ नै० हसं श्रीपापू॥ नै०
अनृत्यं श्रीपापू॥ नै० विहसं श्रीपापू॥ नै० मा
यायेसाकूपं श्रीपापू॥ नै० सहस्रपत्रिवर्गं श्री

पापू॥ जै० नूद२० धीपापू॥ जै० फूट२० धीपापू॥ जै०
विनि२० धीपापू॥ जै० हिनि२० धीपापू॥ जै० रिनि२० धी
पापू॥ जै० गनि२० धीपापू॥ जै० गोमनि२० धीपापू
॥ जै० विडाविनि२० धीपापू॥ जै० काहिनि२० धीपापू॥
जै० मारिनि२० धीपापू॥ जै० सखीवनि२० धीपापू॥ जै०
हनि२० धीपापू॥ ~~जै० नमामो गगनयदं धीपापू॥~~ जै० गनि२०
धीपापू॥ जै० घनि२० धीपापू॥ जै० घनि२० धीपा
पू॥ जै० नमामो गगनयदं धीपापू॥ जै० नमानम

ॐ वै वि च न म ४ स्वाहा ॐ श्री पापू ॥ ॐ श्री गिरि ख भु
दवी श्री पापू ॥ वसि ॥ गिरि ख भु मृदा न्द ॥ ॐ श्री गिरि ख भु
ग ॥ ॐ श्री गिरि ख भु चर्चन ॥ ॥ अथ मूल ॥ ॐ श्री गिरि ख भु
चक्रा दान ॥ वसु सव कर्षु कान्क पुनत्र पिनि ॥ यत कणत्र
ॐ श्री पण्डित दत्त च गिरि वृत्त सकल रुत प्रद वागुन सनुवा
ॐ ॥ द्वाव दत्ता न गवै गिरि वृत्त विपिनैय ककाव न्ध मासा वा
प्राक्त मूल चक्र जल धि वृत्त यून द्वा समा साने मह ॥ ॐ श्री मूल व
थ धान युग द्वि शिक ह स्या सृष्टि विद्या चन्द्रा चक्रै र्गि

कायावसुदसविजयासामसूयागिवृक्ष॥ दृग्गद्याहमिवासहि
निमपिगगननद्वानपोन्दानद(ग)द्यासादोनसर्वचक्रप्रभवयुतय
ऊत्सर्व(ग)द्यादिम(ध्व)॥ ॐ निचक्राङ्गान॥ ॥ ततान्यास॥ त
गादोनवात्मान्यासपूर्ववदहन्त्यासान्क॥ पञ्चपुनवन्त्यासपूर्वव
ता॥ ॥ अघानन्यास॥ नैजनेन्द्रपञ्चअस्त्रायरुद्रग्रीपापूज॥
नैजं अघानेन्द्रां अगुष्टाया निम॥ नैजं थघानेन्द्रां तर्जुनीया स्वाहा ग्रीपापूज॥
॥ नैजं अघानघानतर्जु मध्वमायावषट्ग्रीपापूज॥ नैजं छं सर्वत
४ सर्वसर्वेन्द्रां अनामिकायां द्विग्रीपापूज॥ नैजं इन्द्रां स्रष्टां कनिष्ठायां



वोषट्शीपापूज॥ जेज नूड नू पं ड ४ क न त स पृष्ठा र्या रू दूशीपापू
ज॥ ॥ जेज अ धान जो ह द या य न म ४ धा पा पूज॥ जेज थ धान जो
मि न स र्वा हा धा पा पूज॥ जेज धान धान न न डू नि र्वा ये व व दूशी
पापूज॥ जेज डू सर्व न ४ सर्व स र्व डू के व वा ये डू शी पापूज॥ जेज
हो स ४ जो न न ग या य वोषट्शीपापूज॥ जेज नूड नू पं ड ४ अ स्त्रा
य रू दूशीपापूज॥ ॐ ह्य धान न्या स ४ ॥ अथ बीज पञ्च कन्या
स ४ ॥ जेज अ स्त सा दूशीपापूज॥ जेज ॐ क ॐ शी पापूज॥ जेज
उ मुख शी पापूज॥ जेज जे गु दूशीपापूज॥ जेज उ पा द या ४ शी

पापू॥ इति वीजपञ्चकन्यासः॥ ॥ आसनपूजा॥ त्रैलोक्य आध्वन
नकिंशीपापू॥ त्रैलोक्य अनन्तासनशीपापू॥ त्रैलोक्य कन्दासनशीपा
पू॥ त्रैलोक्य अकूनासनशीपापू॥ त्रैलोक्य नोत्तासनशीपापू॥ त्रै
लोक्य पद्मासनशीपापू॥ त्रैलोक्य पद्मासनशीपापू॥ त्रैलोक्य कर्णासन
शीपापू॥ त्रैलोक्य कर्णिकासनशीपापू॥ वायव्यादीन्मनान्कर्म
१६ चपञ्च प्रगासनीपूजयत्॥ ॥ त्रैलोक्य त्रैलोक्य मधुसूतशीपापू॥
॥ त्रैलोक्य त्रैलोक्य मधुसूताधिपतिवक्त्रप्रगासनशीपापू॥ त्रैलोक्य
सूर्यमधुसूतशीपापू॥ त्रैलोक्य सूर्यमधुसूताधिपतिविषूष





की॥ गंरवः वेधवाद्यः वनदं वनदं दि॥ वा मखदाङ्ग धूतः
रुतकन्धनूपाङ्गकी॥ चन्धकपातवेधः अर्यर्यनाङ्गकी॥ प
दनवन्धिगा जानूवाभा नूत्तावदवती॥ उकवकुपिनशवः अर
भवर्गवन्धिगा॥ द्विजावनदाददुसिहत्वात्यदापना॥ नानात
क्षनसंपूर्णतद्वर्गसर्वसंपूर्त॥ रनवानन्दनूपायः अष्टानू
ष्टकीर्तितः॥ उवन्धः स्वावनाहादिप्रसिद्धानि मानवाः॥ ए
तिष्ठन्त्वोपूर्वाकप्रकाशमूर्तेनिसंज्ञात्रैः अक्षानपूर्यशीपा
पूज॥ ॥ अष्टावाहनादिकं कुर्यात्॥ त्रैः अष्टावन्कीर्तीकुर्यात्

[illegible]

संस्कृत

मनीयं० स्वधा॥ ॐ देवानीयं० नमः॥ ॐ दमस्ति त्वानं० नमः॥ पुष्पा
गन्धः० नमः॥ ॐ दमने सपनं० नमः॥ ॐ देवीयै रस्यं० नमः॥
ॐ देवीया द्दतं० नमः॥ ॐ देवीयमाहर्नं० नमः॥ पुनानिपुष्पा
जि० वीषट्॥ ॥ धूपदीपनवद्यानि पूर्ववद्वत्वागर्प्यं चिक्
त्वापुनरावमनीयं दद्यात्॥ ॐ देवपुनरावमनीयं
शीकृत्तिकं श्वनशीकृत्तिकं श्व
वानन्दत्वा॥ शुक्लति॥ ॐ देवपुनरावमनीयं
नन्दवीयाधिपतयसह्यं ॐ देवपुनरावमनीयं
शीकृत्तिकं श्वनशीकृत्तिकं

[illegible]

[illegible]

खा. या निमूडादर्शय॥ तगानवासा न्यासनपूजन॥ ॥ जंज
हं गिरवास्मानेष्टीपापूज॥ जंजमं गिरवसिष्टीपापूज॥ जंजदं सत्ता
ट्टीपापूज॥ जंजमं वेकुष्टीपापूज॥ जंजतं हृदयेष्टीपापूज॥
जंजवर्नाहोष्टीपापूज॥ जंजनं गुह्येष्टीपापूज॥ जंजयं जान्या
ष्टीपापूज॥ जंजतुं पादयाष्टीपापूज॥ ॥ जंजस्त्रं हृदयायन
मष्टीपापूज॥ जंजस्त्रं गिरवसस्त्राहष्टीपापूज॥ जंजस्त्रं गिरवा
येवषट्ष्टीपापूज॥ जंजनं कवचायष्टीपापूज॥ जंजयं नग
पुष्टयायवीषट्ष्टीपापूज॥ जंजतुं जंजस्त्रायष्ट्टीपापूज॥

ततश्चक्रपूजा॥ विन्दो॥ ॐ॥ ॐ महामायाकृष्टिकागि विद्याचक्रं
त्रैलोक्यपापू॥ दक्षगृह॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ अथानन्दोक्तं ४ आत्मन
त्वाधिपतये क्रियाण किंपराधीनिर्वाणसुन्दरी देवी श्रीपापू॥
वामगृह॥ ॐ॥ पत्रमघानन्दघानरूपको घानमुखीरामहीष
जवमपिवहृहृनृनृनृ विद्यातत्त्वाधिपतयज्ञानेण किंपरा
पराधीनिर्वाणिकाद्वीश्रीपापू॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
रुद्रगिवरत्नाधिपतयज्ञानेण किंपराधीनिर्वाणिका
शुकाद्वीश्रीपापू॥ ॥ कर्णप्रवृत्त्यादिप्रादक्षिण्येन॥

जैं अऊया श्री पापू ॥ जैं अविऊया श्री पापू ॥ जैं अमृजिता श्री पापू
 ॥ जैं अमृपनाजिता श्री पापू ॥ जैं अऊरुनी श्री पापू ॥ जैं अरु
 मृनी श्री पापू ॥ जैं अमाहनी श्री पापू ॥ जैं अआकर्षणी श्री पा
 पू ॥ ॥ अरुदस प्रसाधमदि प्रादक्षिण्यन ॥ जैं अमृं अं अं
 सिता हरे नव अं वक्रा जी श्री पापू ॥ जैं अ००००० नू नू हरे नव
 क माह ग्वनी श्री पापू ॥ जैं अउं उं वं नू हरे नव वं को मानी श्री पापू
 ॥ जैं अमृं अं का धरे नव वं वं वू वी श्री पापू ॥ जैं अ००००० उं नू

हे नवतंवा नाही श्रीपापूज॥ त्रेंज त्रेंज कपात हे नवपें ६८ नुनी धी
पापूज॥ त्रेंज अं ओं ही वर हे नवयें चामू धीपापूज॥ त्रेंज अं अं
४ महान हे नवगं महल श्री धीपापूज॥ ॥ तन सिव वृत्त पूजन॥
त्रेंज सें सत्व धीपापूज॥ त्रेंज नं नज ४ धीपापूज॥ त्रेंज तें तम ४ धीपापू
ज॥ ॥ चतुष्का (नष्टा) (न्यादी) भर्ता॥ त्रेंज दां दां दू द ४ द न
पाल धीपापूज॥ त्रेंज गं गी गू ग ४ (गुं) ४ कृत ग (नष्ट) धीपापूज॥
त्रेंज श्रीं जी कल पू ए व दू क नाथ धीपापूज॥ त्रेंज यां सर्व या नि न्य ४
धीपापूज॥ ॥ दान स्वागदि प्राद दि (नष्ट) ॥ त्रेंज तूं ६८ नुनी

पा पूज॥ जेँ ज नूं अग्नि धी पा पूज॥ जेँ ज मूं यम धी पा पूज॥ जेँ ज हूं
निष्ठ मिथी पा पूज॥ जेँ ज वूं व नृग धी पा पूज॥ जेँ ज मूं वायु धी पा पू
ज॥ जेँ ज हूं कृ वने धी पा पूज॥ जेँ ज हूं धी न धी पा पूज॥ जेँ ज अ
न न धी पा पूज॥ जेँ ज उं व क्रा धी पा पूज॥ ॥ गिह हि वी ना दि पू
जनी॥ जेँ ज जेँ द्वा ता धी पा पूज॥ जेँ ज जी अ म्ब धि धी पा पूज॥ जेँ ज
धी क व म्ब धी पा पूज॥ जेँ ज हूं न न्द ना घान धी पा पूज॥ जेँ ज हूं
धी पा पूज॥ ॥ म (ध) ॥ जेँ ज हूं धी पा पूज॥ जेँ ज हूं
हृ धी पा पूज॥ ॥ व हि ॥ जेँ ज हूं हृ आ न न्द धी कि

शु शु॥

विजगदासिनीनां३

नीनापी०जाक्षजासहजायागजामकुजागर्हजाकृतजासन्धा
हजायकचिद्यामिनीनाखचनीहचनीगमचनीजुकाकनीह्य
कनीशुदनीचतु४पञ्चमस्यपासूनवाकनीनयैथपप
त्रान्नैवसिंगृह्ण२ममसिद्धिं क्वचुकुह्ण३रुद्रस्वाहा॥त्रंज
जयादिगन्तव्यवसिंगृह्ण२स्वाहा॥ ॥आवाहनादिपञ्च
महामूर्तीदर्शयित्वा॥त्रंजत्रंचन्दनंश्रीपापूज॥त्रंजकीर्तिदत्तंश्री
पापूज॥त्रंजश्रीवीरहर्षश्रीपापूज॥त्रंजश्रीवीरमाहनीश्रीपापू
ज॥त्रंजश्री४पूर्वश्रीपापूज॥त्रंजधूर्पश्रीपापूज॥त्रंजदी

पं श्री पापूडा ॥ उं नमः श्री पापूडा ॥ उं नमः श्री पापूडा ॥ उं नमः श्री पापूडा ॥
श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः
मिनमः श्री पापूडा ॥ ३ ॥ उं नमः श्री नाथ ॥ उं नमः श्री नाथ ॥ उं नमः श्री नाथ ॥
उं नमः श्री सिद्धिनाथ ॥ उं नमः श्री नाथ ॥ उं नमः श्री नाथ ॥ उं नमः श्री नाथ ॥
नाथ ॥ श्री पापूडा का पूजा या मिनमः ॥ ॥ श्री पापूडा का पूजा या मिनमः ॥
मन्त्रः श्री पापूडा का पूजा या मिनमः ॥ श्री पापूडा का पूजा या मिनमः ॥
३ श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः श्री कृष्ण के नमः
यस्य सनातन सनातन सनातन सनातन सनातन सनातन सनातन सनातन सनातन सनातन

वैविधियपनिपूर्वमस्तु॥ ॥ श्रुतिप्रामाण्यमपराजितं
कपूजाविधिः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ अथ षडंगपूजा॥ तत्राष्टांग
पूजा॥ स्वाद्वयदयादिन्यासः॥ ॥ अष्टांगपूजासंन्यास
पापूजा॥ अष्टांगसिद्धिहासनपूजा॥ ध्यानं॥ अष्टांगपूजा
तसिंहासननयनवदनाभ्यामवधूतिनयनस्योद्वहमव
धूतिपूजनपिपत्रितः पुद्गलः॥ अथ चंदनं॥ नीलागद्वयं
विकचनवज्रपातारुनामृगुमातीनामश्लेषाद्विनामीन
विकचविधुतापाइकातीठः॥ अथ कापातद्वयं

वनदवनकरं गकिं गूलं चर्कं याधृत्वाददहहसुमृतघ
टमपत्रहसुखदाज्ञयुक्तं ॥ पाण्डीमादसूर्यपुनत्रपिविध
गाकाग्रगर्वसुशुक्तानन्दवीयागयुक्तं सुखकरेपत्रमाध्म
यतसर्वहवी ॥ ध्यानपूष्यं श्रीपापूज ॥ जेजोशुं या श्रीपूष्य
ग्वरायस्व ॥ श्रीपूष्यं श्रीपापूज ॥ वसि ॥ श्रीपूष्य
जा ॥ तप्य ॥ श्रीपूष्यं श्रीपापूज ॥ ॥ अथद
दिग्गमा ॥ श्रीपूष्यं श्रीपापूज ॥ ॥ अथद
श्रीपापूज ॥ जेजो वि ॥ श्रीपूष्यं श्रीपापूज ॥ ध्यान ॥ जेजो

पञ्चशत्याविष्कृचर्मासनगुहजटगप्रगसंस्त्रासधृत्वा. कृष्ण
राधूसनश्चिन्नयनविससन्मधुमासीनि. (१) ॥ देविमा
कुंदशुन्नमष्टतिवर्षक. कृकादकहसु. खद्याम् पाभमू
नमितजसजकातर्जनीखप्यनश्च. ॥ ध्यानपूषाधीपापूजा. (२)
जोखुंया. श्रीनि. (१) ग्यनायस्या. श्रीनि. (१) ग्यनीशीपापू
जा. वति. ॥ यानिमूडा. ॥ तप्यदी. ॥ षूतिदक्षिण
प्रायपू. ॥ जा. ॥ ततश्चपि. ॥ मास्नायपूजा. ॥ जंजका
हृदयादि. ॥ न्यास. ॥ जंजवृषास. ॥ नशीपापूजा. ॥ जंजसिंह

सनधीपापू॥ ध्यान॥ ॐ अकाराक्षरं प्रिन्नं वृषहतनूगतं
पदवडं सितास्यं चैकदा हि दधनं उमत्रकपत्रं मधुसा
(गुप्त्वजाने॥) गरवखप्रपोषाकू रूतकवना ह्यतिखद्व
मधुसान्नचोपयन्तं कपातं हजतं णिधनं वन्तकीं वादय
नी॥ तत्र न विनिरास्यां सिंह पृष्ठाप विष्ठीकूचरोनमिणा
नी सर्वरुषाहिनामा॥ अहयवनदहसामकवकुं प्रिन्नं म
दमूदितमूखाकां कृत्ति कीं विनयामि॥ ध्यानपूष्यं धीपापू
॥ ॐ निध्या॥ पूष्या पूरुति ययंदद्याद्यथा॥ ॐ जीषां हूँ ह्रीं

ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीपापपूजा ॥ वसि ॥ शिषू
तयोनिमूजा ॥ तप्येति ॥ ॥ तत उक्तेनाम्रायेपूजा
॥ न्यासधो ॥ क्रां ॥ हृदयादिन्यासः ॥ ॐ श्रीकृष्णाय नमः
हागिवाहनपूजा ॥ पापपूजा ॥ ध्वनी ॥ नीलवर्णमहाका
लीशिवरुखानवतावना ॥ पीतकुदकिर्णवकुमूर्त्तपावका
पम ॥ मधुसूतविगतनगाचञ्चलबाहुगनूदरी ॥ पिङ्गसाङ्गज
तापचन्द्राङ्कगणधरा ॥ सफविष्णुमूर्त्तुधुनकविष्णु
गर्भयुगा ॥ अहिकृष्णसुत ॥ अतोद्यामोहोकापातमातिनी ॥ कि

किनीचपूनावावीनघग्धवनाकमा॥ गिवापतसमावूठाम्
खण्णमिगनिर्जना॥ ॐ न्द्रायावन्नविष्णुश्च नृद्विषयसदा
गिवा॥ वज्रदधुचक्रं किं गूसखदाङ्गधनका॥ तर्जनी
मुखनिक्षिप्ता॥ गिवाधस्त्राहिसोचना॥ वज्रपद्मासनाद
वीपीनान्नतपयाधना॥ वामहस्तकपालश्च नकपूष्पमि
ण्णरुनी॥ धनयनीनिगूसश्च सगद्वन्द्विणकना॥ वज्र
कुदादिणहस्तभूषणमूषनकथा॥ वामपाशश्च खदाङ्ग
मृतवालश्च धनिनी॥ विलेसाकसमध्वस्त्राणि नूपाच

कंवता॥ निर्वृजपददातीगा रावातीताम (म) चना॥ अस्मिन्
महादेव्या नववक्त्रा पिधनयथा॥ अगधिका नरुदनज
यस्तिष्ठन्मदनीमगा॥ अस्यादेव्याऽप नान्नपानववक्त्रा प्रकीर्ति
गा॥ ध्यानपूर्वपापू॥ वंजोङ्क वा स्मृ जांजोङ्क जांजोङ्क ५४
गुञ्जयनाय गुञ्जकात्येनमः॥ ५५ ॥ वति॥ यानिमूद्रा
॥ तर्पणं॥ ॥ तगः वाउणी वि ५६ ॥ गवन्त्यासः॥ ५७
स्यथीरननाया गिताथी गुञ्जका ५८ ॥ तीषाउण्मदुनम
नेस्याथर्वाभृषिर्गती च्छन्दादगवक्त्राथी गुञ्जकासीदव

तां क्लीं वीजं हूं ग किं ४ हूं कील कं धर्मार्थकाममादा (र्थ) जप
विनियोगः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गिनसि ॥ ॐ अथर्वजुषयन
मः ॥ मूला ॥ ॐ जगत्त्रयं च नमः ॥ इति ॥ श्रीदशवक्रागुप्त
काश्यदेवताय नमः ॥ गुह्य ॥ क्लीं वीजाय नमः ॥ पादयोः ॥
हूं ग कय नमः ॥ सर्वा ॥ ॐ कीलकाय नमः ॥ वधू ॥ ॐ नमः ॥
धर्मार्थकाममादा (र्थ) जप विनियोगः ॥ ॥ स्वाहा ॥ अं स्वाय
रुद्र ॥ ॐ हूं अं गुह्याय नमः ॥ सिद्धि कना तिगं नी नी स्वा
हा ॥ ॐ क्लीं हूं मध्वमाया विषय ॥ स्त्री हूं अना मि कार्या हूं

॥ नमः कनिष्ठाया वोषट् ॥ स्वाहा कनकतप्तपृष्ठाया रुट् ॥ ॥
ॐ ह्रदयाय नमः ॥ सिद्धिकेशि गिरिसुखाहा ॥ श्री ह्रीं
गिरवाये वषट् ॥ श्रीं क्वेववाय हुं ॥ नमानेणयाय वौष
ट् ॥ स्वाहा अस्तोय रुट् ॥ ॥ पी० पूजा ॥ हुं वरुण्युगमूष्म
सनधीपापू ॥ हुं वरुर्वेदमूष्मसनधीपापू ॥ हुं दण्दि
क्वेगिमूष्मसनधीपापू ॥ हुं वज्रादिपञ्चप्रतासनधीपा
पू ॥ हुं हृष्टिप्रतयमूष्मसनधीपापू ॥ हुं महारिचवा
सनधीपापू ॥ हुं महाशिवसनधीपापू ॥ ॥ ध्यानं ॥ व

आदिपञ्चकयुगश्रुतिदिक्कतीनीमूलेषुहेनवनिवाप्रसया
नसम्॥दस्यार्द्धेनदशगतस्तद्विदुमाहपद्मसिंहताहगेव
तीपत्रमीदक्षमस्या॥सिंहहकासकपिअकृतेगुनसनादयाण
ध्यत्रीमकरमानवपंकिवकुं॥श्रुताकृष्णनिसमुद्रनपा
नपाण्यखद्वज्जवालकजिनाकितापाविपद्मी॥ध्वनपुष्प
प्रीपापू॥आवाहनोदिपाद्यादि॥॥कुंकुंसिद्धिकनासि
कीकुंकुंकीकुंनमःस्वाहाश्रीगुञ्जकालीश्रीपापू॥३॥व
ति॥सहस्रनाममू॥तर्पण॥श्रुतिगुञ्जकालीपूजा॥॥

अण्विषयः॥ ॥ अथ सिद्धि त श्री पूजा॥ न्यासः॥ ॐ अस्य
सिद्धि त श्री नवाक्षर मन्त्रस्य नानद अष्टविंशत्यष्टी चन्द्रः श्री सिद्धि
त श्री देवता कीर्तिं ईश कि हा की तर्क चतुर्वर्ग साधन विनि
यागः॥ ॐ नित्यं त्वा गिन सि॥ ॐ नानदाय अष्टयुन मे॥ मुख॥ ग
यष्टी चन्द्र सन मे॥ हृदि॥ श्री सिद्धि त श्री देवता येन मे॥ गुह्य॥ की
वीजाय न मे॥ पादथा॥ ईश कथन मे॥ सर्वा॥ हा की त काय
न मे॥ वक्षः॥ चतुर्वर्ग साधन विनि यागः॥ ॥ न मे॥ अष्ट
यष्टी॥ ॐ की अष्टयुन मे॥ ईश की नीत्या स्वाहा॥ इ मे

अमर्यावषट्॥ दौं सुनामिकायां द्रुं॥ कौं कनिष्ठायां वीषट् नमः
४ कनकतप्तपृष्ठायां रुद्रा ॥ ३ कौं हृदयाय नमः॥ ह्रीं ह्रीं गिरिसेखा
हा॥ दौं गिरिवाये वषट्॥ दौं कवचाय द्रुं॥ कौं नयनयोय वीषट्॥ न
मः ४ अस्त्राय रुद्रा ॥ आसनपूजा॥ ह्रीं प्रतासनग्रीपापूजा॥ जे कौं
ग्री कौं सिद्धय नमो हरे नवासनग्रीपापूजा॥ ध्यानं॥ पूं पूं नृशु
तिर्गिरिकन्दधवसारव (बुन्दूयूकाजटा नैर्गु ४ पञ्चद (लौ विनाकि
नपनावक्रात्मिकासुन्दरी॥ नृदस्यापत्रिवक्रपञ्चकयूताशूला
सिम्बुशूक शीखदासकपासपाणकसन्धनहस्तोपसादाह

यं॥ ध्यानपूर्व्यां ग्रीपापू॥ आवाहनादि॥ पाद्यादि॥ ॥ॐ श्रीं ह्रीं
 कूं क्रां कानमः॥ श्रीसिद्धिस्तु श्रीदेवी ग्रीपापू॥ ३॥ ॐ उं क्रीं श्रीं नमः॥
 सर्वसिद्धिं यागिनीं नमः॥ सर्वसिद्धिं मानं नमानि न्यादितान
 न्दनं न्दिताये सकलकृतवकनायि कार्ये हे गवये च गुरुकापालि
 न्योग्यथ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं कूं क्रां कानमः॥ खूं पत्रमहं सिनि निर्वीज
 माग्नप्रदं विषमापप्रवप्रणमनि स कल इति त्रिष्टुक्कण्ड
 लिनि सखापिदा क्राधि तेन निसकलं प्रमथ निदवि आगे कृ
 हस्तं वेलां ननने धिनानुवधरुदक्षि मम स्वर्णपून्म द्वं खा

[illegible]

स्य श्रीमहाप्रिपुनसुन्दरीपञ्चदशभक्तनमस्तु स्य दक्षिणमूर्ति
मृषिः प्रैकिचन्दः श्रीमहाप्रिपुनसुन्दरीदेवता ॐ वीजं स्वी
गकिः ॐ कीलकं मम चतुर्वर्गं नो सिद्धिः (र्थजपविल्लु) निधा ॐ
ग॥ ॐ ॐ तिस्मृत्वा ॥ गिनसि ॥ कुं दे दक्षिणमूर्ति ॐ यश्च वयं न
म॥ म ॐ रवा ॐ प्रैकिचन्दसुनम॥ हृदि ॥ श्रीमहाप्रिपुनसु
न्दरीदेवतायेनम॥ गु ॐ ॐ वीजाय नम॥ पादयो ॥ स्वी
गकयनम॥ सर्वा ॥ ॐ ॐ कीलकाय नम॥ वध ॐ ॐ
ति ॥ मम चतुर्वर्गं नो सिद्धिः ॐ (र्थजपविनिधा ग॥ ॥

स्त्री अस्त्राय रुद्र॥ ॐ अंगुष्ठाया नमः॥ दक्षिणार्जुनीया स्वाहा
॥ स्त्री मध्वमा स्त्री या विषट्॥ ॐ अनादि मि कार्या इ॥ दक्षिण
कनिष्ठाया विषट्॥ स्त्री कर्त्रे स्त्री तले स्त्री पृष्ठाया रुद्र स्त्री
॥ ॥ ॐ हृदयाय नमः॥ स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री
स्वाये स्त्री विषट्॥ ॐ कवचाय स्त्री इ॥ दक्षिणार्जुनीया स्वाहा॥ स्त्री स्त्री स्त्री
॥ ॐ अस्त्राय रुद्र॥ ॥ स्त्री वि० स्त्री पूजा॥ नृब्रह्म प्रताप
नृपाय पापू॥ स्त्री विष्णु प्रताप नृपाय पापू॥ स्त्री सोऽनृद प्रताप
स नृपाय पापू॥ नृब्रह्म प्रताप नृपाय पापू॥ स्त्री सदानि

वमहाप्रतपद्मासनशीपापू॥ध्यानं॥ ॥सूर्यनृगिमयेकपी०नि
तर्यावासाक्तविचित्रभग्नाक्षेत्रकुलावर्तिसमुद्रतीर्थीनरुनी
सुन्दरी॥पाशश्चक्रमिहचापविधृतौपष्षष्टहस्तापरा नाना
लवणहतपितातिसुकुमानाक्षीमुखद्वन्द्वे॥ध्यानपूर्वाशीपापू॥
आवाहनोदि॥पाद्यादि॥ ॥त्रैलोक्येश्वरीस्त्रीस्तुतीयवीजवे
न्नचक्रअष्टानपी॥० चर्यानिन्दनाथकुली कुली स्त्री सिकणीम
हाशिपूनसुन्दरीदेवीपनवक्त्रात्मणकिङ्का शीपापू॥३॥व
स्थितानिमूढा॥तर्पणं॥इतिमहाशिपूनसुन्दरीपूजा॥ ॥तत्पर

[illegible]

हृदयाय नमः॥ ॐ स्वादि॥ आसन पूजा॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सन धी पा पूजा॥ ४ पद्मासन धी पा पूजा॥ ४ शिवात्म सन धी पा पूजा॥
ध्वनी॥ पञ्च वे कुञ्ज उच्चैर्द्वि सच्चिदेन गत विरति॥ चन्द्र सूर्याग्नि
यनी सदानन्द मुरवद्धनी॥ पान पाण्डन मूत्राणि शूल पूषक कन
४॥ विद्या सप्त दिविशुद्धि शिवोक्त्यात्मकं कुरु॥ ध्वन पृथ्वी पा पूजा॥
आवाहनादि॥ पाद्यादि॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धी पा साद पेनाम्बा ह्रीं
धी पना सादाई नानी प्यन हृदय क धी पा पूजा॥ ३॥ वसि॥ शि शूल
यानि मूत्रा॥ नमः॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय पूजा॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय पूजा॥

न्यासः॥ इति अस्त्राय रुद्रा नै अंगुष्ठाया निमः॥ इति रुद्रा नीत्या स्वाहा॥
रुद्रं मेधमाया विवद॥ इति अनामिकाया इति॥ ०१ सी ४ कनिष्ठाया वि
वद॥ इति कनकते पृष्ठाया रुद्र॥ उर्वहृदयादि॥ ॥ आसन पूजा
॥ उ प्रतासन धीपा पूजा॥ ध्यान॥ अमा धी हाट के नीत्र सवदन धनी
मूक के नीचन ग्र यत्ति नूत्रे ४ सुगीर्ष अजग गगन यता सीट पादा
के हस्ता॥ पाण्य धी वद वा रुय्य ग क गि रिव दण दिक्क ति य्या निवा
व गग स्था चन्द्र मत्स्यो दध ति गुरु वना हं ह विं क रु पाणी॥ दक्ष वाम
थ सुय्य कम ० गजज अहूत के ० पाण सत्पीय त वैत्व मृग मध्वन
नीरुका

संयाच दवी छिनरी ॥ सर्वसत्कान्त हवी पत्रम छिवकनी सर्वका
मप्रदायी वीजाना माहूतूपा जिन कस्तन मिताली सदाध्वापयामि
॥ ध्यानपूर्वार्थीपापूजा ॥ ॥ जे जे सुखी ०४ सो ४ कुं श्री हाटकस्थनी
दवी श्रीपापूजा ॥ वसि ॥ यानिमूजा ॥ तर्पण ॥ छूति अर्धमाय
हाटकस्थनी पूजा ॥ ॥ छूति वज्रमाय पूजा ॥ ॥ ॥ ततानि
वर्षा पूजा ॥ न्यास ॥ जे जे सुखी हृदयाय नमः ॥ छूत्यादि ॥ ॥ आ
सन पूजा ॥ जे जे अर्धवक्त्र मधुसूनुयातीत दानिन पुनक
मलासन श्रीपापूजा ॥ जे जे श्री हूँ ह्रीं जे ह्रीं श्रीपापूजा ॥ जे जे

सर्वगमप्रणववाय दूँ दूँ दूँ धीपापूज ॥ ३ ॥ जं जं जं
 दूँ दूँ दूँ धीमहा दूँ निर्वोद्यन्वाननन्द ॥ ४ ॥ धी धी धी
 स दूँ दूँ दूँ हिताय सिद्धाव दूँ सर्वधिका नारव दूँ धी धी धी
 ॥ ३ ॥ दूँ दूँ दूँ ॥ वसि ॥ ॥ जं जं दूँ हं हं धी धी धी ॥ जं जं हं हं धी धी
 पा दूँ दूँ दूँ पूज ॥ जं जं दूँ दूँ धी धी धी ॥ जं जं हं हं धी धी धी ॥ जं
 जं दूँ दूँ दूँ हं हं धी धी धी ॥ जं जं हं हं धी धी धी ॥ वसि ॥ ॥
 निष दूँ दूँ दूँ जाम्नाय सर्वधिका न ॥ ॥ जं जं दूँ दूँ दूँ दूँ दूँ दूँ
 दूँ दूँ दूँ धी धी धी ॥ महानिर्वोद्यन्वाननन्द महानिर्वोद्यन्वाननन्द ॥

ॐ ॐ ॐ मोः महानिर्वाण्यनन्दनाथ ॐ श्रीपापू ॥ महानिर्वा
णविद्या ॥ ॐ ॐ श्री १० श्रीपापू ॥ ॐ ॐ श्री १० श्रीपापू ॥ पत्र
मनिर्वाण ॥ ॐ ॐ श्री १० श्रीपापू ॥ ॐ ॐ श्री १० श्रीपा
पू ॥ पत्रमादत ॥ ॐ ॐ श्री १० श्रीमहानिर्वाण्यनन्दनाथ
नाथ ॐ श्री १० पत्रमनिर्वा ॥ ॐ ॐ श्री १० श्रीपापू
॥ ॐ ॐ पत्रममहानिर्वाण्य ॥ ॐ ॐ श्री १० श्रीपापू
नाका ॐ श्री १० श्रीपापू ॥ तन्न १० श्रीपापू ॥ वति ॥ ॐ
यजी ॥ ॥ निष्पद ॥ निरदत ॥ अलख्य ॥ गुत्तमूखा ॥ तन्व्या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

सुकासवकाफूनगिनिमहृष्णीपाननकीपिनर्ण. माहृष्णीमधुस
सुकाटितसिगमहाद्विर्गीत्रकवसुती॥ गीर्वचकृत्तपाजहसम
गसवनाहीगिखटवहकी. वानाहीपाकनायाकठिनकृचमहा
मुकेकेगीधृष्णय॥ ध्यानपूर्याधीपापूजे॥ ॥ उंजींधीउंशुर्ण
आंणींजींनमाहगवतिवाकृतिश्वायाहिश्वायाहमुखिश्म
न्धमृन्धिनिनमात्रन्धमृन्धिनिनमाजमृजमृनिनमाहमा
हिनिनमःसुमृसुमृनिनमः॥ सर्वद्वयप्रदस्यनीसर्ववीसर्व
वाक्किम्वशः॥ अणुमुखगतिजिह्वासुमृकृत्त२गीर्धवध्वकृत्त

२३६ (ॐ) जं जं जं ॐ ०४०४०४०४ ॐ हूं रुट् स्वाहा ॥ धीपशुमीवाना
ही धी पा पूजा ॥ वसि ॥ कातमूजा ॥ तप्यनी ॥ ॐ निपशुमीपूजा ॥ ॥
तगाहनूतनवपूजा ॥ जं जं जं हृदयादिन्यास ॥ ॥ जं जं जं प
शुप्रतासन धी पा पूजा ॥ ध्वनी ॥ आकृतिर्देवदवस्य ध्वनं वास्य भृ
गु द्विज ॥ उकवकुं गिनशु नकवर्गुं सूरजसो ॥ द्विजुजशु महा
सर्नसर्वगप्रविमर्दनी ॥ तजनी वामहस्तनदक्षिणमुखि ध्वनि
नी ॥ वायु पूजं महान्तं हरयसर्वविभावनी ॥ उर्वध्वत्वा महावीन
हनूतन नमोऽस्तु ॥ ध्वनपूषा धी पा पूजा ॥ ॥ जं जं जं नमोऽस्तु

गवाननराजाय महावत्सपराकुमाय गगनगमन सागनाकन
लक्षप्रमथन वृक्षहि रगवन वृक्षवा तिननाम सहाय सुग्रीव
सख अतीतानागत पतिहाने वेद वृक्ष वा दिनग नृप अत्र अत्र
गामन मूर्धवायुव (गनागत अस्मिन्पूजापहा विविधनाग गृह
अनाग मूर्ध २ गुन २ द्विधि २ उकवीन उगत्यो सत्वन वायुव (ग
नख मूर्धवालय २ पत्रय क मरिचाना न द्विन्द २ रगवन अमूर्धक
शुनिय्या प्रयति जा कुं कां या यां यां हू रूट्वा हा धीह नूहे नव
ध्रीपा पूजा वसि ॥ तर्जनी मूडा ॥ तर्पण ॥ ॐ तिह नूहे नव पूजा ॥ ॥

नमः कलशार्चनी॥ जैजै ह्रीं सः ह्रदयादिन्यासः॥ ॥ जैजै आध्वर्युः
दित्यः श्रीपापू॥ जैजै वृषासन श्रीपापू॥ जैजै सिंहसन श्रीपापू
॥ ध्वनी॥ जैजै चन्द्रकोटिप्रणाराज चन्द्राद्वयगणेश्वर॥ नुका
स्यं सावनगी गिविषुद्धो हनदामध्व॥ उत्सर्गसामहस्य श्री (प्य
तामसावनगया॥ मृगयुग्मसमासावकवनदाहयर्गवध्व॥
द्वयाः कल (गन्धर्वाः श्री लाला कः ॥ किं वृक्षसः॥ नानाहन
रक्षणाः श्री हानकयूनमसिना॥ चन्द्रात्मावर्षपूष्नीसीहिता
पनमभ्यन्ता॥ ध्वनपूष्नी श्रीपापू॥ ॥ जैजै अध्वर्युः जैजै ध्वन

[illegible]

वकुशीपापू॥ जै॥ वैवामदवउरुवकुशीपापू॥ जै॥ हंस
शाजातपश्चिमवकुशीपापू॥ ॥ जै॥ हंस४ हृदयादिषडसं॥
वसि॥ अर्धा नवकुसुमयो॥ वसि॥ ॥ जै॥ गङ्गाशीपापू॥ जै॥
जयमूनाशीपापू॥ जै॥ गंगावतीशीपापू॥ जै॥ सनस्वती
॥ नर्मदा॥ सिन्धु॥ कावेरी॥ गङ्गुकी॥ कोष्ठीकी॥ वाग्वती॥ सागरी
४॥ सर्वसन्निदेश॥ ॥ त्रुडचक्षुदि८॥ ऊयादि८॥ बुद्धाक्षदि८॥
असिताक्षदि८॥ ४४ न्यादि१०॥ आदित्यादि१०॥ विनायकादि१०
॥ वैशादि१२॥ प्रतिपदादि१३॥ अश्विन्यादि२८॥ विष्णुमादि२८

का ३

॥ मेषादि १२ ॥ मूहूर्त १७ ॥ अश्वत्थामादि ८ ॥ वज्रिष्ठादि ८ ॥ ववादि
११ ॥ वसन्तादि ३ ॥ अहानाशीत्या ॥ शुक्लकृष्णपक्षाद्या ॥ कात्या
अर्नादिनागर ॥ त्रैलोक्यविष्णुत्रयसदाशिवार्थी पापू ॥ ॥
त्रैलोक्यकर्माधी पापू ॥ त्रैलोक्यकर्माधी पापू ॥ त्रैलोक्यकर्माधी पापू
॥ त्रैलोक्यसादाधी पापू ॥ त्रैलोक्यपिस्तुतधी पापू ॥ त्रैलोक्यअतीतधी पा
पू ॥ त्रैलोक्यप्रकपादधी पापू ॥ त्रैलोक्यत्रुडधी पापू ॥ त्रैलोक्यभक्तिवि
द्याप्रतिष्ठा निवृत्ति कला द्वात्रिंशानम ४० ॥ पापू ॥ कुम्भ
धवर्त्तिदद्यात् ॥ त्रिंशत् (धनुः) यानि मूढान्दधयि ॥ तेषां

भूतिवत्तुभर्त्तनी॥ ॥ गतावीरघटावर्त्तनी॥ त्रैलोक्यं हृदयादिन्या
सः॥ ॥ त्रैलोक्यं कात्रासनशीपापूज॥ ध्वनी॥ त्रैलोक्यं साक्षानसनि
तादवीपद्मनागसमप्रता॥ सर्वत्रैविर्विचिण्णीशम्वेकाहृतेवि
ग्रहा॥ अष्टादशकुजादिद्यानानाप्रह्नलभ्यता॥ नानात्रसधनीदेवी
साधनानाविद्यता॥ खड्गवाद्यकुण्डसद्यकपार्श्वकलिंगध्वज॥ तथ
नृश्रेष्ठतथाघनवमनुवनप्रद॥ रुटकीवधनृपाणीखट्वाङ्गस
कमधुसूतं मूढनवेगश्रेष्ठगताकिंवाक्यकत्र॥ मधुसूतवसूयित्वा
तुनदीहृताविस्मृता॥ ग्रसनीपातकाः सर्वाश्चमृतामृतका

[illegible]

मृगशीपापूज॥ उँ अँ की सिद्धिदायिनी कृतक मृगशीपापूज॥ नव॥
कीर्तिदा॥ ये (अ) दा॥ पूष्टिदा॥ धनदा॥ पद्मदा॥ सर्वमङ्गलदा॥ ॥
उँ अँ की अग्निमासिद्धि कृतक मृगशीपापूज॥ नव॥ तद्विमासिद्धि कृ
तक मृ॥ महिमा॥ ॐ शि त्व॥ वेणी त्व॥ प्राकाम्या॥ रुकि॥ ॐ ह्रीं
प्राप्ति॥ सर्वकामसिद्धिदा॥ पूजाक्रमभवति॥ यानिमूढा॥ ॥ ॐ
निवीनघटावर्चन॥ ॥ नमः सगुणवर्चन॥ उँ अँ पद्मासनशीपापूज
॥ ध्यानं॥ (धेतपद्मासनासीनं (धेतवर्चनं वरुणं उँ अँ) अरुणपूष्टक
हस्तश्रवणाहयधनं हँ॥ ध्यानपूर्वशीपापूज॥ ॥ उँ अँ हरे नमः

व्यक्तमाश्रयविनश्रीबीत्यष्टापापूज॥ जैजस्रं सगुणमूर्तिवच
मधुसूतश्रीपापूज॥ वति॥ धनमूज॥ ॥ मरुतु कोमानीपूजा॥
जैजको हृदयादिन्यास॥ ॥ आसन॥ जैजआधननकिश्रीपापू
ज॥ ॥ ग्यादिकविष्कार्क॥ जैजमयूनासनश्रीपापूज॥ धन॥ जैज
वन्धूकात्रुणसकृन्मनजित्काटिसमप्रता॥ सूर्यविम्बनितगदवी
ष्पीषत्प्रहसितानना॥ वासत्रुपीमहामायाकोमानीश्वरूपिनी
॥ शैकावगुर्जुजाकाशपूर्वमितिगकिस्तुष्टक॥ पद्मनागमसिम्हा
लीमूकासकृन्मनरुषिता॥ निखिनाजसमानूजविद्यानकान्ति

काविनी॥ सो राग्यसम्पदा ल श्री मायूः पूणयणः प्रियं॥ सर्वका
मग्यनीदवीसर्वबापोमहग्वनी॥ आगे च उल्लिखित वक्तुं सो वक्तु
ष्टिकाविनी॥ ध्वात्वा दवीसि दानोमिको मानो सर्वमङ्गलो॥ ध्वा
नपूष्यशीपापूज॥ आवाहनादिपाद्यादि॥ गङ्गाति॥ जंजवचं
जंमं जंकीं क्रीं श्रीं महाकोमात्रिकाविष्टं श्रीपापूज॥ ३॥ वति
॥ जंजवचं श्रीं श्रीं कर्करी कुङ्कि कर्करी सावकसूपी भविष्यतय
सहकृमानो विग्रह आकन्दस्वमस्वाहा श्रीपापूज॥ जंजवचं
हरे हरे कृतवागी ग्वनी कृतया गग्वनी कृतको मानो विष्टं

धीपापूज॥ जै० अ० ॐ आनन्द० कि० हे० न० वान० न० द० वी० ना० धि० प० त० य०
स० धी० महा० वि० श्या० ना० ऊ० श्व० नी० धी० को० मा० त्रि० का० वि० च्छ० धी० पा० पू०
ॐ ॥ व० ति० ॥ अ० ध्या० न० व० डा० द्वा० रि० ष० क० नी० स० म० या० ॥ व० ति०
॥ जै० अ० का० ह० द० द० या० य० न० म० धी० पा० पू० ज० ॥ ॐ ॥ या० दि० ष० उ० ह०
॥ ॐ ॥ अ० व० क्का० नी० धी० पा० पू० ज० ॥ ॐ ॥ या० दि० ॥ नू० ड० च० भु० दि० ॥
ऊ० या० दि० ॥ ॥ व० ति० ॥ शि० नि० र० वा० ॥ कि० या० नि० मू० डा० ॥ त० प्य० नी० ॥ ॥
द० वा० द० द० ॥ जै० अ० म० यू० ना० स० न० धी० पा० पू० ज० ॥ जै० अ० धी० को० क० स० पू० उ० व० दू०
क० ना० थ० धी० पा० पू० ज० ॥ व० ति० ॥ ते० ऊ० नी० मू० डा० ॥ ॥ त० त्या० र्ग्य० मा० ॥ जै० अ० नैन०

नदी श्रीपापूज॥वसि॥त्रैजद्रुमहाकासश्रीपापूज॥ ॥दद्यावाम॥
त्रैजमूषासनश्रीपापूज॥त्रैजगभंगीगुण॥(मै॥१॥श्रीकृतगजध्वनश्री
पापूज॥वसि॥गजमूडा॥ ॥नृत्यार्चया॥त्रैजदौदगध्वनश्रीपा
पूज॥त्रैजकुमहाकासध्वनध्वनश्रीपापूज॥वसि॥ ॥दद्याम
(गु॥॥त्रैजननासनश्रीपापूज॥त्रैजदौदौद्रुद्र॥दगपासश्रीपा
पूज॥वसि॥दधुमूडा॥ ॥नृत्यार्चया॥त्रैजसुग्रीसिद्धिवा
मूषादवीश्रीपापूज॥वसि॥त्रैजयांगीयूहाना ॥ध्रुधिपायानि
नीश्रीपापूज॥वसि॥ॐतिकोमानीपूज॥ ॥अथकृतदव

[illegible]

[illegible]

कोमारीदवी श्रीपापूज॥३॥ॐॐॐ क्रिया॥ किवात कोमारी
 श्रीपापूज॥वति॥ॐॐॐ को हृदया ॐ यनमः श्रीपापूज॥ॐॐॐ
 दिषउ॥वति॥ॐॐॐ किमुडा॥ॐॐॐ निवात कोमारीपूजा॥॥
 ॐॐॐ निजतसंविॐॐॐ किपूजा॥ ॥ततादवदवीपूजा॥ॐॐॐ जा
 हृदयादिन्यास॥ॐॐॐ ननासन श्रीपापूज॥ॐॐॐ श्रीपिण्ण
 चनाथ श्रीपापूज॥३॥वति॥ॐॐॐ श्री नृद नोडादि॥ निनोडाय
 गिनशकाटना॥ कि कपितपिमल ॥ वववनाड ॥ कणविक
 नासगी ॥ दूददु प्रतयाम्बुदनिह ॥ नमूरुय ॥ शुक्काज

दहायती वननखधमि एन नृत्यय रहसश्चिन्मिश्च गुनश्च मन्त्रश्च
मिन्त्रश्च मिन्त्रश्च शखश्च शखाहिश्च पिप्पलवनाथमहादेव वशीपापूज
॥ वसि ॥ पिप्पलमूत्रा ॥ ॥ उं ॥ सा हृदयादिन्यासा ॥ उं ॥ ननास
नशीपापूज ॥ उं ॥ ह्रीं ॥ श्रीपिप्पलविनीशीपापूज ॥ ३ ॥ वसि ॥
उं ॥ ह्रीं ॥ उदित कुं ॥ काटिणस्कनकचयनिर्मासदही
मीष कुं ॥ कनकन कुं ॥ धिनपल्लोसिनेतीकूनखदसुय
तन कुं ॥ कवर्णय य ॥ द्वालामुखतठिङ्गि कवितासही
वन्म य ॥ दिसा सीसुं खुं माश्च २ सा २ जाकिनीहवानीपि

॥ अथिकामहारेणवीदवीश्रीपापू॥ वरि॥ यानिमूडा॥ ॥ त्रं
॥ अहंकाहदयादिन्यास॥ त्रं॥ वृषासनश्रीपापू॥ त्रं॥ अहंकाह
नृशंभ्वनमहारेणवस्य॥ त्रं॥ वृषासनीश्रीपापू॥ ३॥ वरि॥
तापुवमूडा॥ ॥ वृषासनीश्रीपापू॥ त्रं॥ अहंकाह
वर्णकिपूजा॥ ॥ वृषासनीश्रीपापू॥ त्रं॥ अहंकाह
दिन्यास॥ ॥ वृषासनीश्रीपापू॥ त्रं॥ अहंकाह
वृषासनीश्रीपापू॥ त्रं॥ अहंकाह
वृषासनीश्रीपापू॥ त्रं॥ अहंकाह
वृषासनीश्रीपापू॥ त्रं॥ अहंकाह

कूं न कृत मूर्ख य जां उरु न व कु थी पा पू अ॥ त्रें अ ई सह द व मूर्ख
य जा प धि मे व कु थी पा पू अ॥ क्षति व कु न्या स ४॥ ॥ त्रें अ न क
प आ स न थी पा पू अ॥ त्रें अ मृ ग ५४ ॥ स न थी पा पू अ॥ ॥ त्रें अ
थी ली म न्य न मृ ग ॥ थी डो प दी ग कि सहि न थी पा पू अ॥ ३॥ व
ति॥ त्रें अ लं ती डू ॥ लं ती डू का द नाय महा रे न वाय गु वी ति
को स द (अप न) म डू ग दा ध नाय व्या घु ग नी नाय पा धु प
थाय डो प दी पि याय डू महा ली म नू पि (लं ती म न्य नाय र्था चो
पू अ॥ व ति॥ त्रें अ डो डी डू ~~स्त्रि~~ थी डो प दी ग कि थी पा पू अ॥

[illegible]

नष्टीपापूज॥ जै० दू० पि० भवनाथष्टीपापूज॥ ३॥ वसि॥ प्रि०
समू० ॥ तत्त्वमसि ॥ जै० सा० हृदयादिन्यास॥ जै० ननाम
नेष्टीपापूज॥ जै० लू० हूँ० प्री० पि० भविनीष्टीपापूज॥ ३॥ वसि
॥ या० निमू० ॥ ७० ति० री० हूँ० म० ॥ तत्त्वमसि ॥ जै०
टा० हृदयादिन्यास॥ जै० ग० वू० नू० स० नष्टीपापूज॥ जै० अ० ध्या०
अ० मा० ध० व० न० द० वि० म० स० ट० णी० व० वू० वि० श्रु० श्रु० श्रु० श्रु०
ति॥ जै० का० की० कू० कु० श्री० का० ध० रे० न० वा० वा० वू० वू० श्री० वे० वू० वे० दे० वा० श्री० पा
पू० ॥ वसि॥ जै० अ० वू० मू० का० ध० रे० न० व० ट० ००० वू० ट० न० श्री० वे० वू० वे० दे० वा०

श्रीपापूआवति॥ उंअं कं चं टं तं पं यं णं वं क्काञ्छादिगञ्जहरेनवस
हिता॥ श्रीपापूआवति॥ गोरवमूडा॥ ॐ तिर्यग्वावेसुवीपूजा॥ ॥
ततागुञ्जस्वनीपूजा॥ उंअं हृदयादिन्यास॥ उंअं सिंहसेनश्री
पापूआवति॥ उंअं हृदयादिन्यास॥ ॐ महाहरेनवीगुञ्जस्वनीश्रीपापूआ॥ ३॥
उंअं श्रीगुञ्जस्वनीमहाहरेनवसुं श्रीगुञ्जस्वनीयोगि
नीश्रीपापूआवति॥ उंअं उन्मल्लस्वनायविद्महमहाहरेनवायधी
महि॥ गन्नादिगञ्जस्वनीमहाहरेनवसुं श्रीगुञ्जस्वनीयोगि
नीश्रीपापूआवति॥ ॥ ॐ तिर्यग्वावेसुवीपूजा॥ ॥

तपयथकर्मनिस्तार॥ ॥ ततावतिदानी॥ त्रं॥ जौं पूष्कनदीपदलु
नादवीगुतिधनकृपासवतिगृह्णस्वाहा॥ त्रं॥ (प्रो) पुनस्मिदीप
दम्कीदवीमहाध्वं कृपासवतिगृह्णस्वाहा॥ त्रं॥ खौं सिंहनदी
पङ्कनादवीमहायोगी कृपासवतिगृह्णस्वाहा॥ त्रं॥ कां कां कां
कृपासवतिगृह्णस्वाहा॥ त्रं॥ ॐ हवस्तानाधिपतययथानाम्
अणुमधुसूतमध्वजवतनश्चतुर्भुजायै गिनजायकाशखट्क
खड्गभूतपाशयमहाकपालमाताएनक्षयविद्युत्काटिसमप्र
णयत्रं हि रणवन्तरेनवन्तूपनय (अप्रपन्ना नैवतिगृह्णस्वाहा॥

ममविद्याच्चादयाच्चादयउँ कौं कौं कौं कौं रुद्रस्वाहा॥ व्रंजो कौं
कृतपूजवद्रुकनाथवर्तिगृह्ण २ स्वाहा॥ व्रंजो गंगगंग ४ (पुं ४ श्री
कृतग (पुं) नववर्तिगृह्ण २ स्वाहा॥ व्रंजो यकविद्यागिनीनीपी ० जा
क्षजा सहजा यागजा मकुजा गरुजा कृतजा सन्दाहजा यकवि
द्यागिनीनीखचनी हचनी (गमचनी) कादनी हचनी शुद्धनी व
गु ४ पञ्चषष्टपावनवादनी ५५ विजगदासिनीनीय (अपप
नात्रैवर्तिगृह्ण २ ममसिद्धिं कुरु कुरु ३ रुद्रस्वाहा॥ ॥ गंगाह
उकादिवर्ति॥ व्रंजो अं १३ अवर्गपूर्वपी ० धिकानहहुक

महाहेनवायमहाभ्रभ्रनाधिपतयस्वशक्तिसहितायस्वपनि
वानायस्वमागन्धपुष्पधूपदीपज्ज्वलितपल्लवपूजागृह्णम
मण्डपुत्राणयस्वसर्वार्थसिद्धिदस्वमङ्गलरूढवर्तिगृह्णसाहा
तयेवसर्वार्था॥ॐॐकंॐकवर्णश्रावयपीॐधिकात्रविपुना
नकमहाहेनवायमहाभ्रभ्रनाधिपतयस्वशक्तिसहितायैवा
दिपूर्ववत्॥ॐॐवेंॐववर्णयाम्यपीॐधिकात्रजुग्विवतास
महाहेनवाययादि॥ॐॐटंॐटवर्णनेमृयपीॐधिकात्रजु
ग्विजिह्वामहाहेनवाययादि॥ॐॐतंॐतवर्णनैवानूयपीॐधि

कात्रकासारखमहाहेनवाययादि॥ जेऊपेंऊपवर्गवायवपी
भधिकानेकापासीणमहाहेनवाययादि॥ जेऊयें४यवर्गउ
रुनपीभधिकानेरीमाखमहाहेनवाययादि॥ ४जेऊणं४ण
वर्ग०००पीभनपीभधिकानेरीमरूपमहाहेनवाययादि॥ जेऊ
संदंअधपीभधिकानेउकपादमहाहेनवाययादि॥ जेऊउ
उउउउपीभधिकानेशुकशुभुमहाहेनवाययादि॥ जेऊह
ह॥ मध्वपीभधिकानेमघहासूनमहाहेनवाययादि॥ ४
००मिहशुकादिवसि॥ ॥ तत४प्रयागमदिवसि॥ ॥ ३॥

ॐ उं अं आं १७ प्रयाग ऋण धिपतय अस्मिता न्न हेनवाय वृद्धा
नीग किस हिगाय उं उं म्ब न वृद्धा नूवा सिन था गिनी ग न सहि
गाय स ग न प त्रिवा नाये ॐ मां ग न्ध पूष्य धूप दीप अस्ति व सि
पत्तं पूजा व सिंगृद्ध २ अस्मदा दी नी सर्व भो किं कृत् २ इन्द्र
स्वाहा ॥ तथेव स धिमी ॥ ॐ उं कं उं व नू न ऋण धिपतय नू नू हे
नवाय माहृष्य त्रीं ॥ किस हिगाय ता स वृद्धा नूवा सिन था गि
नी ग न्ध या दि ॥ ॐ उं चं उं को स ऋण धिपतय च नू हेनवाय
को मा त्रीं ॥ किस हिगाय वट वृद्धा नूवा सिन था गि नी या दि ॥

त्रैलोक्येऽप्यहं सः क्षणधियपतयका धरे न वायवे वृषवी ग किं सहि
नायक दम्ब वृक्षान्वासिने या गिनी ग्यादि॥ त्रैलोक्येऽप्यहं सः क्षणधियपतयका
क्षणधियपतय उन्मत्तः न वायवा नाहो ग किं सहि नाय निम्ब वृ
क्षान्वासिने या गिनी ग्यादि॥ त्रैलोक्येऽप्यहं सः क्षणधियपतय
कपाले न वायव्ये नृणां ग किं सहि नायक नृणां वृक्षान्वासि
ने या गिनी ग्यादि॥ त्रैलोक्येऽप्यहं सः क्षणधियपतय हा विष्णु
न वायवा मुमुक्षु ग किं सहि नाय पिप्पल वृक्षान्वासिने या
गिनी ग्यादि॥ त्रैलोक्येऽप्यहं सः क्षणधियपतय संहार नृणां

वायमहालक्ष्मीं किमहिताय प्रददुःकान् वासि नया गिनीया
दि॥ ॐ निप्रयागमदिवसि॥ ॥ अथ सिताम्ना दिवसि॥ जे० अ
असिताम्ने नवाय वसि गृह्ण २ स्वाहा॥ चवी॥ जे० अ नृनरु वृ
नवाय॥ जे० अ वा च नृनरु नवाय॥ जे० अ वा काध ह्ये वृ वाय॥
जे० अ उ उ नृ वृ रु नृ नवाय॥ जे० अ वा क पा ह्ये वृ नवाय॥
जे० अ वृ स्मा ह्ये वृ वृ नृ नवाय॥ जे० अ स्मा सहा नृ न
वाय॥ ॐ वृ ॥ जे० अ स्मा सहा नृ नवाय॥ जे० अ वृ वाय वसि
गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ वृ वृ ॥ अथ सिताम्ना दि॥ ॥ जे० अ

शु शु॥

धानज्जमाधवनदविमलसं वक्रादीविञ्चवर्तिगृह्ण २ स्वाहा॥
उर्व॥ कमाहव्यनी॥ वकीमानी॥ टवेसूवी॥ तवानाही॥ पंठुन्नाभी
॥ यंचामुष्मा॥ ममहातस्त्री॥ षूतिमान्का॥ ॥ जंजं म्मन्नुड
वधुयेवर्तिगृह्ण २ स्वाहा॥ उर्व॥ जंजं षू षू प्रवधुये॥ जंजं रं
वधुये॥ जंजं म्मन्नुड वधुनायिकाये॥ जंजं षू वधुये॥ जंजं
पंजं वधुये॥ जंजं उं उं वधुये॥ जंजं म्मन्नुड वधुये॥ जंजं
काये॥ षू य षू वधुये॥ ॥ जंजं म्मन्नुड जयायेवर्तिगृह्ण २ स्वाहा॥
जंजं म्मन्नुड विजयायेवर्तिगृह्ण २ स्वाहा॥ जंजं म्मन्नुड अजिताये

॥ जेउं सौं अपना जितायो ॥ जेउं सौं जमनो ॥ जेउं सौं सुमनो ॥
जेउं सौं माहि लो ॥ जेउं सौं कर्षलो ॥ ॐ ॥ यमुदवी
॥ ॥ ॥ ॥ जेउं सर्वथा ॥ ॥ ॥ ॥ पासंथावलिगृ ॥ ॥ ॥
हा ॥ जेउं सर्वथावदकथा ॥ ॥ ॥ जेउं सर्वथागणपतिथा ॥ जेउं
महाकासाया ॥ जेउं सौं सिद्धिवा मयुयो ॥ जेउं सौं महाकनवीन
भभनाया ॥ जेउं सौं सौं दवथानमावलि ॥ जेउं सौं सर्वथाह
नथा ॥ जेउं सौं सर्वथाप्रनथा ॥ जेउं सौं सर्वथापिभचथा ॥ जेउं सौं नाद
सथा ॥ जेउं सौं नागथा ॥ जेउं सौं किन्नरथा ॥ जेउं सौं यकथा ॥ जेउं सौं य

दधीत्या॥ जैँ अ सर्वत्या ४ पर्वतवृद्धा॥ जैँ अ सर्वत्या ग्रहनक्षत्र
 त्या॥ जैँ अ सर्वत्या जकणकिनीत्या॥ जैँ अ सर्वत्या जकाणचात्रि
 नीत्या वायुपीषत्या॥ जैँ अ हर्षुवे ४ स्वः स्वाहा॥ जैँ अ ह्म ह्म
 अष्टाविंशति क्रमाच्च नाय साङ्गयसगणपतिवाना
 य ७७ मापुषाधूपदीपनैवेद्यादीनि अतिवतिरुल्लु
 पूजायतिंगृह्ण २ गुन २ मूर २ त २ ख २ वाहि २ महाग
 मनाधिपतय दमस्ववनधाममसूवर्गधनधन्यासाहसर्वा
 र्थसिद्धिन्ददस्वम ३ रुद्रवतिंगृह्ण २ स्वाहा॥ ॥ ततः सम

यवति। त्रिंश सर्वपी। ७५ पपी७५ निहाना पद्मान मवच॥ कृष्णपद
गुसन्दाहाः सर्वदिग्गगर्गसिद्धिगाः॥ यागिनी यागवीनन्दाः सर्वतप
समागताः॥ ७६ दीपधर्महाचकुशीना ७७ वनदाममा॥ यत्कृष्णमा
सन्नदवीगुत्तूपादाद्यभनताः॥ सर्वसिद्धिप्रसादा मदवीनघोरवेत्स
दा॥ वीना ७८ यागिनीना ७९ यद्विषकिमहोत्तम॥ तन्गणकर्वी
दया समयाचानमलक॥ ८० तिसृतिमनः ८१ पूष्टिमीसमदासि
जीवित॥ निहकनयकुदृक्षना यागिनी गगर्गसकृताः॥ कृदृकादि
कृषप्रादिदृन्निमिर्दृहविर्त॥ निहकनयकुदृक्षना यागिनी

गनसंकृताः॥ अक्षरादिष्वपि भस्त्रयः॥ सानाः॥ प्रकीर्तिताः॥ अथ
धीधरेसन्धाहादम्भस्त्रविदम्भस्त्रवः॥ महीपातास्त्रवः॥ अथ सर्वस्त्र
नाकत्रस्त्रवः॥ योगिनीयागयुक्तास्त्रासम्भतिस्त्रुक्तिसाधकोः॥ वीर
कर्मस्त्रुक्तिस्त्रुक्तिद्वेताः॥ सिद्धाष्टपूणकाचार्याः॥
साधकोः॥ द्वितीयायिनः॥ नगत्रवाथवाग्रामभस्त्रुक्तिवासात्रि
द्वेताः॥ वापीकूपेकवृद्धवाग्भस्त्रनमागुमगुसा॥ नानानूपधना
न्यपिवट्टाविविधनिचः॥ तसर्वपिचसन्नुस्त्रवर्तिगृद्धुक्त
स्त्रुक्तिः॥ अत्रम्भगताप्यहन्तर्वास्त्रुक्तिमन्तर्हस्त्रप्रदः॥ प्रात्रवृ

यन्मया कर्मयत्क निष्ठा मिगत्कृती॥ वसिष्ठप्रदानेन सकुणा
ममचिन्तका॥ सर्वकर्मणि सिद्धिनुसर्वदाष्टप्रभम्या॥ निव
णकिप्रसादनधीकृकानाकनेमाम्यह॥ ॐॐ समस्तमनुषी
(०) ति॥ ॐॐ समयवसि॥ ॥ ॐॐ अजयध्यापकमुधु॥ ॐॐ
गवार्थनेमूर्तिका॥ उल्काग (ॐॐ) वदुष्मागुमृपसूदनमेवच॥
मृमृक० फकोयेध० पाद० कदसुक॥ निनावतधु० अशाम्बु० उष
धी० (ॐॐ) नवाहक॥ अ० कम्बाह० कम्बेसधु० खस० (ॐॐ) मृखसुथ
॥ यक्षनाह० अ० (ॐॐ) ववधु० अन्यकमेवच॥ ॐॐ गणपाजगताक्षा

मकमना ३ पट ३ न ४ ॥ ट क पा नि ४ स्था गु व (ध्र) जामना ट ट कर्तु
क ४ ॥ न ती ग म क ग ति म्म का लु वि ना इ द न स थ ॥ धन दाना ग क
गु ध्र प्र च गु ४ रु ट का न क ४ ॥ वी न सिं हा ल कू टा का म घ र स र
यु ग म क क ४ ॥ ना ने व (ध्र) व स म्म धा द्वा वृ व ल ४ गु क गु गु क ४ ॥ ष ज
ता स्य ४ स र्ना क ध्र द्र द्र क ४ द प ग स थ ॥ प क्ष ग लु गु पाल (ध्र) न
प क्ष ग न्न मा सु त ॥ प क्ष ग च म हा द र्ग नि धि प द्र वृ स र्ना ४ च
गु द्वा द्र ग या द क्ष र न वा र न ध्र द्वि ती ॥ प थ क ग सु त्पा च स व क ध्वा
गु वि न्द्र ध्वा ॥ अ ज ना दि म हा द र्ग द्वा का ना न न्न मा म्य ही ॥ जं जं कां की

द्वंद्वं अजनादि क्षयपालयावर्तिगृह्णस्वाहा॥ ४४ यजनादिवर्ति
४॥ ॥ त्रैलोक्यं च भूषणं महानाभं इन्द्रमुखी सुमुखी वत्सा॥ प्रवती प्रम
थधारा सोम्याही मा महवत्सा॥ ऊयाचे विऊयाचे वज्रकितावाप
नाजिता॥ महाकंद विद्रुपाक्षी शुक्लाचा काशमातृको॥ जातहा
नीचसंहानी देवसुखी शुक्लप्रवती॥ पिप्पली पृथ्वीहानीच अग्निनी
भस्यहानिनी॥ रुद्रकासी सुरदावरुद्रही मा सुरदिका॥ द्वा
विंश नमस्तु मातृगोकुलकापालध्वनिनी॥ द्वाविंश (१८) महारा
त्री शुक्लमृगुणवासना॥ त्रैलोक्यं अथवा त्रैलोक्यं ध्यायन्ती मित्रोदिता

त्रिंशद्भागिनीयावर्तिगृह्णस्वहा॥ ॐ तिष्ठति त्रिंशद्भागिनीवर्ति
४॥ ॥ ॐ ॐ जया च विजया चैव जयनी चापराजिता॥ नन्दारुद्रा
तथमहीमाकला चैवास्तूका तथाम्॥ ८॥ दिव्ययात्री महायात्री सि
द्धियात्री गणेश्वरी॥ सा किनी कालरात्री चतुर्दशकली त्रिंशदक
ली॥ ८॥ गम्भीराहीष्णी कूलापवनाक्षुब्धनामिका॥ हीष्णी च
महानन्दारुद्रा सा मुखी तथैव च॥ ८॥ त्रिंशद्वीहस्तिनी चैव य
क्ष्णी धूर्जटी तथाम्॥ विषरुक्षी सर्वसिद्धिस्तुष्टिर्लोकेश्वरी तथैव च
॥ ८॥ कृष्णपत्री राक्षसी दीर्घा धूम्राक्षी कलहप्रिया॥ मातङ्गी

का कह श्रीचमथपिपुत्रचानकी॥८॥ गदसीधात्रनादाचत्र
का कीविष्वतूपिणी॥ ऊयकनीनोदरुत्सीभुष्माभीनत्रहाऊनी
॥८॥ वीनरडा महाकासीकक्षसीविकृतिगानना॥ काठनाही
मरडाचवायुवगमहयानना॥८॥ वाझीचवेष्टवीनोडीचर्चि
काष्ठीष्यत्रीनेथ॥ वीनाहीनानुसिंहीचगिवाइतीचगु४षधि
का॥ ॐ ददवीमहायात्रीवर्तिगृह्णुमसदा॥ त्रैलोक्यीचगु
४षधियोगिनीस्यावर्तिगृह्णु सर्वभक्तिं कुरु२ ममसिद्धिं
कुरु कुरु कुरु स्वाहा॥ ॐ तिचगु४षधियोगिनीस्यावर्ति

॥ नैज अक्षवदक कर्णचित्राक्षसीक्षयनीक्षयी ॥ क्ष
याचैवगुपिम्भक्षीक्षयाक्षयनागिनी ॥ ॐ सासीसावतीचैवस्य
सीसागथेवच ॥ सकससकष्यत्रीक्षयासनसाविमसागथा ॥ क्षुणा
सेनीविष्मसाक्षीक्षुक्षत्रीवज्रवामुखी ॥ महानवामहाक्षुनाकाधि
नीचखनानना ॥ सर्वज्ञातनसाचैवतानामृष्यदिनीतथा ॥ नोडी
तथापुपसतासनसाग्रहीसर्वत्री ॥ नासज्जघाचनकाक्षीविद्युक्ति
क्षाकलकिनी ॥ मघनादाचचैवभुभकासककर्णद्विपानना ॥ प
भापभावतीचैवपिगिताक्षीचक्षुषा ॥ पावनीवमनीचैवत

पिनीवामनीतथा॥ विष्णुतस्यावृहत्कुक्षीद्विष्णुविष्णुपिनी॥ य
 मकिङ्काजयनीचद्रुङ्कायाजयमातृका॥ विङ्गलीनवतीचैवधुता
 स्याविजयासृता॥ वाङ्मीमाहृषीचैवकोमानीचैववृवीतथा॥ वा
 राहीचैवचैवडागीचामुमुहस्त्रीशुवचा॥ नूडचमुपुचमुचचमु
 ग्रचमुनायिका॥ चमुचमुवतीचैवचमुचमुपातिचमुका॥ नव
 मीचाप्रचमुचमध्वस्त्राग्निपुत्रादिता॥ उकाणीतिरिध्वङ्का
 वलिगृङ्गुसर्वदा॥ उँअसु॥ उकाणीतिरिधागिनीस्यावेतिगृङ्ग
 रस्याहा॥ ॐ ह्यकाणीति **विष्णु** **यागिनीवति॥** ॥ उँअउँ कौसी

वि१

श्रीः उ० उ० व० क० वादि ग० ग० न० त० स० त० स० नि० फ० स० वा० पा० ता० स०
 वा० न० स० वा० स० ति० स० प० व० न० या० य० य० क० ग० हि० ता० वा॥ द० ग० पी० (० भ० प०
 पी० भ० दि० प्र० स० क० स० ग० अ० धू० प० दी० पा० स० वा० श्र० प्री० ता० द० व० य० स० द० न०
 १ मु० त० व० ति० वि० धि० ना० पा० नु० वी० न० नु० व० न्या॥ वं० स० व० शि० या० गि० नी०
 य० १ स० व० र० या० द० ग० त० य० १ स० व० र० या० त० मि० स्ति० ग० य० स्ते० सा० व० वा० सि० नी०
 य० ०० मा० पू० ज० वि० ति० गृ० द्र० २ स्वा० ह० ॥ ०० या० प्रा० या० दि० स० म० स्र० व० ति० १
 ॥ त० ता० म० हा० वि० ति० न० द० या० ॥ स० म० या० दि० रु० लु० दी० न० ध० न० या० वि० च्छि० न०
 न० द० या० ॥ ॥ वं० ज० श्री० गु० त्र० पा० इ० का० पू० ज० या० मि० न० म० १ ॥ वं० ज० का० व०

(ॐ) कामरूपपुनविपुनगताजातपी (०) ऊयन्याविद्धा (ॐ) मध्वपी
(०) पिपुनपुनगतादविष्णुः ॥ ८ ॥ कात्रि ॥ आचार्ये सिद्धसंघपनिवृ
तप्रवृत्तेश्वरियागिन्यवृन्दयुक्तहृत्पकअषुत्तनसकसहया
दवदेवीन्नमामि ॥ १ ॥ यातुर्द्विद्यनृत्रिदक्षदणदिगिषुवनसफ
पातालमूलः ॥ ८ ॥ गुपी (ॐ) पेपी (०) विषमचतुष्टय (०) मत्तकला
म्भम्भने ॥ सिन्धुतीत्रेकवृक्षउदधिषुहृष्टधूस्रकालावगात्र
कोत्तुष्टपूर्वगिण्यागगनपुनवनअजिग्यानपुष्पानु ॥ २ ॥ जाता
स्थियागमूर्खकृतपतिनगत्रकामरूपस्वरूपउर्जेन्यामदृ

हासपदपठसहकसाठद(११)प्रद(१॥)श्री(१॥)सप्राविजातपण
पतिनिसयहमविन्धवसपु. श्रीमनावोयुद(१॥)मनूगपथमि
नौसाकिनीसाकिनीनी॥३॥काधीनवान्धद(१॥)द्विउमसप
(॥)वेद्वबागकुलूट. लीनासहकपूकउनुसिविनजकेसिद्धि
दण्डहात्र॥कोसागिर्यादविकाटहिमगिनिगिरवनकाष्टि
द(१॥)प्रयागे. सोनासुमध्वद(१॥)हृगुपुननगत्रकोशलकास
कवा॥४॥काकुलूटकोक(१॥)वामघधपुनवनकपूकपूककसि(१॥)
गिहाउवामम(॥)सुनवनगयनगद्वनारख्यहसपु. यानिऊमि

सुजाम्याविविधवृधनृतामागनस्मात्सुसर्वाः सिद्धास्तुष्टाः सुसिद्धा
विविधवृधनृतादिद्यसिद्धिन्ददन्तु ॥ ७ ॥ खपुम्बामन्त्रे सिद्धिपत्रपु
त्रविष्णुनेखगतिसाचनम्बा ॥ ८ ॥ सुसुम्भं त्रिपुम्भं वलीपत्तिगङ्गा
सुसुम्भं सर्वविद्या ॥ दीर्घायुर्धकवित्तत्रसन्निधिगुटिकापादकाका
मसिद्धिं सुखाचिन्ताददन्तु असिवसि सहितारहेनवानान्ययुक्ता ॥
॥ ९ ॥ इष्टुष्टुनात्रिमात्रीग्रहगणगणनाविद्युत्पातन (८) वानेज
वानजलोघविघटयगुरुर्यद्याधितचर्ममूत्र ॥ च्छं च्छं रुक्कान
यन्कीहहहहहसिन्नेष्टव्ययन्कीपिवन्की ॥ रुष्टयन्कीमन्त्रमाताकि

[illegible]

नामस्तुभ्यं नमः प्रणम्य नमः प्रणम्य नमः प्रणम्य नमः प्रणम्य नमः
कपासा ४ सकलतनुगता ४ पी ० आमस्य सारखा ॥ श्रीके ७० तत्रुयनी
प्रितुवनजननी मध्वपी १० गमाह्ला चक्रह्लादवदवी जिवपथम
मनी कातमा १० प्रणम्य ॥ १० ॥ नामा श्रीके किकाकुटिततनुग
तामनुपी १० अपपी ० देदि ७५ सिद्धिमागीतदनूनवियेतामनु
सापूर्वपी ० ॥ कामारखाकोकभरखावद्रुस विविधसंस्थि
ताज्ञानसिद्धपातासहमिस्व १० विजयगुवसूक्ष्मादस श्रीके
सारखा ॥ ११ ॥ उलिखाउड्डुभस्तुतटितटितटयत्तुदयनीसम

[illegible]

[illegible]

हौं हौं हौं का न हा स ह ह ह ह ह सिता हा ट के गु गु च डी ॥ १५ ॥ द्वा वि
न धा ग मा (ज्ज पुन वि पु न ग ता । द व य का टी न मूर्च्छा आ क्ला च के
प्र वि स्था द ७३ न न म न म न र्ग खि नी र्ग र व य का ४ ॥ पी ० स्त्रा ४ द श स
स्त्रा ऊ य तु र ग व ती पी ० मा सी नि क डी । ह क्का हे नि य म वा प्र न
म थ गि त सा द व ता मूर्त्ति ह ता ॥ १७ ॥ स्त्रो ४ ह्रूं धां क्रो जं स्वा हा धी
प्रा पू ज ॥ आ पू र्द्धि प गु न्दे हि पू ज न्द हि ग धे व च ॥ ध न वि श्रा य
ज भ दि हि स र्व भ किं क र २ व ति गृ क्क २ स्वा हा ॥ द म स्व व न द म म
स्वा हा ॥ ॥ जं ज स म रु म रु पी ० सि हा स न पी ० पी ० भ प पी ०

[illegible]

नूनवर्जदायकं॥ न कचन्दनी॥ त्रै० तव प्रियतनन्द विन कचन्दन
केर्दमी॥ प्रतीक सर्वदवजिवष्ठा कृष्टिरुता फय॥ माहनी॥ त्रै०
काष्मीनक्षत्र विज्ञाय माहर्न कज्जलं गिवा॥ गृहाण वीनया गस्य रु
सर्प प्राफय मम॥ अदती॥ त्रै० अदती सर्ववीन गिवा वीन रावा व
सुप्रदी॥ सर्वमस्तदा जीव गृहाण पत्रमध्वनि॥ यक्षा प्रवाती॥ त्रै०
उपवाती मिदं स्तुतं मन्त्रं क्षयसाधुनी॥ गृहाण वीनया गस्य रु
सर्प प्राफय मम॥ माता पुष्पी॥ त्रै० मातृना नाविधी विर्गवर्ग
न ह्यनिर्हर्त॥ उता पूनात्मके दवि गृहा (ले मा रुता फय॥ ॥ त

गाधूपदीपनेवशादीपूर्ववत्संस्तुत्यग्रश्रवादननदद्यात्॥ॐ
सायाँसहजंशुवधूपार्यनगताङ्गुनी॥गृहाजवीनवीनगियथ
करुतसिद्धय॥दीप॥ॐसुप्रकाशमहादीपःसर्वगुतिमिना
पहं॥सवाञ्जात्यननंअतिदीपायप्रतिगृह्यता॥ॐअन्नीमहा
नसंदिश्यनसंषष्टिःसमन्वित॥मयानिवादिनगुरुगृहाजप
नमेव्यता॥ॐरुसंमूलादिजाम्बानमिकुक्तादिमंष्वं॥आ
प्रदातिम्वपक्वादिहस्तानिप्रतिगृह्यता॥॥तर्पणी॥तामूल
दि॥ॐतमासदसकपूत्रपूगलग्नसमन्वित॥गृहाजद्वेद

वैजिनामूरं गुरुदेविता ॥ प्रतिष्ठा ॥ जैं अयाव हाहा स्कन स्थिति
॥ ॥ तता उप ॥ को १० दयस्या ॥ जैं अथी को १० वदूक स्या ॥ जैं अथी
१० गगनपतश ॥ ॥ स्त्री स्त्री ॥ देवदद्या ॥ जैं अथी को १० कलन स्या ॥ जैं अथी
स्त्री कुरु स्या ॥ जैं अथी को १० कोमाया ॥ जैं अथी को १० स्त्री स्त्री
॥ निर्घाज स्या ॥ उपसमर्प ॥ जैं अथी को १० स्त्री स्त्री
गुक्त (गम फल गृह भस्म ॥ जैं अथी को १० स्त्री स्त्री
द ॥ वित्त्वत्पसोदा लुं अथी नि ॥ ॥ मयुत्त ॥ स्त्री ॥ जैं अथी को १०
स्थानम ॥ जैं अथी को १० कार्येनम ॥ जैं अथी को १० मयुत्त कान

मिथ्यादि॥ वन्दे सदा सकलकोटिकभ्रान्तरुतमिथ्यादिकुमस्तुति
॥ कवेच द्वादशसूत्रपीठिकास्तुव॥ महामाया॥ श्रीसेवका॥ क्रमास्तु
ति॥ अष्टगन्धदि॥ ॥ अष्टमनमस्तुतान॥ ॥ तर्पणी॥ नृगया
ध्वजकमस्तुमिकावसतयानाजीष्यासीहितायाः काथाज्ञत
नामकूपनिसयायाः सीहिताध्वगुषु॥ उक्तासामिर्मनूकन
मस्तुनिसयानिः ॥ अष्टमवोताग्रयास्तुदद्यात्रिपुपकृतद्वे
पनास्तुयकुकोसाञ्जिता॥ नमस्तुचक्रवर्तिह्यनमस्तुज्ञानदा
यकी॥ नमस्तुहेनवीरूपनमस्तुहेवतानकी॥ अष्टमस्तुनृथा

गिन्यावद्वकानाक (थेवच॥ तेनवश्च ॐ मश्चक्रमकाकायन्न
माम्याहं॥ अविना (ॐ रवेद्वहाकजनामनभवच॥ महावत्सव
जदहनाजश्रीमककृण्वी॥ गजना (ॐ रवेद्वहद्विनायू४ श्रीका
नित्वत्सरी॥ महापूरित्वित्तिर्यसश्चैतनित्वद्वनी॥ नसाय
नायसर्वस्यक्रमपश्चपनामृती॥ उर्वनसमहादिद्यीपीयताहव
रंषज॥ नन्दकुक्लयागिन्यानन्दकुक्लहेनवा४॥ नन्दकु
क्लवावाय्ययवान्यवनमाहुता॥ दहिन४ सुखिन४ सकुसुखि
न४ सकुदहव४॥ प्रसादकुसदान्दनाश्चैतनश्चैवधनधी॥

ॐ नमः श्रीनाथायति॥ ॐ श्रीपापूज॥ ॥ दक्षिण॥ ॐ नमः
नाधिकमिदं कर्म यदि च्छिदं मच्छिदं कर्म॥ कुरु सर्वं पूर्णं दक्षिण
दक्षिणं प्रतिष्ठोक्तं॥ ॥ चामुष्मन्नी॥ पशुयाग॥ ॥ वसि
तप्यज॥ ॥ सगुणमाहनी विसर्जनी॥ आत्मसमयी॥ ॐ
श्रीतः प्रणमनंति॥ ॐ याश्च कति पूर्ववत्॥ ॥ देवाणीं ब्रह्म
॥ ॐ उक्तानेकं हवेत्यादि॥ ॥ कुरु महिषक॥ ॐ उक्ताना
मप्यपादो हस्तक्यादि॥ ॥ ॐ चन्द्रधुन्यनतिसकं उक्तं
नीनां दिसम्माहर्न॥ दानिद्र्यं दानिती घनाशनकर्न॥ धन्यस्कर्न

साम्प्रतं॥ पुष्टिं सर्वविनात्मकारुवतनाभागार्हिसनापहादवीथी
त्वमृतं ध्वनीविजयतां तस्य चित्रं पातुवध॥ अंतःसिन्दूरं गिलकक्षुष्टि
दहनं पापीघविध्वंसनं मायुष्यं चित्रवर्द्धनं यदि सुखं नाया
दिदं सांप्रतं॥ माह सर्वजनं जगद्विवर्धनं गमलश्रीसदा संयुक्तं मृ
त्युवञ्जनकात्रिणीविजयतं कामध्वनीपातुवध॥ माहनीजनसं
पदं जयकरीचाख्यं महासिद्धिदं॥ पापीघद्रितीघनाशनक
रीसंज्ञानसनातनं॥ तस्याऽसम्पदनिवृत्तमवमुदयं ज्ञानी स
दा सांप्रतं॥ देवीश्रीपिपूनेध्वनीविजयतं सनातनं माहनी॥ सि

कार्थदविपावकं सन् विनैकम् ॥ पूर्णजले ॥ १० ॥ खं मुक्क सपूष्य
भूकनकजा (गमना चना गीरु स) ॥ विषावेदविद ॥ प्रणतसमर्थ
(गम ॥ का ॥ ना ब्रीहया इर्वाग्र ॥ सिततनुता ॥ मुकसुता ॥ कर्बु
ममस्य ॥ ॥ पूर्णवा दतमृत्पुव ॥ ननत ॥ सर्वार्थिना गम पहिच
नाग्धं मुक्काने नयन कर (गुय ॥ सदा सम्यदी सर्वार्थि कलूषा
दिना नन करी ही सान सनान नन गुला ॥ विपुना विद्यातकमु
हं गस्य विनैपा पुव ॥ ॥ आत्मा जीवोद ॥ ॥ जं ॥ अन्वपूर्वगती पदी
एगवगि चैयन्य नूपात्मका ज्ञानका वदुता तथ हनि हे नीव द्वा

मनीचिगुय॥ हास्वहेनवपशूकंतनूगर्तग्रीयागिनीपशूकंचन्द्रा
कागिमनीचिषद्वमेमसंमापाणुनिर्यकजा॥ ॥ उँअकिजि२
विष्टकोक०भयेकुजुहायरुठधीपापू॥ ॥ यादिकनवका
नन्यास॥ ॥ अदगादकाह्यास्वीनप्रमाग्यासुगवत्यापि॥ कि
प्रा॥ यानिमूडयात्मलीन॥ उँअनभारगवतिहृत्कमलायेजा
धीहृदयायनम०धीपापू॥ ॥ सीहानमूडयाअसुगवतिवि
हृ०॥ हसीप्रकाह्यापिनाचम्य॥ सूर्यसादी॥ ॥ देवीनमस्त
न॥ उँअअडिहिडिवनन्दहिवायूनानाग्यसम्पद॥ पूर्णदहिय

